प्राची

संयुक्तांक
2019-20/2020-21

शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय

बैरन बाजार, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771-2427126

Website : www.cgcollege.org

महाविद्यालयीन अधिकारीगण

प्राचार्य एवं संरक्षक

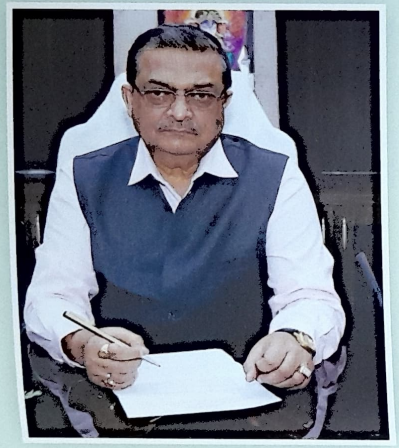

प्राची पत्रिका समिति

प्राची

संयुक्तांक 2019-20/2020-21

प्राचार्य एवं संरक्षक डॉ. अमिताभ बैनर्जी

संपादक मण्डल

डॉ. मंजुला उपाध्याय

डॉ. [illegible]

[illegible]

डॉ. संध्या नलगुडवार

डॉ. उर्मिला शुक्ला

डॉ. रजनी यदु

डॉ. भूपेन्द्र करवन्दे

डॉ. रचना मिश्रा

डॉ. नेहा टिकरिहा

शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय

बैरन बाजार, रायपुर (छ.ग.)

फोन : 0771-2427126

Website : www.cgcollege.org

वन्दे मातरम् । वन्दे मातरम् ।।
सुजलां सुफलां मलयज-शीतलाम् ।
शस्य-श्यामलां मातरम् ।। वन्दे मातरम् ।।
शुभ्र-ज्योत्सनां-पुलकित यामिनीम् ।
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम् ।।
सुहासिनीं सुमधुर भाषणीम् ।
सुखदां वरदां मातरम् ।। वन्दे मातरम् ।।

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र. / 333 / पीआरओ / रास / 19
रायपुर, दिनांक 28 नवम्बर 2019

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका '**प्राची**' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकाओं से महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में सृजनशीलता, रचनात्मक प्रतिभा एवं देश प्रेम की भावना के साथ उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होता है। मैं आशा करती हूँ कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं ज्ञानवर्धक जानकारी से सभी पाठक लाभान्वित होंगे।

'**प्राची**' पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनुसुईया उइके)

भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री

Bhupesh Baghel
CHIEF MINISTER

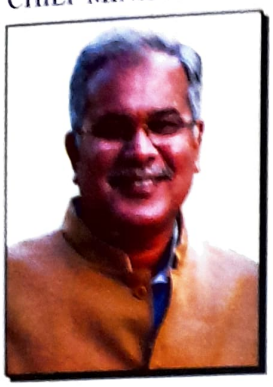

मंत्रालय, महानदी भवन
अटल नगर, रायपुर 492002, छत्तीसगढ़
फोन : +91 (771) 2221000, 2221001
ई-मेल : cmcg@nic.in

Mantralaya, Mahanadi Bhawan
Atal Nagar, Raipur, 492002, Chhattisgarh
Ph.: +91 (771) 2221000, 2221001
E-mail : cmcg@nic.in
Do. No. 505/HCM Date : 16/12/2019

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका **'प्राची'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने व अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(भूपेश बघेल)

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक - M1-12
महानदी भवन, नया रायपुर अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि. : D-1/2, शास. आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला-रायगढ़ कार्यालय : 7000477747

क्रमांक B / 2067

दिनांक : 22 / 11 / 2019

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका '**प्राची**' प्रकाशित की जा रही है। जिसमें छात्र–छात्राओं के साहित्यिक विचार को समाहित किया जावेगा।

आशा है महाविद्यालयीन पत्रिका '**प्राची**' महाविद्यालय की गतिविधियों एवं छात्र–छात्राओं के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सृजनात्मकता को विकसित करने में महती भूमिका अदा करेगी।

पत्रिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(उमेश पटेल)

टी.एस. सिंहदेव
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
पंचायत एवं ग्रामीण विकास,
लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,
चिकित्सा शिक्षा, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी,
वीस सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)

मंत्रालय : कक्ष : एम. 4-9,10,11,12
दूरभाष : 0771-2221318, फैक्स : 2510319

निवास : डी-8, सिविल लाईन्स, रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : 0771-2331012, फैक्स : 2331013

e-mail: tssinghdeominister@gmail.com

क्रमांक 8296 मंत्री 19

रायपुर, दिनांक 22/11/2013

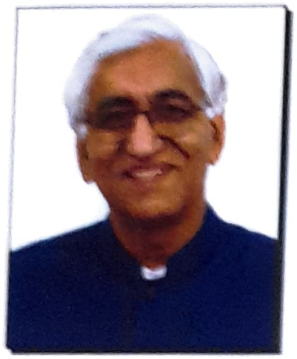

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि, आपके महाविद्यालय द्वारा पत्रिका 'प्राची' विद्यार्थियों की प्रतिभा को मुखर करने मे सहायक होगी, जिसका प्रकाशन करने जा रहे हैं।

इस प्रकाशन के लिए मैं आपके महाविद्यालय शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय रायपुर को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसकी कामना करता हूँ।

(टी.एस. सिंहदेव)

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति

Dr. Keshari Lal Verma
Vice Chancellor

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) भारत
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (Chhattisgarh) - 492010-INDIA
Office : +91-771-2262857
Fax : + 91-771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.org.in
Website : www.prsu.ac.in
Mobile : 08527324400

रायपुर, दिनांक 21 नवंबर, 2019

शुभकामना

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका '**प्राची**' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने व अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(केशरी लाल वर्मा)

कल्लू सतनाम सिंह पनाग
अध्यक्ष - जलकार्य विभाग
पार्षद - श्यामा प्रसाद मुखर्जी, वार्ड क्र.-61
नगर पालिका निगम, रायपुर (छ.ग.)

मोबाईल : 98266-00025

निवास : श्रीराम चौक, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

दिनांक : .....

क्रमांक

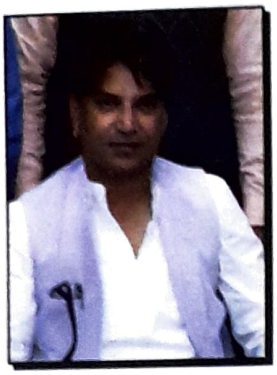

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय अपनी वार्षिक द्वारा पत्रिका '**प्राची**' का नियमित प्रकाशन कर रहा है।

छात्र छात्राओं में अभिव्यक्ति–कौशल विकसित करने के लिए ऐसी पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। महाविद्यालय की यह पत्रिका प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि यह नवसृजकों की रचनात्मक प्रतिभा को तराशने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ...

(सतनाम सिंह पनाग)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ क्रमांक
1	प्राचार्य की कलम से	डॉ. अमिताभ बैनर्जी	01-03
2	संपादकीय	डॉ. मंजुला उपाध्याय	04
3	कीटभक्षी पौधे	राधेश्याम साव	05
4	तिरि - पासा	युगल किशोर	06
5	माटी मा माथ नवादव	चंचल वर्मा	07
6	चलो आज शंखनाद करें	सनत कुमार बघेल	07
7	कॉफी उत्पादन एवं प्रसंस्करण	जयश्री पोटे	08
8	नागरिकता	भोलेराम सिन्हा	09-13
9	भारत में समान नागरिक संहिता की आवश्यकता	खिलेश्वर रक्सेल	14-15
10	छत्तीसगढ़ की लोक परम्परा एवं लोक जीवन	खेमन्ती देवांगन	16-18
11	मतदान में युवाओं की भागीदारी	मीनल नारद	19-20
12	वन संरक्षण	पंकल कुरील	20
13	उदारीकरण, कृषि संकट और प्रेमचंद	अभिषेक पांडे	21-23
14	महफूज मुझे कर लेना	ऋचा पाण्डेय	23
15	पबजी अउ टीक-टोक	खुमान साहू	24
16	जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी	भास्कर देबनाथ	24-25
17	छत्तीसगढ़हिन महतारी	नितेश नागवंशी	25
18	मेरा हिन्दुस्तान	तारकेश्वर वर्मा	26
19	सुनव रे संगवारी	अमन जांगड़े	27
20	दारू गांजा ला पीये	लीलाधर निषाद	27
21	किसान	दिव्या वर्मा	28
22	छत्तीसगढ़ी संस्कृति	किशन यदु	28
23	छत्तीसगढ़िया संगी	कुन्दन सिंह खुटे	29
24	मंजिल मिलेगी कल	गुरूवंत चन्द्रा	29

क्रमांक	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ क्रमांक
25	अंत में वह फिर हार गई	प्रतीक कुमार चतुर्वेदी	30
26	मेरी गणतंत्र दिवस कैम्प यात्रा	नागेश्वर साहू	31-32
27	आओ खुलकर जीते हैं	दीपक कुमार साहू	33
28	श्रीनिवास रामानुजन का गणित के क्षेत्र में योगदान	निखिलेश मुकुटवार	33-34
29	गांधी जी और आदर्श राज्य	दीपक कुमार साहू	34-35
30	संघर्ष	परमेश्वर धिवेन्निया	36
31	जीवन में खेल का महत्व	पूनम दीप	37
32	युक्तिशक्ति	मयंक वर्धन	38-39
33	कुछ कर दिखाना है	हेमचंद साहू	39
34	भारतीय संविधान के जनक डॉ. भीमराव अम्बेडकर	तनुश्री वर्मा	40-41
35	BAD DREAM	Harish Kumar Sahu	42
36	Is that me different !	Ruplai Sahu	42
37	The Young Adults	Tanisha Diwan	43-44
38	To vote is exist : #Teeka Lagao	Ashish Jadhav	45-46
39	Loneliness	Anupriya Sujoria	47-48
40	आओ, भारत में फुटबाल को आगे बढ़ाएँ	भागवत प्रसाद नागराज	48
41	अभी मैंने हार नहीं मानी है	संदीप राजपूत	49
42	काश मैं बंजारा होता	दिलीप यादव	49
43	आत्मा का प्रकाशन हैं पुस्तकें	सौम्या यदु	50
44	साहस	प्रिया गुरवानी	51
45	सपने	डाकेश्वर साहू	51
46	समर : द सोल्जर	श्रीया डहरिया	52-53
47	जनभागीदारी समिति		54
48	छात्रसंघ पदाधिकारी - 2019-20		55-56
49	प्रावीण्य सूची - 2019-20		57
50	Staff List (Class - I & II)		58-60
51	Staff List (Class - III & IV)		61
52	छायाचित्र		62-70

प्राचार्य की कलम से ...

शासकीय जे. योगानन्दम् छत्तीसगढ़ महाविद्यालय अंचल में उच्च शिक्षा का पर्याय बन चुका है। सन् 1938 में स्थापित इस महाविद्यालय ने उच्च आदर्शों, मूल्यों, संस्कारों एवं दूरदृष्टि के साथ अपनी यात्रा आरंभ की थी। हर्ष की बात यह है कि नई सदी में जीवन, नवीन परिवेश और परिवर्तनों के साथ कदमताल करते हुए इसने अपने मूलस्वरूप को भी अक्षुण्ण रखा है। इसकी ही सुखद परिणति है कि संस्कारवान शैक्षणिक परिसर में अध्ययन प्राप्ति के पश्चात् निकले विद्यार्थी आजीवन इस भूमि के मुकाम से स्वयं को महकता हुआ पाते हैं। इसे सस्नेह अपने स्मृति पटल पर संजोए रखते हैं।

महाविद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य के साथ विधि संकाय अस्तित्व में है। यहां समस्त संकायों में स्नातक एवं 18 विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अलावा पीजीडीसीए एवं डीबीएम डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। महाविद्यालय शोध गतिविधियों में भी सक्रिय है। यहां अंग्रेजी, गणित, वाणिज्य, समाजशास्त्र में शोधकेन्द्र स्थापित है।

महाविद्यालयीन स्वशासी विभाग परीक्षाओं के आयोजन एवं परिणामों के प्रति पूर्णतः समयबद्ध है। यहां के शैक्षणिक सत्र अपने अकादमिक कैलेण्डर का अनुपालन करते हैं। अबाधित एवं नियमित अध्ययन– अध्यापन का होना संस्था का वैशिष्ट्य है। जिसका सद्परिणाम यहां की परीक्षाओं में द्रष्टव्य है। गत वर्ष बी. ए. का 81.05%, बी. एस–सी. का 81.90%, बी. कॉम. का 53.38% एवं स्नातकोत्तर परीक्षाफलों का औसत परिणाम 96% रहा है। इसका श्रेय निःसंदेह हमारे विद्वान प्राध्यापकों को जाता है, जिनके कुशल अध्यापन, परिश्रम व दिग्दर्शन से विद्यार्थीगण लाभान्वित होते हैं। गतवर्ष महाविद्यालय से 08 छात्र NET/SET में उत्तीर्ण हुए तथा महाविद्यालय के प्राध्यापकों के निर्देशन में 16 शोध छात्रों ने पी. एच–डी. की उपाधि प्राप्त की है।

महाविद्यालय ने अपने विद्यार्थियों को अध्ययन–अध्यापन की उत्कृष्ट व्यवस्था उपलब्ध कराने का हमेशा प्रयत्न किया है। ग्रंथालय इसमें अहम भूमिका निभाता है। वर्तमान में ग्रंथालय में लगभग 76000+ पुस्तकें उपलब्ध हैं। ग्रंथालय के वाचनालय में छात्रों हेतु 11 समाचार पत्र एवं 10 पत्रिकाएं नियमित रूप से क्रय की जाती हैं, जिसमें रोजगार संबंधी समाचार पत्र तथा प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु पत्रिकाएं भी सम्मिलित हैं। महाविद्यालय ग्रंथालय को

इनफ्लिब नेट की N-List (ई–जर्नल्स कंसोरटियम) की सदस्यता प्राप्त है। जिसकी सहायता से 6000+ ई जर्नल्स एवं 3135000+ ई–बुक्स को Online Access किया जा सकता है।

महाविद्यालय में खेल विभाग अपनी सक्रियता एवं उत्कृष्ट खेल गतिविधियों के लिए जाना जाता है। वर्तमान सत्र में विभाग ने रायपुर सेक्टर वॉलीबॉल एवं हैण्डबॉल (महिला) एवं अंतरमहाविद्यालयीन सॉफ्ट टेनिस, सॉफ्टबॉल (महिला/पुरूष) का आयोजन सफलतापूर्वक किया। फुटबॉल (महिला/पुरूष), बैडमिंटन (महिला), बॉस्केटबॉल (महिला/पुरूष), खो–खो (पुरूष), कबड्डी (महिला/पुरूष), वॉलीबॉल (महिला/पुरूष), क्रिकेट (महिला/पुरूष), टेबल टेनिस (महिला), हैण्डबॉल (महिला), कासकंट्री (पुरूष), स्क्वेश (महिला/पुरूष), हॉकी (पुरूष), आर्चरी (पुरूष), टेनिस (महिला), सॉफ्ट टेनिस (महिला), सॉफ्टबॉल (महिला/पुरूष), रोडसायक्लिंग (पुरूष) में 27 छात्र एवं 18 छात्राओं ने विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तर पर भागीदारी की। उल्लेखनीय है कि महाविद्यालय के छात्र उदय ने सीनियर नेशनल खो–खो में शानदार प्रदर्शन करके इंडिया कैंप में जगह बनाई। महाविद्यालय की टेबल टेनिस, सॉफ्ट टेनिस (महिला) तथा खो–खो (पुरूष) टीम अंतर महाविद्यालयीन प्रतियोगिता विजेता रही एवं हैंडबॉल (महिला) व कबड्डी (पुरूष) टीम उपविजेता रही।

महाविद्यालय में IQAC गठित है। यह प्रकोष्ठ महाविद्यालय के समस्त विभागों की गतिविधियों का दस्तावेजीकरण करता है। सत्रारंभ में प्रकोष्ठ के माध्यम से प्रत्येक संकाय के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए इंडक्शन प्रोग्राम आयोजित किए गए। प्रकोष्ठ ने विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं महात्मा गांधी पर केन्द्रित विविध ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया, जिससे उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रोत्साहित किया जा सके। ''गांधीजी सोलर एम्बेसडर यात्रा'' में 41 विद्यार्थियों एवं यूनीसेफ से संबंधित एक NGO द्वारा आयोजित जनसंख्या नियंत्रण जागरूकता अभियान में 800 विद्यार्थियों का पंजीकरण उल्लेखनीय है। प्रकोष्ठ द्वारा महाविद्यालय के अशैक्षणिक कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए सात दिवसीय निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अक्टूबर 2019 में महाविद्यालयीन रूसा इकाई को स्वशासी महाविद्यालय की श्रेणी से गुणवत्ता–विकास एवं उन्नयन हेतु 5 करोड़ रूपये अनुदान हेतु चयनित किया गया। रूसा के अंतर्गत क्षेत्रीय अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग, डॉ. पी. सी. चौबे द्वारा ''गुणवत्ता शिक्षा–प्राध्यापक एवं छात्रों की भूमिका'' विषय पर महत्वपूर्ण व्याख्यान एवं ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' योजना के तहत मित्र राज्य गुजरात की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां ज्ञानवर्धक रहीं।

संस्था में छात्राओं के लिए 8 सी. जी. बटालियन तथा छात्रों के लिए 01 सी. जी. नेवल बटालियन संचालित है। महाविद्यालय के 12 कैडेटों ने कोडार बांध में नौसेना के विशेष नौकायन शिविर में भाग लिया। चार कैडेटों ने अखिल भारतीय नौसेना कैम्प के प्रथम एवं द्वितीय चरण के सलेक्शन कैम्प, ग्वालियर में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। कैडेट विजय बघेल ने RDC इंटरग्रुप काम्पीटिशन भोपाल में भाग लिया। सुगम तिवारी का वायुसेना में ''एयरमैन'' हेतु चयन इस वर्ष की उल्लेखनीय उपलब्धि है। 08 सी.जी. बटालियन ने 15 अगस्त 2019 को पुलिस ग्राउण्ड, रायपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' (EBSB) के अंतर्गत जम्मू–कश्मीर (नगरोटा) में आयोजित 12 दिवसीय शिविर में दो कैडेटों का चयन हुआ।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई अपनी सक्रियता के लिए जानी जाती है। इस वर्ष वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वच्छता अभियान को विशेष महत्व दिया गया। इस वर्ष इकाई के अंतर्गत संचालित रेड रिबन क्लब को राष्ट्रीय एड्स नियंत्रक कार्यक्रम (NACO) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ रेड रिबन क्लब का पुरस्कार प्रदान किया गया। जल शक्ति अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण के प्रति छात्रों और गोदग्राम कान्दुल के ग्रामीणों को जागरूक किया गया।

महाविद्यालय में स्वच्छता एवं पेयजल समिति अस्तित्व में है, जिसके द्वारा परिसर में स्वच्छता हेतु निरंतर कार्यवाही की जा रही है। स्वच्छता हेतु श्रमदान, स्वच्छता रैली, पानी टंकी एवं वाटर कूलर की सफाई जैसे कार्य प्रमुखता से किए गए।

सांस्कृतिक साहित्यिक गतिविधियों में भी महाविद्यालय के छात्र सदैव अग्रणी रहे हैं। उनकी सक्रियता न केवल महाविद्यालय स्तर पर वरन् अंतर महाविद्यालयीन एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भी श्रेष्ठतम रही है। महात्मा गांधीजी की 150वी जयंती के उपलक्ष्य में राजभवन, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र तारकेश्वर वर्मा, एम. ए. (हिन्दी), प्रथम सत्र ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर महामहिम राज्यपाल महोदया के हाथों पुरस्कार ग्रहण किया।

महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग संपूर्ण शैक्षणिक सत्र में विविध गतिविधियों का संचालन करते हैं, जिससे विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास हेतु बहुआयामी अवसर उपलब्ध होते हैं। लोक प्रशासन विभाग एवं IQAC MSME के तत्वावधान में भारत सरकार, सूक्ष्म मध्यम एवं लघु उद्यम मंत्रालय द्वारा दो दिवसीय गहन औद्योगिक अभिप्रेरणा शिविर का आयोजन किया गया तथा प्लास्टिक प्रतिबंध हेतु जागरूकता अभियान के तहत संगोष्ठी, मानव श्रृंखला एवं नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया गया। अंग्रेजी विभाग द्वारा दिनांक 07 जनवरी 2020 को महात्मा गांधी पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, जिसमें 329 प्राध्यापकों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों ने सहभागिता की। विधि विभाग द्वारा मानव अधिकार दिवस, विधि उत्सव, विधिक प्रश्नमंच, संविधान दिवस का आयोजन किया गया। युवा सशक्तिकरण हेतु लोकप्रशासन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में युवा संसद का आयोजन किया गया, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग ने केन्द्रीय कारागार, रायपुर का शैक्षणिक भ्रमण किया एवं रक्तदान शिविर का आयोजन कर युवाओं को रक्तदान के लिए प्रोत्साहित किया। वनस्पति विभाग ने विषय विशेषज्ञों के सहयोग से ग्रीन ऑडिट कर पर्यावरणीय मूल्यांकन किया।

महाविद्यालय के प्राध्यापकों की गुणवत्ता पर भी प्रकाश डालना समयोचित होगा। महाविद्यालय के प्राध्यापकों को राज्य स्तरीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों–सम्मेलनों में निरंतर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया जाता है। इण्डो–भूटान एजुकेशन कान्क्लेव के अंतर राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. तपेशचंद्र गुप्ता, प्राध्यापक (वाणिज्य) को Best Teaching Practice का अवार्ड प्रदान किया गया। इस सत्र में इनके कुल 19 शोधपत्र एवं 02 किताब प्रकाशित हुए हैं। इसी प्रकार डॉ. उर्मिला शुक्ला, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) को अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला सम्मान, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश प्राप्त हुआ तथा इनके 04 किताबें एवं 03 शोधपत्र प्रकाशित हुए। विधि विभाग के डॉ. सुरेन्द्र कुमार के 03 शोध पत्र प्रकाशित हुए। इस वर्ष सुश्री अरूणा ठाकुर, सहायक प्राध्यापक (लोकप्रशासन) को पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

प्रस्तुत प्रतिवेदन महाविद्यालयीन गतिविधियों का अतिसंक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत करता है, संस्था में निरंतर अध्ययन–अध्यापन के अलावा वे समस्त गतिविधियां व्यवहार में लाई जा रही है, जिनसे विद्यार्थियों को अपना भविष्य गढ़ने में सहायता मिल सके। बेहतरीन शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए हम संकल्पित हैं।

प्रसन्नता की बात है कि प्राची का नया अंक हमारे समक्ष है। महाविद्यालयीन पत्रिका का नियमित प्रकाशन होना एक उपलब्धि है। 'प्राची' विद्यार्थियों की छिपी हुई प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने के लिए मंच प्रदान करती है। आज के विद्यार्थी में ऊर्जा की कमी नहीं है, जरूरत इस बात की है कि हम यथाशक्ति उन्हें योग्यता के मापदण्डों पर स्थापित करने की कोशिश करें। 'प्राची' इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। 'प्राची' के प्रकाशन हेतु संपादन मंडल एवं रचनाकारों को शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

(डॉ. अमिताभ बैनर्जी)

संपादकीय ...

युवा पीढ़ी हमारे समाज का अनिवार्य हिस्सा है। युवकों के द्वारा ही किसी राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य निर्मित होता है। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन काल में युवाओं से ही अधिकाधिक संवाद किया। उन्होंने युवकों को संबोधित करते हुए कहा था, "उठो, जागो और जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो, रुको मत।" स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के विचारों के अनुकूल चिंतन–मनन करने की जरूरत है। वर्तमान समय में देश अनेक विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है। विभिन्न माध्यमों (मीडिया) पर अगर हम दृष्टिपात करते हैं तो अराजकता का ही बाहुल्य नजर आता है। समाज भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं से धीरे–धीरे ग्रस्त होता जा रहा है। प्रतिगामी शक्तियां [illegible] भीतर–ही–भीतर खोखला करती चली जा रही हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव धीरे–धीरे नेपथ्य में चला गया है। युवक [illegible] नकारात्मकता बढ़ती जा रही है। अनेक युवक प्रोफेशनल–विशेषज्ञ तो बन रहे हैं पर उनमें न भावनाएं हैं और न संवेदना [illegible] इसी का दुष्परिणाम है कि तथाकथित शिक्षित युवकों के माता–पिता वृद्ध आश्रम में रहने पर मजबूर हो रहे हैं। युवक [illegible] शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं लेकिन उच्च संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। इधर युवाओं में विनम्रता और धैर्य की कमी भी महसूस [illegible] जा रही है। बातों ही बातों में उनका उत्तेजित होकर हिंसक हो उठना दुखद है। हमारे शास्त्रों ने हमें सिखाया है –

विद्या ददाति विनयम्, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मम् ततः सुखम्।।

हम शिक्षा तो प्राप्त कर रहे हैं पर सही मायने में क्या शिक्षित भी हो रहे हैं ? हम गीता, रामचरितमानस, गुरुग्रंथ, कुरान या बाइबल आदि पढ़ते हैं मगर उसे समझने की कोशिश कितने लोग कर पाते हैं ? अगर इन [illegible] में बताई गई श्रेष्ठ बातों को हम अपने जीवन में उतार लें, तो हमारा जीवन सफल हो सकता है। धर्मग्रंथों की उपयोगिता [illegible] यही है। पाठ्य पुस्तकों के साथ–साथ हम इनका भी अनुसरण करें, तो नर से नारायण बनने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। पाठ्य पुस्तकें हमें शिक्षित तो करती हैं, किंचित ज्ञान भी देती हैं, लेकिन सद्ग्रंथ हमारे जीवन को सार्थक करते हैं क्योंकि उनसे [illegible] आत्मज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान से बड़ी चीज है आत्मज्ञान, जिस पर भी ध्यान जरूरी है। अगर युवा पीढ़ी इस दिशा में चिंतन करें तो एक स्वस्थ एवं महान समाज की सहज संरचना हो सकती है।

युवाओं में अनंत संभावनाएं होती हैं। वह शक्ति और चेतना से परिपूरित होते हैं। इसलिए बड़े–बड़े अनुसंधान युवकों के माध्यम से सफलीभूत होते रहे हैं। युवाओं का यह सृजन–कर्म ही सामाजिक नवनिर्माण की पीठिका तैयार करता है।

सृजन का पथ है लंबा, अभी तो दूर जाना है,
रुके ना पैर मेरे, बस यही संकल्प ठाना है,
बहुत-सी मुश्किलें भी पेश आएंगी मगर,
भुजाओं में है कितना बल, इसे ही आजमाना है।

तो युवाओं की भुजाओं में जो बल है, वही नवीन समाज का संबल है। इस बात को युवा पीढ़ी भली–भांति आत्मसात कर ले। यही किसी राष्ट्र की अभिलाषा होती है।

'प्राची' केवल महाविद्यालयीन पत्रिका नहीं है। यह महाविद्यालय–परिवार का दर्पण भी है। इसमें महाविद्यालय के वर्ष भर की विभिन्न गतिविधियों के साथ–साथ छात्रों द्वारा प्रस्तुत रचनात्मक प्रतिभा का भी आकलन होता है। विद्यार्थियों के अंतस की अभिव्यक्ति का माध्यम है 'प्राची'। अनेक छात्र–छात्राएं अध्ययन के साथ–साथ सृजनात्मक लेखन की ओर प्रवृत्त हों, इस दृष्टि से भी 'प्राची' एक सार्थक माध्यम रही है। सृजन ही नवीन विचारों का प्रस्थान बिंदु है। ये विचार ही नए भारत और नए समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। इस दिशा में पूरा महाविद्यालय प्रतिबद्ध रहा है। छात्र अपने श्रेष्ठ कर्मों से महाविद्यालय के साथ–साथ राष्ट्र का भी नाम रोशन करें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ...

- डॉ. मंजुला उपाध्याय

कीटभक्षी पौधे (Insectivorous plants)

राधेश्याम साव
बी. एस-सी. (द्वितीय)

जंतुओं की तरह कुछ पौछे भी कीटभक्षी होते हैं। सामान्यतः पौधे अपना क्लोरोफिल (हरे भाग) सूर्यप्रकाश एवं पानी की सहायता से प्रकाश संश्लेषण क्रिया के द्वारा प्राप्त कर लेते हैं तथा वृद्धि के लिए आवश्यक नाइट्रोजनी यौगिकों को भूमि से प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु कुछ पौधे ऐसे स्थान पर पनपते हैं, जहां नाइट्रोजनी यौगिक की कमी होती है अथवा पौधे उस माध्यम से नाइट्रोजनी यौगिक प्राप्त करने में अक्षम होते हैं। अतः ऐसे पौधे बाह्य स्त्रोतों से नाइट्रोजनी यौगिक को प्राप्त करने के लिए कीटों को पकड़ते हैं तथा उनका पाचन कर नाइट्रोजन की कमी को पूरा करते हैं। ये अन्य पौधों से थोड़ा अलग दिखते हैं। कीटों को पकड़ने के लिए इनकी पत्तियों में विशेष संरचनाएं पाई जाती हैं। इन्हीं पौधों को वनस्पति जगत में कीटभक्षी पौधों के रूप में जाना जाता है। विश्व में इनकी लगभग 400 प्रजातियां एवं भारत में लगभग 30 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से है –

1. **ड्रोसेरा (Drosera)** - इन्हें सनड्यूज (Sundews) भी कहा जाता है। यह शिमला, मसूरी, नैनीताल तथा दलदली जगहों में पाया जाता है। यह बहुत सुंदर कीटभक्षी पौधा होता है। ड्रोसेरा की पत्तियों के किनारे लाल रंग के कांटे लगे होते हैं, जिसमें चिपचिपा पदार्थ निकलता है, सूर्य की रोशनी में ये चमकते हैं। इससे आकर्षित होकर कीट पत्तियों पर बैठते हैं और इस चिपचिपे पदार्थ में फंस जाते हैं, पत्तियों के किनारे के कांटे मुड़कर कीटों को चारो ओर से घेर लेते हैं। इनके मृत्यु पश्चात् इनके शरीर के नाइट्रोजनी पदार्थों का पाचन होता है।
2. **कलश पादप (Pitcher Plant)** - इन्हें निपेन्थीस (Nepenthes) नाम से भी जाना जाता है। ये पौधे मेघालय की कुछ पहाड़ियों में पाये जाते हैं। इन पौधों की पत्तियों में कलश (Pitcher) जैसी संरचना होती है, इसलिए इन्हें कलश पादप (Pitcher Plant) कहा जाता है। कलश के शीर्ष पर एक ढक्कन होता है। कलश के अंदर पाचन ग्रंथियां होती हैं, जिससे पाचक पदार्थ निकलता है। जैसे ही कोई कीट इसके सम्पर्क में आता है, वह गिरकर इस कलश में फंस जाता है और ढक्कन बंद हो जाता है। पाचक पदार्थ, जिसमें प्रोटोलाइटिक एन्जाइम होता है, के द्वारा कीट को पचा लेते हैं तथा पौधे उसके पोषक तत्व को अवशोषित कर लेते हैं।
3. **यूट्रिकुलेरिया (Utricularia)** - इन्हें ब्लेडरवर्ट (Bladderwort) भी कहा जाता है। यह एक जलीय पौधा है। साफ पानी वाले स्थानों पर पाया जाता है। इसकी पत्तियां बहुत कटी–फटी होती है तथा कुछ पत्तियां थैलियों (bladder) के रूप में होती हैं। इसके मुख पर एक वॉल्व तथा अनेक रोम पाये जाते हैं। पानी की धार के साथ कीट थैली में प्रवेश करते हैं तत्पश्चात् वॉल्व बंद हो जाता है। थैली के अंदर उपस्थित पाचक ग्रंथियों द्वारा कीट का पाचन किया जाता है।
4. **डायोनिया (Dionea)** - इसे वीनस फ्लाईट्रेप (Venus Flytrap) भी कहा जाता है। इसकी पत्तियाँ दो भागों में बंटी होती हैं। पत्तियों के फलक पर संवेदनशील कांटे युक्त रोम होते हैं। जैसे ही कोई कीट इन्हें स्पर्श करता है, दोनों भाग अंदर की ओर मुड़कर कीट को बंद कर लेते हैं। पाचक रस पेप्सिन डाइड्रोक्लोराइड द्वारा पाचन हो जाने के पश्चात् पत्ती के दोनों भाग पुनः खुल जाते हैं।

चिकित्सकीय विशेषताओं के कारण इन पौधों के अत्यधिक उपयोग, प्रदूषित पानी, कीटनाशक के उपयोग तथा शहरीकरण के कारण ये पौधे खत्म होने की कगार पर हैं। अतः इनका संरक्षण अत्यावश्यक है।

तिरि - पासा

युगल किशोर
एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर)

एक अट्ठा, एक पंजा अउ एक दुआ मा गुड़िया के पुकत गोटी हा मर गे ता "अब तो कुछु हो जाए, मैं बदला लेके रहुं, तोर गोटी ला आज पुके ला नइ देव" अपन पूगत गोटी के मरे ले अतेक दुःख होते के का बताये, गुड़िया हर चुंदी धर के बोलिस। ये पारी सरकार के बिजली तार मन आंधी गरेर मा टूट गे जम्मो मोबाइल के बेटरी सिरा गे ता शुरू होय रिहिस ये खेल हा, घर के नोनी बाबू मन हा अब्बड़ घमासान के होत ले खेलिस। भौतिकतावादी जुग मा पहिली बार मोबाइल के बाहिर के दुनिया हा मोबाइल ले बने लागत रिहिस। ये पारी बिजली के बहाना ही सही फेर तिहार हा तिहार बरोबर लागत रिहिस, दादी हमर मने मन सोचत रिहिस।

सरी जीवन बीत गे सुशीला ला फेर जतेक दुलार से अपन दस झन लइका मन ला पाले रिहिस तेखर तारीफ जम्मो पारा परोस अउ गांव करथे। आज जब सबो तीजहारिन मन सकलाय रिहिस ता फेर ले बहार हा आगे रिहिस सुशीला के अंगना मा। सही घलोक ताय बेला, पंकज, चमेली, मंटू, गुड्डी, खोज, गुड़िया फूल के सात अलग अलग पंखुड़ी अव ओमे ओखर मन के संग गांव के अब्बड़ झन ओखर मन के संगवारी सबो झन के सकलाय ले पूरा अंगना भर गे राहय। ओमे ओखर पोती पोता........, अगर लाइट के नइ राहय ले अतेक खुशी मिलथे ता लाइट ला होना ही नही चाही।

छत्तीसगढ़िया मनखे मन मा भगवान, वेद, पुराण बर अब्बड़ प्रेम, गांव मन मा महाभारत काल चौसर के छोटे रूप हर तिरि पाशा कहे जाथे। छत्तीसगढ़ के अंचल मा पहिली लइका मन हा गरमी, दसरहा, दिवाली के छुट्टी मा अब्बड़ खेले, फेर जीवन के भाग दौड़ मा अउ मोबाइल के जुग मा मनखे हा येला भुलागे हे अब लुडो, रेसिंग, सबवे सर्फ मा फांसी अरोये रथे। सरकार हा लइका मन ला पहिली छात्रवृत्ति भर देवे, फेर मध्यान भोजन दिस, फेर साइकिल दिस, अउ अब जम्मो लइका मन ला मोबाइल धरा दिस, जीवन के जम्मो संस्कृति ला ताक मा रख के बिकास करत हे।

आज तीजा रिहिस जम्मो बहिनी मन उपास रिहिस, भाई मन बर मुंधरहा ले रांध पसा के मढ़ा दे रिहिन, आज बहिनी मन हा सब काम ला चुटकी बजा के पूरा करके रख दिन्न। भादो के महिना में सबो कोती पानी चिखला अउ माटी काकरो घर जाये मा घलोक तकलीफ तेखर ले सुघ्घर सब्बो कोई मन बइठ के लइका मन ला तिरि पासा बनाये बर किहिस अमली के बीजा ला पथरा में घस के एक कोती ला चिकना करिस, पासा बनके तैयार होगे। शुरू मा लइका मननके जिद मा गुड़िया अउ मंटू मिलके शुरू करे रिहिस। फेर धीरे–धीरे सबो बहिनी मन अपन–अपन ले चाल अउ नियम बता बता के खेले बर धर ले रिहिस। जब सबो झन मन खेले बर शुरू करिस ता 25 घर के खाना ला बड़े करिस अउ 50 घर के खाना के बना दिस। फेर का हे.......... सब के हाथ के अपन कलाबाजी, एक पच्चीस, दो पच्चीस, एक अट्ठा, एक पंजा, एक काना, दुवा, तिया ले पूरा अंगना में लड़ाई झगड़ा मात गे, ये गोटी ला घलो मार, तिया ला, अब यहु ला मार............. अइसे चाल ते वइसे चाल, येला रेंग ते ओदे ला रेंग।

फेर एक पाली, दू पाली, चार छे करत करत सांझ के चहा के बेरा होगे तभो ले खोज, गुड्डी, गुड़िया अउ नोनी लगे रिहिस अपन गोटी पुगाय बर, आखिरी में गुड़िया हा बदला लेके पहिली गोटी पुगा के आखिरी पारी के अव्वल खिलाड़ी बनिस। अब धीरे धीरे खेल सिरा गे फेर सब्बो कोई के जीवन में फेर से एक बार ओखर मन के बचपना ला संग लाके आने वाला पीढ़ी बर एक ठन जिनगी में नवा खेल दरसन देके गिस।

सांझ के पुरत ले खेल चलिस फेर जाके लाइट आइस। लाइट के आय ले सबो अपन पूजा पाठ के परबन्ध मा लग गे। फेर सब्बो के मन मा चलत रिहिस ते एक्केच चीज "तिरि–पासा"।

माटी मा माथ नवादव

मनखे मनखे सुन्ता होके, माटी मा माथ नवादव
सब ला संगी, मितान अउ मया के परवान बनादव
सब बेटी-माई के जिन्गी मा मया के अंजोर बगरादव
लईका लईका ला ज्ञानवान संगी बलवान बनादव

बनी-भूतहि करइया ला, सुख रसिक विधान बनादव।
मनखे मनखे सुन्ता होके, माटी मा माथ नवादव
सब ला संगी, मितान अउ मया के परवान बनादव
सब गरीब के जिन्गी ला, लहलहावत हरियर धान बनादव

सब किसान अउ जवान ला, करम-धरम परधान बनादव
सब नेता मिल हमर छत्तीसगढ़ ला, सागर शांत बनादव।
मनखे मनखे सुन्ता होके, माटी मा माथ नवादव
सब ला संगी, मितान अउ मया के परवान बनादव

स्वच्छ सुंदर आकाश, हवा ला
सुवन सुवास बनादव
सोच ला स्वच्छंद उड़ान, जीवन
ला कर्मप्रधान बनादव
सब मनखे मिल हमर परदेश ला
शान्ति सुखधाम बनादव।

चंचल वर्मा
एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर)

चलो आज शंखनाद करें

चलो आज फिर शंखनाद करें
जो याद नहीं, उनको याद करें
क्या द्वेष क्या नाराजगी
चलो प्रेम का उन्माद करें
चलो आज फिर शंखनाद करें
न लोभ न पाप में पड़ें,
इन सबसे मन को आजाद करें,
क्या तुम, क्या मैं, क्या आप करें,
चलो जीवन को खुशियों को आबाद करें
चलो आज फिर शंखनाद करें
तुलना करना छोड़ दें,
क्यों मैं पहले, क्यों तू बाद करें
हम ही सबसे श्रेष्ठ हैं,
यह भ्रम कल से नहीं
मन में आज ही नाश करें
चलो आज फिर शंखनाद करें
दुर्घटना में कभी फंस गये
लोग सहायता नहीं
विडियो बनाने लग गये
इंसानियत न जाने कहीं हो
गई गुम
चलो मानवता का पाठ करें
चलो आज फिर शंखनाद
करें

सनत कुमार बघेल
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

''कॉफी'' उत्पादन एवं प्रसंस्करण

जयश्री पोटे
बी.एस.सी. (तृतीय वर्ष)

''कॉफी'' शब्द की उत्पत्ति दक्षिण पश्चिम एबीसीनिया के ''काफा'' शहर से मानी जाती है। कॉफी का पौधा बहुवर्षीय क्षुप होता है जिसकी ऊंचाई लगभग 5–10 मीटर तक होती है। इसका तना काष्ठीय तथा पत्तियां चर्मिल होती है। कॉफी उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की पहाड़ियों का पौधा है। कॉफी की खेती पहाड़ी ढलानों पर सीढ़ीनुमा खेत बनाकर की जाती है। इसे नम एवं ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है जहां का तापमान 15'C - 21'C के बीच हो।

कॉफी के पौधों के बीच–बीच में एल्बिजिया लेबेक, टर्मिनेलिया आदि के वृक्ष लगाये जाते हैं। कॉफी बगान तैयार करने के लिए बीज से नवोदभिद् तैयार किये जाते हैं जिन्हें छः पश्चात् मुख्य स्थल में रोप दिया जाता है। बीजों के अलावा कर्तन का प्रयोग भी नये पौधों के विकास किया जाता है। कॉफी के पौधे 3–4 वर्ष के होने पर पुष्प एवं फल धारण करना प्रारंभ कर देते हैं। उत्पादन करने वाले पौधे को काटछांट कर 1–1.5 मीटर तक की ऊंचाई तक सीमित कर दिया जाता प्रतिवर्ष कर्तन की प्रक्रिया जनवरी–फरवरी माह में की जाती है। लगभग 40 वर्षों तक इनसे कॉफी के प्राप्त किये जा सकते हैं। वर्षभर में कॉफी के फलों का एकत्रीकरण 3 से 12 बार किया जाता है। पके फलों एक–एक कर हाथों से चुनकर तोड़ा जाता है।

कॉफी का प्रसंस्करण शुष्क एवं आर्द्र विधियों द्वारा किया जाता है। शुष्क विधि में कॉफी के बीजों धूप एवं गर्म हवा दोनों द्वारा सुखा लिया जाता है इसके पश्चात् कूटकर बीज को अलग कर लिया जाता है।

आर्द्र विधि में पानी का उपयोग किया जाता है। परिपक्व कॉफी के बीज पानी से भरे टैंक में 12-2 घंटे डालकर रखा जाता है। मशीन की सहायता से गूदा एवं बीज अलग किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त गू रहित कॉफी को सुखा दिया जाता है। ताकि नमी 12: से अधिक नहीं रहे। कॉफी के फल मूत्रवर्धक होते अतएव ऐसी स्थितियों में औषधीय उपयोगिता रखते हैं। इसकी शाखाओं से टहलने की छड़ियां, औजारों हत्थे आदि बनाये जाते हैं।

भारत में कॉफी का उत्पादन कर्नाटक, तमिलनाडू, केरल तथा उड़िसा में होता है। छत्तीसगढ़ पहाड़ी नम, ठंडे स्थानों में कॉफी उत्पादन की संभावनाएं हैं।

नागरिकता

भोलेराम सिन्हा
एल.एल.एम. (प्रथम सेमेस्टर)

नागरिकता शब्द से तात्पर्य है किसी भी समुदाय की पूर्ण सदस्यता का आनंद प्राप्त करना या राज्य जिसमें नागरिक रहता है, वह राजनीतिक और नागरिक अधिकार प्राप्त करता है। इसे एक विशेष राज्य के व्यक्ति के कानून संबंधों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसे वह राज्य के प्रति अपनी वफादारी निभाने के लिए प्रतिबद्ध रहता है और अपने कर्तव्यों को निभाकर देश के प्रति अपना फर्ज अदा करता है। जैसे–जरूरत के समय सेना की मदद करना, राष्ट्रीय सिद्धांतों और मूल्यों का सम्मान करना आदि।

नागरिकता का अर्थ - राज्य की राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत उन्हें मौलिक अधिकार प्राप्त होते हैं जो नागरिक होते हैं, निश्चित रूप से राज्य के अंदर कुछ अधिकार गैर नागरिकों को भी प्रदान किये जाते हैं, लेकिन वह अधिकारों की प्रकृति और राजनीतिक व्यवस्था में अप्रभावकारी होती है।

नागरिकता की परिभाषा - कैटलिन के अनुसार - ''नागरिकता किसी व्यक्ति की वह वैधानिक स्थिति है जिसके कारण वह राजनीतिक रूप से संगठित समाज की सदस्यता प्राप्त कर राजनीतिक एवं सामाजिक लाभ प्राप्त करता है।''

लास्की के अनुसार - ''नागरिक से आशय उस व्यक्ति से है जो संगठित समाज का सदस्य भाग ही नहीं बल्कि वह संगठित समाज के आदेशों का वाहक एक कर्त्तव्यों का स्वाभाविक पालनकर्ता भी होता है'' किसी राष्ट्र के सम्पूर्ण सदस्य होने का महत्व तब ठीक समझ में आ सकता है जब हम दुनियाभर में उन हजारों लोगों की स्थिति के बारे में सोचते हैं, जो दुर्भाग्यवश शरणार्थी और अवैध प्रवासियों के रूप में रहने के लिए मजबूर हैं। क्योंकि उन्हें कोई राष्ट्र अपनी सदस्यता देने के लिए तैयार नहीं है, ऐसे लोगों को कोई राष्ट्र अधिकारों की गारण्टी नहीं देता और वे आमतौर पर असुरक्षित हालत में जीवन यापन करते हैं। मनपसंद राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता उनके लिए ऐसा लक्ष्य है जिसके लिये वे संघर्ष करने को तैयार हैं जैसा की मध्यपूर्व के फिलिस्तीनी शरणार्थियों के मामले में देखते हैं।

नागरिकों को प्रदत्त अधिकार - नागरिकों को प्रदत्त अधिकारों की सुस्पष्ट प्रकृति विभिन्न राष्ट्रों में भिन्न–भिन्न हो सकती है। लेकिन अधिकतर लोकतांत्रिक देशों ने आज उनमें कुछ अधिकार शामिल किये हैं।

उदाहरण स्वरूप मतदान, अभिव्यक्ति या आस्था की आजादी जैसे नागरिक अधिकार और न्यूनतम मजदूरी या शिक्षा पाने से जुड़े कुछ सामाजिक–आर्थिक अधिकार। नागरिकता महज एक कानूनी अवधारणा नहीं है। इसका समानता और अधिकारों के व्यापक उद्देश्यों से भी घनिष्ठ संबंध है इस संबंध का सूचीकरण अंग्रेज समाजशास्त्री टी. एच. मार्शल 1893–1981, ने अपनी पुस्तक 'नागरिक और सामाजिक वर्ग' में किया है।

मार्शल, नागरिकता में तीन प्रकार के अधिकारों को शामिल करते हैं। नागरिक, राजनीतिक और सामाजिक।

1. **नागरिक अधिकार** - नागरिक अधिकार व्यक्ति के जीवन, आजादी और जायदाद की हिफाजत करते हैं।
2. **राजनीतिक अधिकार** - राजनीतिक अधिकार व्यक्ति को शासन प्रक्रिया में सहभागी बनने की शक्ति प्रदान करते हैं।
3. **सामाजिक अधिकार** - सामाजिक अधिकार व्यक्ति के लिए शिक्षा और रोजगार को सुलभ बनाते हैं।

मार्टिन लूथर किंग का नागरिकता अधिकार आंदोलन 1950 -

1950 का दशक संयुक्त राज्य अमेरिका के अनेक दक्षिणी राज्यों में कालो व गोरों की आबादी के बीच बरकरार विषमताओं के खिलाफ नागरिक अधिकार आंदोलन के उभार का साक्षी है। इस तरह की विषमताएं इन राज्यों द्वारा पृथक्करण कानून के नाम से चर्चित ऐसे कानूनों के जरिये पोषित होती थी, जिसमें काले लोगों को अनेक नागरिक और राजनीतिक अधिकारों से वंचित किया जाता था। इन कानूनों के खिलाफ वे आंदोलन में मार्टिन लूथर अंग्रेजी काले नेता थे। उन्होंने इसके खिलाफ अनेक तर्क दिये –

1. आत्म गौरव व आत्म सम्मान के मामले में विश्व की हर जाति के वर्ग का मनुष्य बराबर है।
2. पृथक्करण राजनीति के चेहरे पर सामाजिक कोढ़ की तरह है क्योंकि यह उन लोगों को गहरे मनोवैज्ञानिक जख्म देते हैं जो ऐसे कानून के शिकार हैं।
3. किंग ने कहा पृथक्करण की प्रथा गोरे समुदाय के जीवन में गुणवत्ता भी कम करती है।
4. पृथक्करण कानून लोगों के बीच कृत्रिम सीमाएं खींचते हैं। देश की व्यापक स्थिति के लिए एक–दूसरे का सहयोग करने से रोकते हैं। इसलिए किंग ने बहस छेड़ी कि इन कानूनों को खत्म किया जाये।

संवैधानिक प्रावधान - संसद के कानून द्वारा नागरिकता को विनियमित करने के लिए संविधान सभा अनुच्छेद 11 के माध्यम से एक सामान्यीकृत प्रावधान शामिल किया गया है। जब इस संविधान को अपनाया गया, तब अनुच्छेद 3–11 रूप में नागरिकता के संविधान भाग 2 लागू किया गया।

अनुच्छेद 5 के अनुसार - ''प्रत्येक व्यक्ति'' जो भारत के क्षेत्र में रहता है और जो भारत के क्षेत्र में पैदा हुआ था या जिसके माता–पिता भारत के क्षेत्र में पैदा हुए थे या कम से कम 5 साल के लिए भारत के सामान्य नागरिक

रहे परन्तु इस प्रकिया के प्रारम्भ होने के बाद भारत का नागरिक बन सकता था।

अनुच्छेद 6 के अनुसार - कुछ भारतीयों को नागरिकता का अधिकार जो पाकिस्तान से भारत आ गए हैं उन्हें संविधान के प्रारम्भ में नागरिकता के तहत शामिल करना।

अनुच्छेद 7 के अनुसार - नागरिकता का अधिकार कुछ पाकिस्तानी प्रवासियों के लिए। ये उन लोगों के लिए विशेष प्रावधान है जो 1 मार्च 1947 के बाद पाकिस्तान चले गए परंतु बाद में भारत लौट आए थे।

अनुच्छेद 8 - ये नागरिकता का अधिकार उन व्यक्तियों के लिए हैं जो भारतीय मूल के होते हुए भारत के बाहर रोजगार, शिक्षा और शादी या अनुच्छेद 8 के आगे रख देने के उद्देश्य से दिया गया है।

अनुच्छेद 9 - वह व्यक्ति जो स्वेच्छा से विदेशी राज्य की नागरिकता हासिल करता है, वह भारत का नागरिक नहीं होगा।

अनुच्छेद 10 - वह व्यक्ति जो भारत का नागरिक है इस भाग के किसी प्रावधान के तहत जो संसद द्वारा बनाया गया हो के अधीन होगा।

अनुच्छेद 11 - नागरिकता के संबंध में परिवर्तन करने के लिये संसद को शक्ति। अनुच्छेद 5, 6, 7, 8 सन् 1955 तक लागू था। ये अनुच्छेद भारतीय नागरिकता अधिनियम, 1955 प्रभावी होने के बाद स्वतः ही समाप्त हो गया। भारत में केवल एकल नागरिकता प्राप्त है जो केन्द्र के द्वारा नागरिकता है। दोहरी नागरिकता, केन्द्र व राज्य दोनों की नागरिकता, जैसे – अमेरिका, कैलिफोर्निया।

नागरिकों को प्राप्त विशेषाधिकार (नागरिकता का महत्व) -

निम्नलिखित मूल अधिकार और संविधान में केवल नागरिकों को ही प्रदान किये गये हैं –

1. राज्य नागरिकों के बीच केवल मूलवंश जाति, लिंग, जन्म स्थान के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करेगा। (अनुच्छेद 15)
2. राज्य द्वारा प्रदत्त नौकरियों के विषय में अवसर की समानता का अधिकार। (अनुच्छेद 16)
3. अनुच्छेद 19 में उल्लेखित मूल स्वतंत्रताएं जैसे–भाषण की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। सभा, संघ, आवास, सम्पत्ति तथा पेशे की स्वतंत्रता।
4. अनुच्छेद 29 व 30 द्वारा प्रदत्त सांस्कृतिक एवं शिक्षा का अधिकार।
5. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति, उच्च न्यायालयों एवं उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीश, राज्यपाल, महान्यायविद, महाधिवक्ता आदि पद केवल नागरिकों से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।
6. केन्द्रीय विधानमण्डल और राज्य विधानमण्डलों के प्रतिनिधियों को चुनने का मताधिकार और इन संस्थाओं के सदस्य बनने का अधिकार केवल नागरिकों से ही प्रदान किए गए हैं।
7. ये सम्पूर्ण अधिकार भारतीय नागरिकों को ही प्राप्त होंगे। अन्य विदेशी नागरिकों को इस अधिकार की अनुमति संविधान नहीं देता है।

1955 का नागरिकता अधिनियम संशोधन - संविधान के प्रारम्भ होने के बाद नागरिकता का अधिग्रहण और सम्पत्ति से संबंधित है।

1. वह व्यक्ति जो 26 जनवरी 1950 के बाद भारत में पैदा हुआ हो, वह भारत का नागरिक हो सकता है। लेकिन राजनायिकों के बच्चे भारत के नागरिक नहीं हो सकते।
2. 26 जनवरी 1950 के बाद पैदा हुआ कोई भी व्यक्ति नागरिक तभी कहलाएगा जब वह कुछ शर्तों को पूरा करेगा जैसे – उसके माता–पिता भारत के नागरिक हो, या पिता नागरिक हो आदि।
3. कुछ विदेशी कुछ शर्तों को पूरा करके भारतीय नागरिकता हासिल कर सकते हैं।

4. यदि कोई भी क्षेत्र भारत का हिस्सा बन जाता है। भारत सरकार उन्हें नागरिक बनने के लिए शर्तों को निर्दिष्ट कर सकता है।
5. नागरिकता कुछ आधारों पर जैसे – बर्खास्तगी आदि से खो सकती है।
6. एक राष्ट्रमण्डल देश के नागरिक को भारत में राष्ट्रमण्डल नागरिकता का दर्जा दिया जाएगा।

1986 का नागरिकता संशोधन अधिनियम - यह अधिनियम विशेष रूप से असम राज्य की नागरिकता से संबंधित है। इसमें उल्लेख किया गया है कि नागरिकता पाने के लिए अवैध प्रवासियों को निर्धारित प्रारूप में भारतीय वाणिज्य दूतावास के साथ पंजीकृत होने की जरूरत है।

1992 का नागरिकता संशोधन अधिनियम - इस अधिनियम के अनुसार भारत के बाहर पैदा हुए व्यक्ति को वंश परंपरा के द्वारा नागरिकता मिल सकती है। यदि उसके माता पिता दोनों में से कोई भी अपने जन्म के समय भारत के नागरिक रहे हो।

2003 का नागरिकता संशोधन अधिनियम - यह अधिनियम अधिकारों का परिचय देता है जिसमें पंजीयन से संबंधित विदेशी नागरिक के लिए प्रावधान दिये गये हैं।

2005 का नागरिकता संशोधन अधिनियम - यह अधिनियम गृह मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति की सिफारिश पर निर्भर करता है। यह चचै के 16 देशों के लिए दोहरी नागरिकता का प्रावधान प्राप्त करता है।

भारतीय नागरिकता अधिनियम 1955 के तहत 5 तरीकों से नागरिकता प्रदान की जाती है –

1. जन्म से
2. वंशक्रम / रक्तसंबंध से
3. पंजीकरण से
4. देशीकरण से
5. भूमि अधिग्रहण से

1. **जन्म से** - भारत में जन्मे व्यक्ति को नागरिकता, परन्तु जन्म के समय, पिता भारतीय नागरिक हो, 1986 संशोधन के तहत माता या पिता भारतीय हो, 3 दिसम्बर 2004 संशोधन के तहत जन्म के समय माता एवं पिता दोनों भारतीय हो।
2. **वंशक्रम / रक्त संबंध से नागरिकता** - ऐसा व्यक्ति जिसका जन्म विदेश में हुआ हो, को नागरिकता परंतु जन्म के समय पिता भारतीय हो, 1992 संशोधन के बाद माता या पिता दोनों में से एक भारतीय हो। 3 दिसम्बर 2004 संशोधन के बाद माता एवं पिता दोनों भारतीय हो।

पंजीकरण से नागरिकता - किसी विदेशी जिसका संबंध भारत से हो अर्थात् भारतीय मूल के व्यक्ति में नागरिकता परंतु शर्तें – भारतीय मूल के विदेशी नागरिक को भारतीय नागरिकता, भारतीय महिला या पुरूष जो विदेशी नागरिक से विवाह किया हो, को नागरिकता।

- आवेदन विदेश मंत्रालय के समक्ष।
- शर्तें आवेदन की तिथि से पूर्व 7 वर्ष तक निवासरत हो।
- आवेदन के पूर्व एक वर्ष लगातार रहना होगा।
- आवेदन के 6 माह के भीतर नागरिकता मिलेगी।
- 06 जनवरी 2015 तात्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा नागरिकता संशोधन अध्यादेश 2015 के तहत 1 वर्ष निवास एवं लगातार 1 माह निवास करना पड़ेगा।
- पाकिस्तानी को नागरिकता नहीं दी जाएगी।

देशीकरण से नागरिकता - विदेशी जिसका संबंध भारत से न हो। आवेदन विदेश मंत्रालय। 12 वर्ष तक निवास आवेदन के पूर्व। आवेदन के पूर्व लगातार 1 साल रहना होगा।

06/01/2015 नागरिकता संशोधन अध्यादेश 2015 के तहत अवधि 1 साल।

भूमि अधिग्रहण से - विदेशी भूमि के अधिग्रहण के बाद निवासरत लोगों को स्वतः ही नागरिकता मिल जायेगी।

अनिवासी भारतीय NRI (Non Residency in India) - 6 माह से विदेश में रहने वाले व्यक्ति को विदेशी पर्यटक कहा जायेगा। विदेश में 6 माह से ज्यादा तो उसे एन आर आई कहेंगे। NRI को संवैधानिक अधिकार प्राप्त है, वह भारतीय नागरिक भी होगा। NRI की नागरिकता समाप्त नहीं होगी।

भारत में विदेशी नागरिक PIO (Person India in origin) - NRI जो विदेशी नागरिक ग्रहण करता है तो उसे PIO कहा जाता है। विदेशी नागरिकता ग्रहण करने पर भारत की नागरिकता समाप्त हो जाती है। PIO भारतीय मूल के विदेशी नागरिक कहलाते हैं।

OCI (Overseas Citizen in India) - OCI जो भारत की नागरिकता एवं विदेशी नागरिकता दोनों ग्रहण करे तो उसे OCI कहेंगे। OCI भारत सरकार द्वारा प्रसिद्ध व्यक्तियों को दी जाती है। OCI को दोहरी नागरिकता भी कहते हैं।

OCI गर्ड का घोषण 2003, अमेरिकी प्रवासी निब्रित राय को।

POI गर्ड – POI का घोषण 1999, प्रथम प्रवासी ब्रिटिश नासिर हुसैन को 2002 में।

15 वर्ष तक वीजा, भारत में आकर सिर्फ शिक्षा एवं व्यापार कर सकता है।

नागरिकता का अन्त -

- नागरिकता का परित्याग करने से।
- स्वेच्छा से किसी अन्य देश की नागरिकता स्वीकार कर लेने से।
- संघ सरकार द्वारा नागरिकता का अपहरण।
- असत्य अभिलेख, देशद्रोह से, दीर्घ प्रवास से, अपराध से।
- 1955 का नागरिकता अधिनियम खो जाने के साथ–साथ अधिग्रहण करने के प्रावधान के बारे में भी बताता है।
- त्याग के द्वारा, निष्कासन के द्वारा।

निष्कर्ष :- नागरिकता लोकतांत्रिक व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण नींव है। यह व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक जीवन की आजादी की हिफाजत करती है, आत्म गौरव तथा आत्म सम्मान की रक्षा करती है।

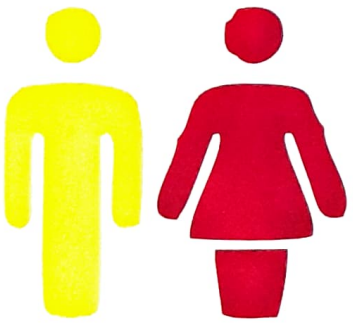

नागरिकता
Citizenship

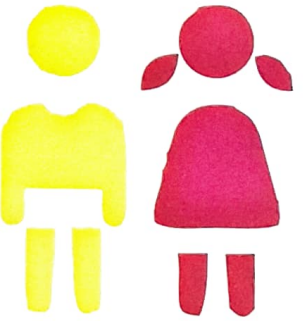

भारत में समान नागरिक संहिता की आवश्यकता

खिलेश्वर [illegible]
एल.एल.एम. (तृतीय सेमेस्टर)

प्रस्तावना - शायरा बानो के बाद में सर्वोच्च न्यायालय में तीन तलाक को असंवैधानिक घोषित करते हुए, सरकार को कड़े शब्दों में कहा कि वह समान नागरिक संहिता के संबंध में कानून निर्माण करें, ताकि समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारा जा सके और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक पहल हो। हाल के वर्षों में देश में समान नागरिक संहिता को लेकर सियासी और सामाजिक दोनों ही माहौल गर्म रहा है। देश में हर बार चुनावी वर्ष में इस मुद्दे पर राजनीति होती रही है, परंतु चुनाव के बाद इसे ठंडे बस्ते में डाल देने का जैसा रिवाज सा चल पड़ा है। देश में एक ओर जहां देश की बहुसंख्यक आबादी समान नागरिक संहिता को लागू करने की पूरे जोर-शोर से मांग उठाती रही है, वही अल्पसंख्यक वर्ग का एक धड़ा इसका विरोध करता रहा है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इस कानून के माध्यम से महिलाओं को कई अधिकार मिलेंगे परंतु कानून को लागू करने पर कदम-कदम पर कई चुनौतियां भी हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि - देश में समान नागरिक संहिता के संबंध में पहला कदम 1954 में उठाया गया था जब विशेष विवाह अधिनियम पारित किया गया था। इसके बाद सन 1980 के दशक में शाहबानो के मामले में न्यायालय में एक मुस्लिम महिला को भरण-पोषण दिलाकर एक नई पहल की वर्ष, 1995 में सरला मुद्गल के

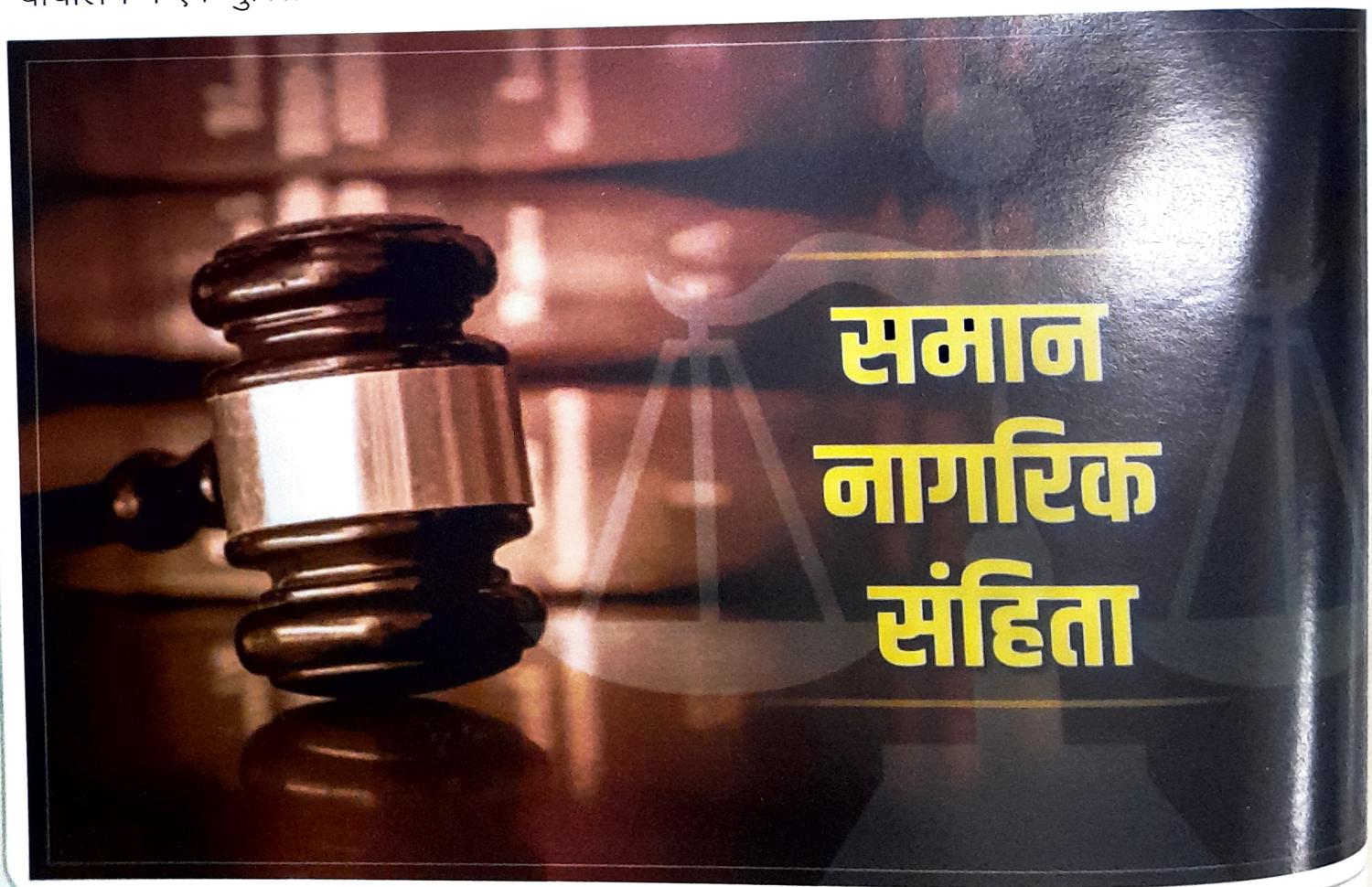

मामले में सुप्रीम कोर्ट ने समान नागरिक संहिता लागू करने के संबंध में सरकार को निर्देश दिए। अब जबकि तीन तलाक पर कानून बन चुका है और सरकार जल्द ही जनसंख्या नियंत्रण पर कानून लाने की तैयारी कर रही है तो यह प्रतीत हो रहा है कि संभवतः यह देश में समान नागरिक संहिता की दस्तक है।

संवैधानिक पृष्ठभूमि – उपनिवेशकालीन भारत में 1840 की लेक्स लोयास की रिपोर्ट में इस बात पर जोर देकर कहा गया था कि अपराध, सबूत और अनुबंध को लेकर कानूनों में समान संहिता आवश्यक है लेकिन इसके बावजूद इस समिति ने हिंदू और मुस्लिमों के निजी कानूनों को ऐसी संहिता से दूर रखने की सिफारिश भी की थी। भारतीय संविधान के भाग–4 जिसे राज्य के नीति निर्देशक तत्व के नाम से जाना जाता है, के अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता के संबंध में प्रावधान किया गया है जिसके अनुसार 'राज्य भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक के लिए एक समान पारिवारिक विधि होती है, फिर वह चाहे किसी भी धर्म और जाति का क्यों न हो। वर्तमान में देश में कई धर्म के लोग विवाह, संपत्ती, दत्तक, तलाक आदि मामलों में अपने पर्सनल लॉ का पालन करते हैं। मुस्लिम, इसाई और पारसी समुदाय का अपना पर्सनल लॉ है जबकि हिंदू सिविल लॉ के अंतर्गत हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध आते हैं।

आंकड़ों की जुबानी - सेंटर फॉर स्टडी डेवलपिंग सोसायटीज ने समान नागरिक संहिता कानून के मुद्दों पर किये गये एक सर्वे के मुताबिक 57 फीसदी लोग विवाह, तलाक, संपत्ति दत्तक ग्रहण, भरण–पोषण जैसे मसले पर पृथक कानून के पक्ष में थे तथा केवल 23 प्रतिशत लोग समान नागरिक संहिता के पक्ष में थे एवं 20 फीसदी लोगों ने कोई राय नहीं दी अर्थात् क्या देश की भावना अभी भी समान नागरिक संहिता के पक्ष में नहीं है? ये आंकड़ें जरूर चौंकाने वाले हैं। वर्ष 2016 का विधि आयोग भी समान नागरिकता का समर्थन नहीं करता तथा आयोग का यह कहना है कि निजी कानूनों में फर्क किसी भेदभाव में नहीं बल्कि एक मजबूत लोकतंत्र की पहचान है।

आखिर विरोधाभास क्यों - भारतीय संविधान भारत में विधि के शासन की स्थापना की वकालत करता है। ऐसे में आपराधिक मामलों में जब सभी समुदाय के लिए एक कानून का पालन होता है तब सिविल मामलों में अलग कानून पर प्रश्न चिन्ह लगाना लाज़िमी है। इससे न केवल समानता बल्कि अन्य अधिकारों को भी अमलीजामा पहनाया जा सकेगा तथा समाज सुधार जैसी पहल कामयाब होगी। हमें समझना होगा कि निजी कानूनों के सुधार के अभाव में न तो महिलाओं की हालत बेहतर हो रही है और न ही उन्हें सम्मानपूर्वक जीने का अवसर मिल रहा है, लेकिन दूसरी तरफ विधि आयोग की सलाह और अल्पसंख्यकों की चिंताओं पर भी गौर करना होगा।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भारत जैसे इतने बड़े लोकतांत्रिक देश में, जहां की संस्कृति में बहुलता पायी जाती है, यही विविधता इस देश की सुंदरता भी है। ऐसे में जरूरत है देश को एक ऐसे समान कानून में पिरोने की पहल की, जिसे अधिकतम सर्वसम्मति से अपनाया जा सके। ऐसे प्रयासों की आवश्यकता है जो समाज को ध्रुवीकरण की राह पर न ले जाए और सामाजिक सौहार्द के लिये चुनौती भी पैदा न करें।

छत्तीसगढ़ की लोक परम्परा एवं लोक जीवन

खेमन्ती देवांगन
एम.एस-सी. (द्वितीय सेमेस्टर)

लोक :- ऐसा समरूप समूह जिसकी कुछ निश्चित विशिष्टताएं होती है और जो अपनी सभ्यता, रीति–रिवाज, कला, शिल्प, दंतकथाओं, परम्पराओं और आस्थाओं आदि को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण द्वारा एक लंबी अवधि तक बनाए रखता है, लोक या जन कहलाता है।

''लोक'' शब्द में गांव, कस्बे, नगर अथवा किसी क्षेत्र विशेष के सभी ऐसे व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है जिनमें सामान्य संस्कृति विरासत की चेतना होती है तथा जिनमें कुछ स्थायी लक्षण होते हैं, जिनका व्यावहारिक ज्ञान लिखित धर्मग्रन्थों पर आधारित न होकर मौखिक परम्परा पर आधारित होता है। ऐसे व्यक्तियों की जीवनशैली तथाकथित सभ्य व्यक्तियों की अपेक्षा अत्यधिक पारम्परिक, सरल, स्वाभाविक, कम नियोजित एवं न्यूनतम विशेषीकृत होती है।

लोककला :- हमारे छत्तीसगढ़ में लोगों में ऐसी पारम्परिक व अनामिक कला जो सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त करती है, छत्तीसगढ़ की लोककला कहलाती है। लोककला शास्त्रीय, पौराणिक या आत्मचेतनात्मक सर्वदेशीय अभिव्यक्ति से भिन्न होती है। इनमें प्रमुख रूप हैं :–

1. **चित्रकारी** - एक ओर देखें तो छत्तीसगढ़ की लोक कला में चित्रकारी उभर कर आती है। यहां प्राचीन मंदिरों, भवन तथा स्मारकों पर पत्थर से खुदे चित्र बने हैं जो छत्तीसगढ़ की कलाकृति को प्राचीन से वर्तमान तक उकेरे हुए हैं। वहीं दूसरी ओर यहां शिल्पकला भी देखने को मिलती है।
2. **शिल्पकला** - यहां की शिल्पकला विश्वविख्यात है। छत्तीसगढ़ के सामान्यतः सभी प्राचीन मंदिर भवन तथा स्मारकों में इसे साफ–साफ देखा जा सकता है। कई ऐसे प्राचीन मंदिर हैं जिनमें दीवारों पर शिल्पकारी की गई है। हम रायपुर की ही बात करें तो यहां का दूधाधारी, मंदिर जो राजा पृथ्वीदेवराय के समकालीन है, उसकी दीवारें बताती हैं कि छत्तीसगढ़ में लोककला में शिल्पकारी का क्या योगदान रहा है।

लोक विश्वास :- छत्तीसगढ़ में लोक विश्वास भी यहां के लोक जीवन का अभिन्न अंग है। विश्व की उत्पत्ति अथवा मानवीय संबंधों, संस्थाओं या वस्तुओं की उत्पत्ति संबंधी काल्पनिक विचारों को लोक विश्वास कहते हैं। लोकविश्वास में लोक जीवन की भौतिक एवं धार्मिक चेतना का मूलस्त्रोत निहित है। लोक विश्वास में दृश्य एवं अदृश्य जगत के प्रति जन–साधारण का दृष्टिकोण प्रतिबिम्बित होता है।

लोक संस्कृति :- अत्यंत छोटे, सुसंगठित, सजातीय एवं लगभग आत्मनिर्भर लोक समुदाय जिसमें प्रत्यक्ष अन्तर्वैयक्तिक संबंध होते हैं, उनकी सामान्य जीवन शैली को लोक परम्परा या लोक संस्कृति कहते हैं। इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ की विभिन्न संस्कृतियों का उल्लेख किया गया है –

नृत्य - धार्मिक कर्मकाण्ड के रूप में प्रारम्भ नृत्य को लोकनृत्य की संज्ञा दी गई है। ऐसे नृत्य आगे चलकर देश विदेश की विशिष्टता बन जाते हैं। पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरण की प्रकिया में इनमें निखार आने के साथ–साथ, धीरे–धीरे ये धर्मनिरपेक्ष रूप ग्रहण करते जाते हैं। हमारे छत्तीसगढ़ में अलग–अलग शुभ अवसरों पर अलग–अलग नृत्य किए जाते हैं। जिनमें प्रमुख हैं – पंथी नृत्य, सुवा नृत्य, ददरिया, राऊत नाचा, बस्तर में मड़ई के समय किया जाने वाला नृत्य, हरेली में गेड़ी नृत्य, बस्तर में शिकार नृत्य आदि।

नाट्य :- छत्तीसगढ़ के रंगमंच में कई तरह के नाट्य रचे जाते हैं जिनमें प्रमुख हैं लोरिक–चन्दा, रामायण की चौपाईयों में सीताहरण इत्यादि। यहां भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के कारण नाट्यशैली भी भिन्न–भिन्न हैं। कहीं धार्मिक नाट्य विधाएं रंगमंच पर उकेरी जाती है तो कहीं विवाह आदि उत्सवों पर प्रेम–प्रसंग जैसे नाट्यों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। शिकार के समय जनजाति द्वारा शिकार नृत्य किया जाता है, जिसे नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

गायन/लोकगीत :- छत्तीसगढ़ की लोकपरम्परा में लोकगीत भी अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। यहां अलग–अलग शुभ अवसरों पर अलग–अलग गीत गाये जाते हैं। दशहरा के समय ददरिया, करमा गायन, विवाह, मृत्यु, जन्म के समय विभिन्न लोकगीत, विवाह में भांवर गीत, जन्म में शुभ गायन तथा मृत्यु में एक जनजाति 'राऊत' के द्वारा बांसगीत गाया जाता है। भोजली गीत और गोदभराई के समय गाया जाने वाला सोहर गीत भी लोकगीतों की श्रृंखला में शामिल है। सावन में गाया जाने वाला सावनाही व फागुन में गाया जाने वाले फाग गीत तथा श्रीराम की चौपाईयों को भी विभिन्न शुभ अवसरों पर गाया जाता है। यहां छत्तीसगढ़ की भूमि को लोक परम्परा से गीतों द्वारा सुसज्जित किया गया है जिसमें छत्तीसगढ़ माता के लिए भी कई गीत गाए गये हैं।

विवाह पद्धति :- छत्तीसगढ़ की विभिन्न लोक परमपराओं में विवाह की भी एक प्रमुख परम्परा है। जहां विभिन्न जाति परंपरा के लोग विभिन्न प्रकार की विवाह पद्धति को अपनाए हुए हैं। छत्तीसगढ़ की परम्परा में कुछ विवाह इस प्रकार है, जो प्रमुख विवाह पद्धति के रूप में छत्तीसगढ़ की जनजातियों में प्रसिद्ध है।

परीक्षा विवाह - विवाह के पूर्व वर को वधु से विवाह हेतु परीक्षा देनी पड़ती है।

परिवीक्षा विवाह - विवाह के पूर्व वर कुछ समय के लिए परिवीक्षा के पद पर वधु के साथ जीवन व्यतीत करता है।

वधुमूल्य - वधु के परिवार को वरपक्ष द्वारा विवाह हेतु वधुमूल्य देना पड़ता है।

सेवा विवाह - इस विवाह में वर को वधु के घर विवाह के पूर्व सेवा दान करना होता है और कुछ समय बाद इनका विवाह होता है।

विनिमय / गुरावट - इस विवाह पद्धति में एक लड़का और उसकी बहन का विवाह दूसरे परिवार के भाई–बहन से होता है।

आपसी सहमति या भगेली विवाह - इस विवाह में लड़का–लड़की आपसी सहमति से भाग कर विवाह करते हैं।
तीर विवाह - लड़की का विवाह लड़के के घरवालों द्वारा भेजे तीर से किया जाता है।
पठवा विवाह - छत्तीसगढ़ की जनजाति में विवाह की एक पद्धति है।
हठ विवाह - लड़की हठपूर्वक लड़के के घर जाकर रहती है और कुछ समय बाद उनका विवाह कर दिया जाता है।
भांवर विवाह - इस विवाह में भांवर होते हैं जो सामान्यतः छत्तीसगढ़ की अधिकतर जनजातियों का विवाह स्वरूप है।
अपहरण विवाह - लड़के वालों द्वारा लड़की का अपहरण कर उससे विवाह किया जाता है, किन्तु कई वर्षों पहले इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, वर्तमान में यह एक रस्म के तौर पर निभाई जाती है।
लोक कथा :- तात्कालिक घटनाओं तथा अनुभवों का वार्तालाप शैली में निकट यथार्थ वर्णन करने वाली ऐसी घटनाएं जो अपनी कथावस्तु तथा कथन की कलात्मक शैली के कारण एक विशिष्ट साहित्यिक सौंदर्य प्राप्त कर लेती है, उन्हें लोककथा कहते हैं। ये कथाएं गद्यात्मक या पद्यात्मक हो सकती हैं। इसका रूप लोकगाथा या दंतकथा का हो सकता है। पूर्व के मानव ने अपने जीवन तथा अनुभूति का चित्रण कथाओं में किया है, दर्शन या सिद्धांत में नहीं।
त्योहार एवं पर्व :- छत्तीसगढ़ त्यौहारों की खुशियों में वर्षभर रमा रहता है। यहां बारहों माह त्यौहार मनाए जाते हैं, जिनमें कुछ प्रमुख त्यौहार हैं – नवरात्रि, हरेली, तीजा, पोला, दशहरा (बस्तर का प्रमुख त्यौहार है जिसमें लड़की की देवी रूप में पूजा की जाती है), होली, मातर देवारी (दिवाली), कार्तिक पूर्णिमा मड़ई इत्यादि।
व्यंजन एवं पकवान :- जहां पर्व होते हैं वहां विभिन्न व्यंजनों का स्थान भी महत्वपूर्ण है। हमारे छत्तीसगढ़ की विभिन्न परम्पराओं का एक हिस्सा यहां के पकवान भी हैं जिनमें – ठेठरी, खुरमी, देहरोरी, गुलगुला, चौसेला, अइरसा, भजिया, पपची, चीला, सोहारी, बरा, अंगाकर रोटी, तसमई खीर, लाटा, फरा, कुसली, बबरा, बिनसा, पेज, कटवा रोटी, मुठीया जैसे कई तरह के पकवान हमारी लोक परम्परा में शामिल हैं।
आभूषण :- यहां परम्परा अनुसार विभिन्न आभूषण भी पहने जाते हैं जिनमें –
गले के आभूषण - सूता, सिक्का, ताबीज, ढोलकी, सुर्रा, तितरी, पुतरी।
कमर के आभूषण - करधन, कौड़ी के आभूषण, संकरी, तिलरी।
नाक के आभूषण - नथ, फुल्ली, खिनवा, बुलाक, नथनी, बेसर।
कान के आभूषण - झूमका, खिनवा, करनफूल, बाला, लुरकी, खुंटी, ढार, तिरकी, फूल सकरी।
गोदना - चिरसंगीनी आभूषण होता है।
माथा का आभूषण - टिकली, मांगपट्टा।
छततीसगढ़ की धर्म संस्कृति - धर्म संस्कृति में विभिन्नता तथा विभिन्न संस्कृतियों में एकरूपता के कारण यहां सभी धर्मों की समरूपता देखने को मिलती है।

अतः हम कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ की लोक परम्परा लोक जीवन में प्रभावपूर्ण है।

मतदान में युवाओं की भागीदारी

मीनल नारद
एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

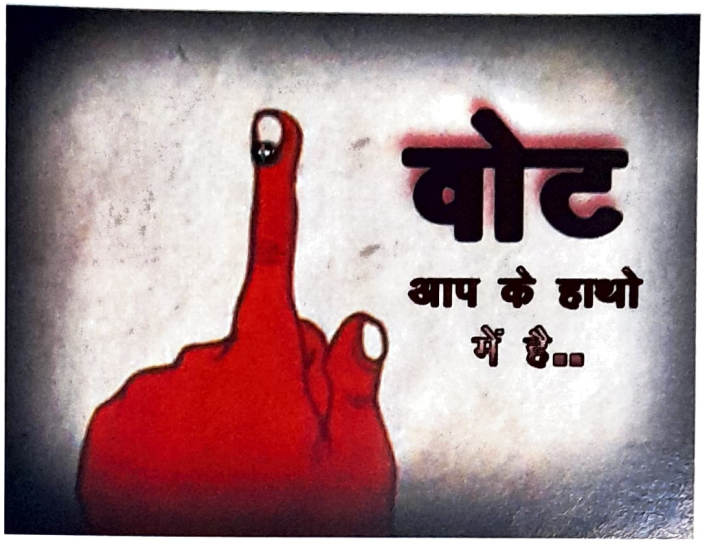

मतदान का शाब्दिक अर्थ है, 'मत का दान'। अर्थात् दान की गयी वस्तु पर दान देने वाले व्यक्ति का कोई अधिकार नहीं होता है जैसे – गौ दान, कन्यादान, रक्तदान। किंतु संवैधानिक अधिकार में मतदान का शाब्दिक अर्थ है कि मतदान निर्णय लेने या अपने विचार प्रकट करने की एक विधि है जिसके द्वारा कोई समूह विचार–विनिमय तथा बहस के बाद कोई निर्णय ले पाते हैं। मतदान की व्यवस्था के द्वारा किसी वर्ग या समाज का सदस्य अपने पसंद का प्रतिनिधि चुनने या किसी अधिकारी के निर्वाचन में अपनी इच्छा या किसी प्रस्ताव पर अपना निर्णय प्रकट करता है।

मतदान का इतिहास - 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' भारत में प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को मनाया जाता है। 'भारत निर्वाचन आयोग' का गठन 25 जनवरी 1950 को हुआ था। भारत सरकार ने राजनीतिक प्रक्रिया में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए निर्वाचन आयोग की स्थापना दिवस 25 जनवरी को वर्ष 2011 से राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाने की शुरूवात की थी। राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन सभी भारतवासियों को अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की याद दिलाता है और साथ ही यह भी बताता है कि हर व्यक्ति के लिए मतदान करना जरूरी है।

भारत में मतदान का स्वरूप - भारत की 50: से अधिक आबादी 35 साल की उम्र के नीचे है और इसका एक बड़ा हिस्सा 18 साल का पड़ाव पार कर रहा है। उन्हें जागरूक करना और लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें अपने अधिकारों और दायित्वों का एहसास कराना बहुत जरूरी है। इस तरह से हम मतदान के क्षेत्र में युवाओं की भागीदारी बढ़ा सकते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' रेडियो प्रसारण पर 2018 के भाषण में उन्होंने नए पात्र मतदाताओं का स्वागत किया, जो 1 जनवरी को 18 साल के हो गए। उन्होंने उन्हें 'न्यू इंडिया वोटर्स' कहा और उन्हें पंजीकृत होने का आग्रह किया।

मतदान में युवाओं की भागीदारी - एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के युवाओं का राजनीति की ओर तेजी से रूझान बढ़ रहा है। इसमें से बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की है जो राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं या निभाने की सोच रहे हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी की जीत में भी युवाओं की अहम भूमिका रही। आम आदमी पार्टी ने अपने अभियान में युवाओं को राजनीति से जुड़ने पर खासा जोर दिया था।

चुनाव में सोशल मीडिया की भूमिका काफी बढ़ चुकी है और इस मीडिया का सर्वाधिक इस्तेमाल भी युवा ही करते हैं। भारत में सोशल मीडिया का उपयोग करने वालों की संख्या बढ़ गई है। कई नेता ट्विटर पर सक्रिय होकर अपनी बात लोगों तक पहुंचा रहे हैं। सोशल साइटों पर युवाओं की सक्रियता के चलते चुनावी अभियान को काफी जोर मिला है।

किसी भी देश की आधारशिला उस देश में रह रहे नागरिकों की जागरूकता पर निर्भर करती है। भारत देश में आधे से अधिक आबादी युवा वर्ग की है। अतः देश के उज्ज्वल भविष्य की कामना उन्हीं युवा से की जाती है। युवा ही वह वर्ग है जिससे राष्ट्र निर्माण और नवनिर्माण का कार्य सौंपा जाता है क्योंकि बूढ़े और बच्चे इस कार्य को करने में असमर्थ पाये जाते हैं। ऐसे में युवाओं का यह कर्तव्य है कि वे सही सोच के साथ अपने मत का प्रयोग कर के अपने में से ही एक प्रतिनिधि के लिए सही चुनाव करें। युवा अवस्था में व्यक्ति वर्तमान को देखते हुए, अपने भविष्य के प्रति सतर्क होकर नवनिर्माण कर सकता है। अतः देश में युवाओं की आवश्यकता है या यों कहें कि देश के युवाओं से यह उम्मीद है कि वे अपने मत के अधिकार का प्रयोग कर देश को किसी सही उम्मीदवार के हाथ में सौंपे। अपने मत के अधिकार का प्रयोग न करके वे अपने साथ–साथ देश का भविष्य भी अंधकार में डाल रहे हैं।

भारत देश के प्रत्येक युवा नागरिक से यही उम्मीद की जाती है कि वे राष्ट्र को सर्वप्रथम रखकर अपने मत के अधिकार का प्रयोग करें ताकि आगे आने वाली पीढ़ी को एक सुयोग्य व सशक्त नेता मिले जो जनकल्याण के साथ–साथ राष्ट्रहित का भी विचार करें।

वन संरक्षण

पंकज कुरील
एम.एस.डब्ल्यू. (प्रथम सेमेस्टर)

हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई,
इहू मन तो जीउ हरे, जिनगानी के नींव हरे।
काबर बनगेव कसाई ?
हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई,

चिरई-चिरगुन के डेरा, चढ़ जाथे जब ये बेरा,
घाम सहै अउ देवै छांई
हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई।

झूमर-झूमर के नाचत पाना, सब ला सुनाव जी गाना,
नाचे लगथे बरखा माई,
हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई,
देख के रुख-राई हरियर, मोहा जथे करिया बादर,
नाचे लगथे बरखा बाई,
हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई,

धरती दाई ल दे बर सुख,
चलव लगावन जुल-मिल रुख,
जम्मो झन बहिनी-भाई,
हरियर-हरियर रुख राई, काबर काटत हव भाई।

उदारीकरण, कृषि संकट और प्रेमचंद

अभिषेक पांडे
एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर)

''खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि'' का समय भारतीय इतिहास के स्वर्णयुग का काल भी माना जाता है, जब भारतीय अर्थतंत्र, सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक प्रणाली अपनी सबसे सशक्त स्थिति में थी, तब भी भारत के एक जीवंत नगर, वाराणसी का एक कवि (तुलसीदास) यदि ऐसे उद्‌गार व्यक्त करते हैं तो यह स्पष्ट है, कि भारत में खेती और खेतिहर कमोबेश हर समय एक सी अवस्था में रहा है। कृषि लोगों की प्राथमिक जरूरत भले ही बनी रही, पर खेतिहर और खेती की स्थिति हमेशा दोयम दर्जे का काम तथा उपेक्षा वाला स्थान ही पाती रही है।

भारतीय संदर्भ में कृषि को तब भी उत्तम काम घोषित किया जाता था फिर कृषक विपन्नावस्था में किस प्रकार परिवर्तित हो गया, इसका एक लंबा इतिहास है, भारत में उत्तर मुगलों के काल में जागीरदारी संकट में व्याख्यायित करने की कोशिश की जाती है। यद्यपि यह भी सच है कि कृषि की तकनीक में परिवर्तन और विकासवादी दृष्टिकोण का अभाव एक महत्वपूर्ण तथ्य रहा है, जो पूर्णतः राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियों की उपज था। राजनीतिक अवस्था में परिवर्तन और विदेशी शासन का 'अनुपस्थित प्रभुसत्ता' वाला स्वरूप भारत में नौकरशाही एवं सैन्य तंत्र के ऐसे स्वरूप का विकास करने वाला था, जिसने भारतीय आर्थिक जीवन शक्ति को निचोड़ने भर में ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान ली।

भारतीय कृषि एवं 20वीं शताब्दी का दौर सीधे तौर पर कृषि को ही आर्थिक साधन के रूप में एकमात्र जरिया मानकर उसका पूरी तरह दोहन करने का इतिहास है। कुटीर उद्योगों के सुनियोजित विनाश के बाद भारत का वृहद कृषि तंत्र धीरे–धीरे अपना पूरा स्वरूप ही बदलता चला गया। इस बदलाव की पूरी प्रक्रिया पूर्व नियोजित एवं कड़े रूप में नियंत्रित थी। जितनी दक्षता के साथ 20वी शती में भारतीय कृषि का वाणिज्यीकरण किया गया, कृषि में एक सशक्त शासन समर्थक मध्यस्थ वर्ग का गठन किया गया। कृषि को पूरी तरह से वाणिज्योन्मुख बनाने के लिए कृषि–बिचौलिए वर्ग का सृजन किया गया, वह अंततः परिणामकारी रूप में कहें, तो भारत में श्रृंखलाबद्ध दुर्भिक्षों का कारण था। निगमनात्मक पद्धति से विश्लेषण करें तो 20वी शताब्दी ने भारतीय कृषि के चेहरे को ही बदल डाला। दुर्भिक्षों के कारण व्यापक जनहानि के बाद जनसंख्या वृद्धि का विस्फोटक स्वरूप लगभग प्रतिक्रियात्मक माना जा सकता है, जिससे कृषि विषयक मांग व पूर्ति की प्रक्रिया ही असंतुलित हो गई।

भारत में कृषि संकट का इतिहास कई मायनों में इतना पुराना नहीं जितना मार्क्सवादी व्याख्याओं में बताया जाता है। यह कृषि संकट द्वितीय साम्राज्यवादी चरण की देन थी जब औद्योगिक क्रांति की एक चरणबद्ध प्रक्रिया से यूरोप लगातार औद्योगिक होता जा रहा था। तीसरी दुनिया के देशों पर अधिकार और भारतीय उपमहाद्वीप में रेल्वे तथा नहरों पर निवेश एक भविष्यदर्शी प्रक्रिया थी, जिसका दूरगामी परिणाम होना था। इसी ने कृषि और अन्नदाता को एक स्थायी दुष्चक्र में धकेल दिया, यही कृषि–संकट 20वी शताब्दी के भारतीय साहित्य में किसी न किसी रूप में उग जाता है।

फकीर मोहन सेनापति के 'छमाड़ आठ गुंठ' और कतिपय बांग्ला उपन्यासकारों का कृषक जिस रूप में विपन्न है, वह पूरी तरह से व्यवस्था के दुष्चक्र से दबा कुचला है। प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों के तमाम कथानायक अवध के कृषक होते हुए भी पूरे भारतीय कृषि एवं कृषकों की अवस्था के प्रतिनिधि जान पड़ते हैं। ''पूस की रात'' कहानी का संदर्भ और ''गोदान'' का 'होरी' जितने प्रतिनिधि हैं, उतने ही व्याख्याता भी। साहित्य किसी न किसी रूप में अपने समाज की वास्तविकता का प्रतिनिधि होता है और वह साहित्य जो समाज को ही केन्द्र में रखता हो, जिसकी भूमिका और निष्कर्ष ही परिस्थितियों की पीड़ा के उद्वेग को लक्ष्य बनाते हो, वह केवल वर्तमान की पृष्ठभूमि और भविष्य के लिए संजीवनी होती है। प्रेमचन्द के 'गोदान' का कथानायक एक बार अपने पूरे अतीत का सिंहावलोकन करता है, तो पाता है कि जीवन की छोटी–से–छोटी इच्छा भी पूरी नहीं हुई। एक कृषक के लिए अपने द्वार पर गाय बांधने की लालसा कितनी स्वाभाविक–सी बात है, कथानायक वह लालसा भी पूरी नहीं कर पाता और त्रासद विडम्बना यह है कि, उसकी सान्निपातिक मृत्यु वाली अवस्था के समय कुछ पैसे से ही उसका गोदान पूरा होता है। अपने समग्र अर्थों में 'गोदान' और उसके कथानायक की जीवनी भारतीय कृषक जीवन की महागाथा बन जाती है। प्रेमचंद के दौर में औसत भारतीय जीवन में कृषि एवं कृषकों की भूमिका से अधिक प्रासंगिक रूप में और कोई कहानी भारतीय नागरिक के जीवन को अभिव्यक्त नहीं कर सकती।

60 के दशक की हरित क्रांति भारतीय कृषि के पहले नीतिगत विकास के प्रयत्न के रूप में देखी जानी चाहिए। यही वह समय था, जब भारतीय कृषि के संकट ने आर्थिक संकट से आगे बढ़कर सामरिक संकट और राष्ट्रीय अस्मिता के समक्ष बड़े यक्ष प्रश्न खड़े कर दिए थे। भारतीय नीति निर्माताओं के द्वारा प्रारंभिक कृषि तथा नीतिगत फैसलों पर विद्रूप और हास्यास्पद अदूरदर्शिता की छाया यहां भी जारी रही थी। कृषि में उन्नत बीजों के प्रयोग, बड़े बांधों और सिंचाई परियोजनाओं में भारी व्यय, रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग की प्रणाली कितनी सफल रही, यह आज भी विश्लेषण एवं तर्क का विषय है तब, जबकि एक बार की खाद्य समस्या के हल के बावजूद भारी व्यय, उर्वरकों के प्रयोग की निरंतरता और बांधों के निर्माण में पर्यावरणीय क्षय एक नयी समस्या के रूप में विकराल रूप धारण करने जा रही है। औद्योगिक विकास और कृषक की त्रासदी का संबंध कहीं न कहीं प्रेमचंद की दृष्टि में 'सेवासदन' से हो सम्भव हो चुका था। 20वी शती के अंतिम सालों में भूमंडलीकरण के नारे के बीच कृषि जिस रूप में चौराहे पर खड़ी दिखी, आज उसका बेगानापन कहीं अधिक बढ़ गया लगता है। प्रेमचंद कल जब दुर्भिक्षों की पीड़ित जनता की संतान के रूप में खड़े थे, जब 'गोदान' के होरी का चरित्र रच रहे थे, तभी उनकी दृष्टि गोबर के तरफ भी थी, जो दूसरे होरी के रूप में बदल रहा होता है, अपनी शाश्वत त्रासदी में गोबर नए कृषक के रूप में पुनः व्यवस्था के झंझावातों से जूझने के लिए तैयार हो रहा होता है। सेवासदन के सूरदास की झोपड़ी मिल लगाने के लिए तोड़ी जाती है वह भी बार–बार, लेकिन सूरदास बार–बार झोपड़ी बनाने को प्रतिबद्ध है। क्या आश्चर्य है, कि एक ओर कृषक औद्योगिक

व्यवस्था के समक्ष पुनः दो–दो हाथ करने के लिए और मरजाद की रक्षा के लिए अन्न पैदा करने को कृतसंकल्प हैं, तो दूसरी ओर औद्योगिक विस्तार का भूमंडलीकरण वाला संस्करण उसकी झोपड़ी तक हटा देने को तत्पर है, ताकि वहां बहुमंजिला प्रतिष्ठान खड़ा किया जा सके।

आज उदारीकरण के दौर में जब कृषि को संस्कृति से काटकर प्रौद्योगिकी के समानान्तर खड़ा करने का एक सुनियोजित दौर चल रहा है–कृषक की भूमिका सामान्य जनजीवन में क्या है ? और ऐतिहासिक नजरिए से उसे तथा समग्र भारतीय जीवन को किस रूप में बचाए रखा जा सकता है ? ये प्रश्न तब और भी महत्वपूर्ण है जब आधुनिकता की प्रतिक्रिया के ही रूप में मान लें, उत्तर–आधुनिकता संस्कृति सापेक्षता को महत्व देने लगी है। सेवासदन का सूरदास प्रौद्योगिकी के समक्ष भले ही अकेला खड़ा दिखाई देता हो, सच यही है कि अपने–अपने दायरे में 21वीं सदी के इस पहले दशक में करोड़ों सूरदास उदारीकरण के समक्ष कहीं–न–कहीं अपने अस्तित्व की रक्षा के जरिए पूरे जीवन मनोवृत्ति की रक्षा की जद्दोजहद में है। ठेके पर खेती, परंपरागत कृषि उत्पादों के पेटेंटीकरण से जुड़ी एकाधिकारी प्रवृत्ति और अब सेज की सेज पर बैठे कृषक अंतहीन दुष्चक्र के फंदे में है। राजनीति और भावुकता का कोई संबंध नहीं होता। पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद सभी वादों के बीच कृषक की अंतहीन समस्याएं शोषक बनाम शोषित की समस्या है। यदि 21वीं सदी के इन वर्षों में कृषक प्रौद्योगिकी के समक्ष अपनी कृषि भूमि को बचाने के लिए लाठी और गोली खाने को अभिशप्त हैं, तो निःसंदेह संकट कहीं से भी कम नहीं हुआ है, बस उसने अपना रूप भर परिवर्तित कर लिया है। विडम्बना तो यह है कि उस इतिहास के साहित्यिक आलेख की प्रेमचंदीय परंपरा का सूत्र आज टूट–बिखर सा गया है। संकट और संघर्ष तो शाश्वत हैं, पर उसके मार्मिक आलेख की परंपरा का टूटना कोई कम बड़ी त्रासदी नहीं है। संकट के संघर्ष के साथ इस परंपरा के सूत्र को भी जोड़ना एक अनिवार्य आवश्यकता है।

महफूज मुझे कर लेना

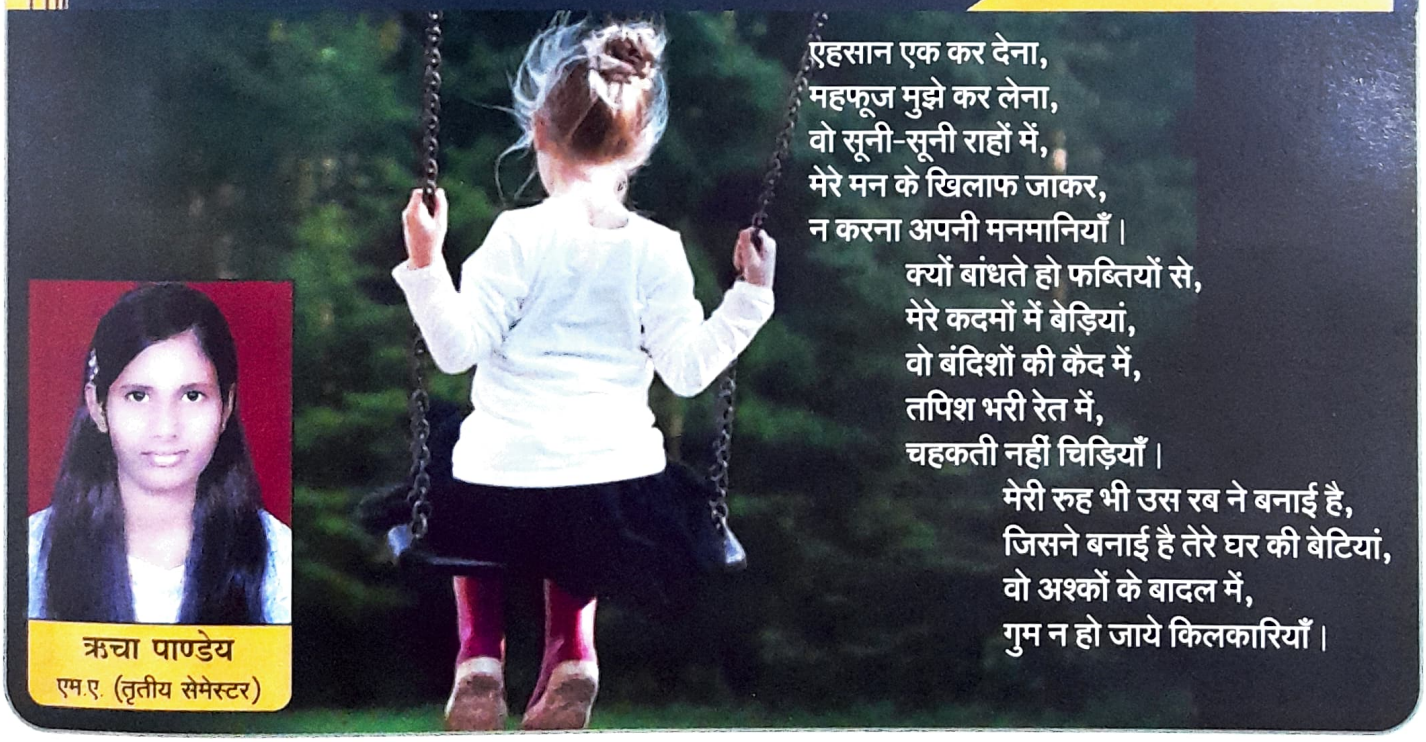

एहसान एक कर देना,
महफूज मुझे कर लेना,
वो सूनी-सूनी राहों में,
मेरे मन के खिलाफ जाकर,
न करना अपनी मनमानियाँ।

क्यों बांधते हो फब्तियों से,
मेरे कदमों में बेड़ियां,
वो बंदिशों की कैद में,
तपिश भरी रेत में,
चहकती नहीं चिड़ियाँ।

मेरी रूह भी उस रब ने बनाई है,
जिसने बनाई है तेरे घर की बेटियां,
वो अश्कों के बादल में,
गुम न हो जाये किलकारियाँ।

ऋचा पाण्डेय
एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर)

'पबजी अउ 'टीक-टोक'

खुमान साहू
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

जब ले ये प्ले स्टोर मं दू डेन्जर राक्षस 'पबजी' अउ 'टीक–टोक' ह कदम रखे हे तबले जम्मो लइकामन ह कॉपी–किताब में कम अउ मोबाइल मं जादा ध्यान देवत हे। नंदागे अब गिल्ली–डंडा, बाटी, भौंरा के जमाना ह, अब तो भइया इहीच म सब डूबे हावय। अइसे लगथे जइसे इही ह आज के खलनायक बनगे हे। कुछ दिन पहिली न्यूज पेपर मं पढ़ेंव कि एक झन आदमी ह अपन बेटा ल पबजी खेले बर मना का करदिस वोहा अपन मां–बाप ल मारेबर कुदाये लागिस। हे राम! घोर कलयुग आगे तइसे लागत हे। जेकर बात मानना चाही ओकरे ऊपर आज हाथ उठावत हे। पढ़ईया लईकामन परीक्षा के तैयारी करेबर छोड़ के टिक–टोक म 'हीरो' बनत हे। देख तोर संसार के हालत का होगे भगवान कतका बदल गेहे इंसान .... । आज मोबाइल ल तो स्मार्ट फोन कहे जाथे, लेकिन शायद कहीं न कहीं आज हमन एखर गलत उपयोग करत हन। पबजी के अविस्कार करइया 'ब्रेन्डन ग्रीन' ह घलो उदास होही। संस्कृत म कहे जाथे कि ''अति सर्वत्र वर्जयेत'' अर्थात् अधिकता हर चीज के हानिकारक होथे। मोबाइल के यूज करना कोई गलत बात नइहे मगर अतका भी मस्तमगन नइ होना चाही कि ओहा हमर बर काल बन जाए।

जय हिन्द!

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

भास्कर देबनाथ
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

हमें नौ माह अपने गर्भ में रखकर इस सुंदर पावन–पुनीत धरा पर लाने वाली हमारी मां है। जन्म के पश्चात् हम पूर्णरूपेण अपनी जन्मभूमि धरा पर पोषण–आहार, निवास के लिए निर्भर हो जाते हैं। अतः जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान कहना अतिशयोक्ति न होगी।

उक्त श्लोक को पढ़ने से हमारी रामायण कालीन स्मृति जाग्रत हो जाती है। जब लक्ष्मण के द्वारा लंका पर अधिकार के आग्रह पर राम ने लक्ष्मण से कहा था – ''हे लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की बनी हुई है, फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है।''

हममें से बहुत कम लोगों को यह ज्ञात है कि वाल्मीकि रामायण की पांडुलिपि से प्राप्त यह श्लोक नेपाल का राष्ट्रीय ध्येय वाक्य है।

मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम की भावना हमें जापान के एक प्रसंग से ज्ञात होती है। विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर उन दिनों जापान प्रवास पर थे। वहां एक विद्यालयीन कार्यक्रम में उन्होंने बच्चों से प्रश्न

किया – "तुम किस धर्म को मानते हो?" उत्तर मिला – "बौद्ध धर्म।"

"क्या तुम जानते हो बौद्ध धर्म प्रणेता महात्मा बुद्ध का जन्म भारत में हुआ था।"

"जी हां जानते हैं।" सहज ही उत्तर प्राप्त हुआ।

रवींद्रनाथ ठाकुर जी ने आगे एक पेचीदा प्रश्न किया – "कल्पना करो कि महात्मा बुद्ध सेना का नेतृत्व कर, तुम्हारे देश जापान पर आक्रमण कर दे, तो तुम क्या करोगे?"

एक बालक फुर्ती के साथ खड़ा हुआ और रोष के साथ उत्तर दिया – "हम बुद्ध का सामना करेंगे।"

गुरूदेव यह उत्तर सुनकर बालकों में जापान का उज्ज्वल भविष्य देख रहे थे और उनका मस्तक उनकी देशभक्ति के सम्मुख झुक रहा था।

यह प्रसंग हम भारतीयों के लिए भी प्रेरणादायक है।

उठो जवान देश के, वसुंधरा पुकारती,
देश है पुकारता, पुकारती मां भारती।

छत्तीसगढ़हिन महतारी

नितेश नागवंशी
बी. कॉम. (प्रथम वर्ष)

मोर छत्तीसगढ़हिन महतारी कतको ल जियाय हे,
सोनहा माटी के थरहा लेके धनहा ल उपजाय हे,

मोर छत्तीसगढ़हिन महतारी कतको ल जियाय हे,
परसा पाना के डोंगरी म लाली फूल महमाय हे,

कलमी आमा के डारा अमराहि म हरियाय हे,
बइठके पड़की पुलकैना गुरतुर गोठ सुनाय हे,

पिपराहि के रद्दा सुघ्घर तरि म जरी लमाय हे,
मोर छत्तीसगढ़हिन महतारी कतको ल जियाय हे,

गंगा जइसे महानदी के सुघ्घर कछिनी फरियाय हे,
चारो जुग के गाथा ल लेके छत्तीस देवता अमाय हे,

तोर सुरूज करे बखानी चन्दा घलो गाय हे,
मोर छत्तीसगढ़हिन महतारी कतको ल जियाय हे।

छत्तीसगढ़ महतारी

मेरा हिन्दुस्तान

तारकेश्वर वर्मा
एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

सुबह की सुर्ख लाली से खिलता आसमान है,
सुनहरी धूप सरगम गाती महकती हर शाम है,
हर फूल खुशबू से भरा, पत्तों पे नूर बरसा है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

ग्रीष्म में सोने सा चमकता कण-कण,
सावन की बूंदों में खुशी से झूमता मन,
सर्दियों की रातों में चलती हवाएं ठंडी,
थके मन में उत्साह भरती मंदिर की घंटी,
रुह को सुकून देती मस्जिद की अजान है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

मिट्टी में है उर्वरा शक्ति सोना उगाने वाली,
शीतल हवा चलाती जंगल की हरियाली,
भारत का सौंदर्य है ऊंचे-ऊंचे पर्वत-पठार,
लोगों को जीवन देती गंगा यमुना की धार,
जहां बर्फिला कश्मीर तो रेतीला राजस्थान है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

लाल जोड़े में घुंघट ओढ़े दुल्हन है,
काला सफेद सब रंगों का संगम है,
कोई झूम रहा पहन के धोती-कुर्ता,
कोई घूम रहा बाजार में पहन के बुर्का,
धोती, टोपी, पगड़ी, सूट सब एक समान है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

मोहब्बत का पाठ पढ़ाती हिन्दी उर्दू,
लोगों को जीना सिखाती तमिल तेलुगु,
शौर्य का परचम लहराती पंजाबी मराठी,
कानों में मिश्री घोलती बंगला गुजराती,
सब भाषा में झलकती प्रेम की जुबान है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

सरहदों को पार कर चलती सिंधु भी,
मस्जिदों में सर झुकाता हिन्दू भी,
यहां दिवाली मनाता हर मुसलमान है,
देश की रक्षा को सीमा पर जवान है,
सबका पेट भरने अन्न उगाता किसान है,
रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मेरा हिन्दुस्तान है।

सुनव रे संगवारी

अमन जांगड़े
बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)

आथे देवारी सुनव-सुनव रे संगवारी
बार के दियना भगाबोन अंधियारी
रंग जाबोन फागुन के रंग मा
बइरी दुश्मन के मिटाबोन बीमारी
सावन के महिना फुले हे चिरईया
करम-धरम के फूलथे फुलवारी
पाबे कहां अइरसा ठेठरी के सवाद ला
अउ पाबे कहां बरा सोहारी
इहि ल कइथे धान के कटोरा
अउ इहि ल कइथे 'छत्तीसगढ़ महतारी'।

दारु गांजा ला पीये

लीलाधर निषाद
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

दारु गांजा ला पीये तोर तन होगे गा मरहा,
राहर काड़ी कस सितांगी दिखे दांत होगे गा सरहा।
धान चाऊंर ला बेच-बेच के फूके गा पैनामा,
कोरी सरिखा लोग लइका पोसबे गा कामा।
लुटुर-लुटुर कुकुर कस घूमे रे बड़बड़हा,
आघू पाछू घुमही संगी, वो हा भट्ठी के जात ले,
धुर्रा माटी चिखला मा बोजाये रथे बधिया कस अलकरहा।
कैंसर, टी. बी. मा मरबे संगी आही अड़बड़ खांसी,
रायपुर, धमतरी मा तोला घुमाही मन होही उदासी।
नशाबाजी ला छोड़व संगी बाड़ही जन अउ धन हा,
किरिया खा लव सबो भाई मन गांजा, अफीम, चरस,
इही पइसा के लइका ला पढ़ाबो अउ जीबो कई बरस।
निषाद भाई के बात ला मानौ झन बनहू बेलबेलहा,
दारु गांजा ला पीये तोर तन होगे गा मरहा।

किसान

दिव्या वर्मा
एम.ए. - तृतीय सेमेस्टर

मय किसान के लइका रोवत हंव,
बूड़े हव करजा म छूटे बर तरसत हंव।
आंखी ले आंसू बोहावत हे, बरसत हे पानी,
दाई, ददा, संगी जहुंरिया, मन रोवत हे,
सुन के मोर कहानी,
आगे हे बरसात, नई बरसत हे पानी,
देखत हे किसान, करे बर किसानी।
धुर्रा उड़त हे खेत म,
किसान मुड़ी धरे बइठे हे मेड़ म,
कोनो काल धान खेत मं छिताये,
तेहुला चिरई मन नई बचाय,
जइसे-तइसे खेत म धान बोआये,
खेत मा करगा कांदी कचरा पटाये,
धान कम कचरा जादा पाये,
सब कोती ले किसान लुलवाये।

सबो किसान छोड़ दिही किसानी,
त कइसे चलही सबके जिंदगानी,
कोनो येला नई सोचत हे,
सबो कोती ले किसान ल धरके दबोचत हे।

छत्तीसगढ़ी संस्कृति

किशन यदु
बी. कॉम. (प्रथम वर्ष)

हमर छत्तीसगढ़ी संगवारी, येही हमर चिन्हारी,
करमा, सुवा, ददरिया, फागगीत, सब अब्बड़ गुनगारी।
झन भुलाओ संगवारी, गिल्ली-डंडा अउ गेड़ी,
सब मिल के खुब खेलो, नदिया-बईला अउ फुगड़ी।
सीखो हिन्दी, अंग्रेजी लेकिन मत छोड़ो छत्तीसगढ़ी,
अमेरिका खुद कहात हे, श्रेष्ठ हे छत्तीसगढ़ के बासी,
जेन ला खाने वाला आज छत्तीसगढ़ म कहात हे देहाती।
अरे छोड़ ये अंग्रेजी दिखावा, अउ गर्व कर अपन संस्कृति म,
दुनिया भर म अनोखा हे, हमर छत्तीसगढ़ी संस्कृति।
झन बेच अपन खेती-खार, अउ छोड़ दे दारु-महुआ,
मेहनत कर अउ धान ल उपजा ले,
छत्तीसगढ़ महतारी के किसान बेटा तैं कहला ले।
अनोखा हे छत्तीसगढ़ी संस्कृति एखर गुन तैं गा ले।

छत्तीसगढ़िया संगी

कुन्दन सिंह खुटे
बी.एस-सी. (द्वितीय वर्ष)

छततीसगढ़ के छत्तीसगढ़िया संगी,
रहिथन जुर-मिल के मन रंगी,
छत्तीसगढ़िया बोली हमर राजभाषा,
गोठियाथन गुरतुर मन साझा,
कोनो मारे ताना त कोनो करे दुलार,
चल न चल संगी जाबो रे बजार,
खाबो मिरची के भजिया पेट भर,
रहिथन जुर-मिल के मनरंगी,
छततीसगढ़ के छत्तीसगढ़िया संगी।
जब आथे तिहार के महिना,
डुबे रहिथे खुशी म आये रहिथे पहुना,
पानी पसिया ओला पियाथे,
मया पिरीत अऊ सुख-दुख के गोठ गोठियाथे,
तीजा-पोरा, हरेली अऊ देवारी के,
माते रहिथे तिहार,
भजिया, बरा, ठेठरी, खुरमी अऊ
मुठिया रोटी हे तइयार,
अड़बड़ मिठाथे कांदा,
अऊ सुहाथे मखना के साग,
चारों डहार बगरे हे खुशहाली,
मया पिरीत के उजयाली,
अब कतेक ल गोठियावंव रे मनरंगी,
छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़िया संगी।

मंजिल मिलेगी कल

गुरूवंत चन्द्रा
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

अतीत को तू याद न कर,
न तू भविष्य का स्वप्न देख,
वर्तमान की राह पर चलता चल,
मन में तूने जो संकल्प लिया,
अवश्य ही मंजिल मिलेगी कल।

जीत की तू न सोच,
न हार की परवाह कर,
अति उत्तम कर, आगे बढ़,
मन में तूने जो संकल्प लिया,
अवश्य ही मंजिल मिलेगी कल।

समय का तू आदर कर,
हर्षित हो अपना कार्य कर,
न बुराई में अपना समय बिता,
मन में तूने जो संकल्प लिया,
अवश्य ही मंजिल मिलेगी कल।

जीवन में तू अच्छे संकल्प कर,
खुद की प्रतिभा की खोज कर,
अच्छे कर्मो से जीवन को परिपूर्ण कर,
अभाव का मत ध्यान कर,
मन में तूने जो संकल्प लिया,
अवश्य ही मंजिल मिलेगी कल।

अंत में वह फिर हार गई

प्रतीक कुमार चतुर्वेदी
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

इतनी जद्दोजहद इतना संघर्ष,
खुद के लिए लड़ने-भिड़ने,
दौड़ती रही, वह दौड़ती है,
थाने के चक्कर काटती है, कि
कहीं कोई इंसाफ मिल जाय,
मेरे दोषियों को सजा मिल जाय,
शायद उसे यकीन था कानून पर,
कि उसे न्याय दिला पायेंगे हम सब,
शायद वह अकेली थी, यहां लड़ी-भिड़ी
और अंत में फिर हार गई ...
उसके शरीर को जला दिया गया,
वह भागती रही, चीखती रही, चिल्लाती रही,
उसे यकीन था, कि कोई आकर बचायेगा,
क्या वहां सब उसके दुश्मन बन बैठे थे ?
तभी तो कोई नही आया बचाने को,
जली हालत में फोन लगाती है,
अस्पताल से पुनः अस्पताल वह,
अंत में दिल्ली लायी जाती है,
ये कुछ घण्टे बहुत अहम है उसके लिए,
कोशिशों के बावजूद वह नहीं बच पाती है,
जिंदगी और मौत के बीच लड़ते-लड़ते,
अंत में वह फिर हार जाती है ...
पहली बार हारी जब दुष्कर्म हुआ,
दूसरी बार हारी जब एक्सीडेंट हुआ,
तीसरी बार जब उसे जलाया गया,
चौथी बार जब रिपोर्ट नहीं लिखी गई,
इतना हार के हर कोई टूट जाता है,
पर वह हिम्मती थी और लड़ती रही,
शायद उसे यकीन था, कि इंसाफ होगा,
पर यहां तो सबके आंखों में पट्टी बंधी है,
लाचारी, निराशा, अकर्मण्यता है बनी हुई,
कहीं यह पूर्णकालिक भाव न बन जाये,
इंसाफ मिले, सबको मिले और जल्द मिले,
कोशिश हो कि नया इतिहास बन जाये,
इसीलिए स्वयं एवं औरों के हित,
जीवनपर्यंत वह लड़ती रही,
परंतु अंत में वह हार गई ...

मेरी गणतंत्र दिवस कैम्प यात्रा

CDT.CPT. नागेश्वर साहू
बी.एस-सी. (द्वितीय)

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में कैम्प के लिए मेरा चयन हुआ और इस चयन का पता तब चला जब मैं कोडार जलाशय कैम्प में था। नवम्बर महीने में मैं और मेरे दो अन्य साथी (पी.ओ. कैडेट अमित सिंह चौहान और दामिनी पटेल) के साथ मैं भोपाल पहुंचा। जहां डी–कैट–द्वितीय कैम्प में शिप मॉडलिंग प्रतियोगिता होनी थी। प्रतियोगिता में चार ग्रुप ने भाग लिया–रायपुर ग्रुप, भोपाल ग्रुप, ग्वालियर ग्रुप और जबलपुर ग्रुप। प्रतियोगिता के दौरान हमें 48 घण्टे में स्टेटिक मॉडल बनाकर तैयार करके उसे चलाकर भी दिखाना था। इसके लिए 48 घण्टे का सीमित समय हमें मिला था। जो आसान नहीं था। मैं और मेरी टीम ने मिलकर 48 घण्टे में आई. एन. एस. चेन्नई शिप तैयार की फिर ट्रायल किया, ट्रायल के दौरान हमें अपने मॉडल में कुछ फॉल्ट मिला जिसे हमने सॉल्व किया। उसके बाद फिर से मॉडल तैयार करके उसे प्रतियोगिता के लिए पूर्णरूप से तैयार किया। कॉम्पीटीशन में भाग लेने के लिए हमें 1 एम. पी. नेवल युनिट, भोपाल ले जाया गया। जहां पर सुचारू रूप से प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में जज के रूप में भोपाल ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर महोदय उपस्थित थे। जो हमारे मॉडल के प्रदर्शन को देखकर बहुत खुश हुए और अत्यधिक खुशी तब मिली जब हमने अपना प्रदर्शन और भी अच्छे तरीके से किया। अब समय रह गया था परिणाम का। परिणाम आने तक चारों ग्रुप की टीम इंतजार कर रही थी। परिणाम में रनर अप टीम भोपाल और विनर रायपुर टीम रही। इसी खुशी के साथ मैं और मेरी टीम वापस आये।

रायपुर आने के कुछ दिन पश्चात् युनिट से कॉल आया। मुझे बहुत बधाइयां मिली और कहा गया दिल्ली गणतंत्र दिवस परेड में अगले चरण के लिए आपका नाम आया है। फिर दिसम्बर के माह में प्री–आर. डी. कैम्प का आयोजन हुआ। जिसमें मैं अपनी टीम से अकेला चयनित हुआ था। बाकी दो साथी नहीं आ पाये, इस बात का मुझे खेद रहा। प्री आर. डी. कैम्प में शेड्युल सेट था। वहां जाकर मुझे मार्च पास्ट (ड्रील) भी सिखाया गया। ताकि प्रधानमंत्री रैली में पार्टीसिपेट कर सकूं। प्री आर. डी. कैम्प में पुराने और नये दोस्त भी मिले। जो डी.–कैट–द्वितीय में मेरे साथ थे। दिसम्बर का महीना, ठंड तो मानो शुरू होकर बीच में जा पहुंची थी। हम सभी कैडेटों को किटिंग दिया गया। जिसमें सिर से लेकर पांव तक हर सामान पहनने व रखने को दिया गया, जो दिल्ली की ठंड से हमें बचा सके। किटिंग होने के पश्चात् हमें दिल्ली के लिए रवाना किया गया।

दिल्ली जाने के लिए हबीबगंज रेल्वे स्टेशन से दिनांक 31/12/2018 को भोपाल एक्सप्रेस से हमारी टिकट कराई गई। जिसमें एस.डी. एस.डब्ल्यू. जे.डी. जे.डब्ल्यू. आदि सारे कैडेट्स भी मिले थे। 1 एम. पी. नेवल यूनिट कमांडिंग ऑफीसर कमांडर गोखले मैडम भी हमें स्टेशन तक छोड़ने आई थी। अगली सुबह जब हमने आंखें खोली तो सुबह के 4 बज रहे थे। हम रूटीन के सारे काम खत्म कर अपने स्टेशन का इंतजार कर रहे थे। जहां से हमें डी.जी. एन.सी.सी. कैण्ट एरिया ले जाना था। हम सब कैडेट उस्तादों के साथ हजरत निजामुद्दीन रेल्वे स्टेशन पहुंचे, जहां पर सेना के जवान हमें ले जाने के लिए आये हुए थे। हम दिल्ली आर्मी कैण्ट पहुंचे जो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के ठीक बाजू में लगा हुआ था। पहुंचते ही हमारे समान की जांच

पड़ताल की गई। हमें ठहरने के लिए बैरक दिया गया। वहां हर एक निदेशालय के लिए अलग–अलग भव निर्मित थे।

वहां पर समय–सारिणी के अनुसार ही चलना पड़ता था। दिल्ली की ठंड अधिकतर 10℃ से कम रहती थी। अगले दिन हमें निर्देश मिले। सब अपनी–अपनी प्रतिस्पर्धा की तैयारी करने लगे। हमें भी प्रतिस्प के बारे में बताया गया। जिसके अनुसार हमें कार्य करना था। रिपोर्टिंग टाइम, तिथि, स्थान आदि की सा जानकारियाँ हमें दे दी गई थीं। प्रतिस्पर्धा का आगाज भी हो चुका था। प्रतिस्पर्धा लगभग 15 दिनों तक रही हमें प्रतिदिन 2–3 घंटे का समय दिया जाता था। उस दौरान हम अपना काम करते थे और थोड़ा मनोरंज भी कर लेते थे। प्रतियोगिता भी मजेदार रही। अब बाकी रह गया था परिणाम! जिसके आने का सबको बेस से इंतजार था। तब तक हमें प्रधानमंत्री की रैली में शामिल होने के लिए तैयार किया गया। इस बीच ह सम्माननीय गणमान्य अतिथियों से भी रूबरू होने का मौका मिला जैसे – सम्माननीय रक्षा मंत्री, दिल्ली मुख्यमंत्री, उपराष्ट्रपति, थल सेना अध्यक्ष, जनरल बिपिन रावत, VSM, UVSM, PSM, SM, वायुसेना अध्य एयर चीफ मार्शल बिरेन्द्र सिंह धनोआ SM, VSM, USM, BAR व नौसेना अध्यक्ष एडमिरल सुनील लाम्ब स VSM, SM, USM, PVSM और साथ ही प्रधानमंत्री महोदय से भी मुलाकात हुई। इन सभी गण अतिथियों के साथ चाय पार्टी हुई व इनके घरों से भी हमें आमंत्रण मिला। महामहिम राष्ट्रपति श्री रामन कोविंद जी से मिलने का भी हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी प्रकार दिल्ली घूमने का मौका मिला, दिल्ली दर्श कराया गया।

इसके बाद हम भोपाल वापस आये, जहां पर हमें माननीय राज्यपाल महोदया श्रीमती आनंदीबेन पटे के निवास में आमंत्रित किया गया। वहां हमें सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् हम सब अपने–अपने शहरों लिए रवाना हुए। अंत में मैं और मेरे सारे साथी रायपुर वापस आये। जहां पर हमें पुनः सम्मानित किया ग और फिर मुझे अवार्ड भी मिला जो कि सर्वोच्च सम्मान के रूप में मुख्यमंत्री के हाथों 'सर्वश्रेष्ठ कैडेट' के रू मिला।

इस प्रकार दिल्ली की गणतंत्र दिवस कैम्प यात्रा का हर पल यादगार रहा।

आओ खुलकर जीते हैं

दीपक कुमार साहू
एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

आओ खुलकर जीते हैं
जीने का आनंद लेते हैं,
जीवन हमको उपहार मिला,
परमेश्वर का उपकार मिला,
आओ खुलकर जीते हैं
जीने का आनंद लेते हैं।
आत्महीनता का त्याग करें,
स्वयं से भी प्यार करें,
दूसरों का न उपहास करें,
दृढ़ता से विश्वास करें,
आओ खुलकर जीते हैं
जीने का आनंद लेते हैं।
अवसादों का त्याग करें,
समस्याओं को मात करें,
कल्पनाओं को पुष्ट करें,
सृजनता का रुख करें,
आओ खुलकर जीते हैं
जीने का आनंद लेते हैं।

श्रीनिवास रामानुजन का गणित के क्षेत्र में योगदान

निखिलेश मुकुटवार
बी.कॉम. (अंतिम वर्ष)

परिचय - भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 को मद्रास, भारत में हुआ। सौफी जर्मिन की तरह उन्हें गणित में कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली लेकिन उन्होंने गणित के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में गिना जाता है। उन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी उन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने गणित के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण प्रयोग किये जो आज भी उपयोग किये जाते हैं। उनके प्रयोगों को उस समय जल्द ही भारतीय गणितज्ञों ने मान्यता दे दी थी।

गणित के क्षेत्र में योगदान - श्रीनिवास रामानुजन इंयगर एक महान भारतीय गणितज्ञ थे क्योंकि जब वह केवल 13 वर्ष के थे तभी उन्होंने एस. एल. लोनी द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध ट्रिग्नोमेट्री की किताब को हल कर डाला था। इतना ही नहीं मात्र 15 वर्ष में उन्हें जॉर्ज सूरजकार द्वारा रचित एक प्रसिद्ध पुस्तक "साइनोपोसिस ऑफ एलिमेंट्री रिजल्टस इन प्योर एंड अप्लाइड मैथमेटिक्स" प्राप्त हुई। इस पुस्तक में लगभग 6000 संकलन थे। उन्होंने इन सभी को सिद्ध करके देखा और उन्हीं के आधार पर कुछ नियम भी विकसित किये। इन्होंने गणित के सहज ज्ञान और बीजगणित प्रकलन की अद्वितीय प्रतिभा के बल पर बहुत से मौलिक और अपारंपरिक परिणाम निकाले जिनसे प्रेरित होकर आज तक शोध हो रहे हैं। हाल ही में इनके सूत्रों को क्रिस्टल विज्ञान में प्रयुक्त किया गया है।

रामानुजन ने इंग्लैण्ड में पांच वर्षों तक मुख्यतः संख्या सिद्धांत के क्षेत्र में काम किया।

प्रसिद्ध सिद्धांत -

लैडॉ - रामानुजन स्थिरांक
रामानुजन थीटा फल
रामानुजन अभाज्य
रामानुजन योग
रामानुजन - सोल्डनर स्थिरांक
रॉजर्स - रामानुजन तत्सम्यक
कृत्रिम थीटा फलन

इन सब के अलावा श्रीनिवास रामानुजन ने 1902 में घनाकार समीकरणों को आसानी से हल करने उपाय भी बताए। उसी साल उन्होंने जाना कि क्वार्टीक (Quartic) को रेडिकल (Radicals) की सहायता से ह नहीं किया जा सकता है और भी कई गणितीय बातों का श्रीनिवासन रामानुजन जी ने शोध किया जिसक प्रयोग आज भी किया जाता है।

निष्कर्ष :- महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की मृत्यु सन् 1920 में हुई जबकि वे मात्र 33 वर्ष थे। श्रीनिवास रामानुजन ऐसे महान पुरूषों में से एक थे, जिनके पास न तो धन था और न ही को सुख–सुविधा परंतु अपने ज्ञान से उन्होंने विश्व के महानतम गणितज्ञों को आश्चर्यचकित कर दिया। आ भ उनके गणितीय सूत्र अनुसंधान के लिए आलोक स्तंभ हैं।

गांधी जी और आदर्श राज्य

दीपक कुमार साहू
एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

गांधीजी ने प्लेटो के समान ही दो आदर्शों का वर्णन किया है। प्रथम पूर्ण आदर्श जिसे वे रामराज्य कहते हैं और द्वितीय उप–आदर्श जिसे वे अहिंसात्मक समाज कहकर पुकारते हैं। उनके पूर्ण आदर्श सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य के लिए कोई स्थान नहीं। वे राज्यविहिन समाज की स्थापना करना चाहते थे। इसमें सब व्यक्ति सामाजिक जीवन का स्वयमेव अपनी इच्छा से नियमन करते हैं। मनुष्यों का इतना अधिक विकास हो जाता है कि वे अपने कर्तव्यों और नियमों का स्वेच्छापूर्वक पालन करें। लेकिन गांधीजी यथार्थवादी थे और उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि मानव स्वभाव की वर्तमान स्थिति को देखते हुए पूर्ण आदर्श की स्थापना संभव नहीं है। इसलिए उनके द्वारा व्यावहारिक दृष्टिकोण से उप– आदर्श की कल्पना की गई है। उनके उप–आदर्श राज्य (अहिंसात्मक समाज) की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :–

उप-आदर्श राज्य की विशेषताएं -

1. **अहिंसात्मक समाज** - गांधी जी अपने आदर्श राज्य को अहिंसात्मक समाज के नाम से भी पुकारते हैं। गांधी जी के इस आदर्श समाज में राज्य संस्था का अस्तित्व रहेगा और पुलिस, जेल, सेना, न्यायालय आदि शासन की बाध्यकारी सत्ताएं भी होगी। फिर भी यह इस दृष्टि से अहिंसक समाज है कि इसमें इन सत्ताओं का प्रयोग जनता को आतंकित और उत्पीड़ित करने के लिए नहीं वरन् उसकी सेवा करने के लिए किया जायेगा। इस आदर्श समाज में कभी–कभी समाज विरोधी तत्वों के विरूद्ध दबाव का प्रयोग करना पड़ सकता है किन्तु इस दबाव का रूप सत्याग्रह का होगा हिंसात्मक नहीं।
2. **शासन का लोकतांत्रिक स्वरूप** - गांधी जी के आदर्श समाज में शासन का रूप पूर्णतया लोकतांत्रिक होगा। जनता को न केवल मत देने का अधिकार होगा वरन् जनता सक्रिय रूप से शासन के संचालन में भी भाग लेगी। शासन सत्ता सीमित होगी और सभी संभव रूपों में जनता के प्रति उत्तरदायी होगी।

3. **नागरिक अधिकारों पर आधारित** - गांधी जी का आदर्श समाज स्वतंत्रता समानता तथा अन्य नागरिक अधिकारों पर आधारित होगा। इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपना विचार व्यक्त करने और समुदायों के निर्माण की स्वतंत्रता होगी। इस समाज के अंतर्गत जाति, धर्म, भाषा, वर्ण और लिंग आदि भेदभाव के बिना सभी व्यक्तियों को समान सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त होंगे।
4. **प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रम अनिवार्य** - इस आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने भरण–पोषण हेतु श्रम करना अनिवार्य होगा। कोई भी मनुष्य अपने निर्वाह के लिए दूसरों की कमाई हड़पने का प्रयत्न नहीं करेगा और बौद्धिक श्रम करने वाले व्यक्तियों के लिए भी थोड़ा बहुत शारीरिक श्रम करना अनिवार्य होगा। सभी व्यक्तियों के द्वारा कुछ न कुछ शारीरिक श्रम किये जाने पर समाज में वास्तविक समानता स्थापित हो सकेगी।
5. **अस्पृश्यता का अंत** - गांधी जी अस्पृश्यता को भारतीय समाज के लिए कलंक मानते थे और उनके आदर्श समाज में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं था।
6. **धर्म निरपेक्ष समाज** - इस समाज में किसी एक विशेष धर्म को राज्य का आश्रय प्राप्त नहीं होगा। राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान होंगे और सभी धर्मों के अनुयायियों को समान सुविधाएं प्राप्त होगी।
7. **गोवध निषेध** - गांधी जी भारत जैसे राष्ट्र में धार्मिक तथा आर्थिक दोनों ही दृष्टि से गाय की रक्षा को बहुत अधिक आवश्यक मानते थे। इसलिए उनके द्वारा अपने आदर्श समाज में गौ हत्या का निषेध किया गया है।
8. **मद्य निषेध** - गांधी जी का निश्चित विचार था कि मद्य और मादक पदार्थों का प्रयोग व्यक्तियों का चारित्रिक पतन करता है। अतः उनके द्वारा अपने आदर्श समाज में मद्य पदार्थों का निषेध किया गया है।

राष्ट्रपिता
महात्मा गांधी

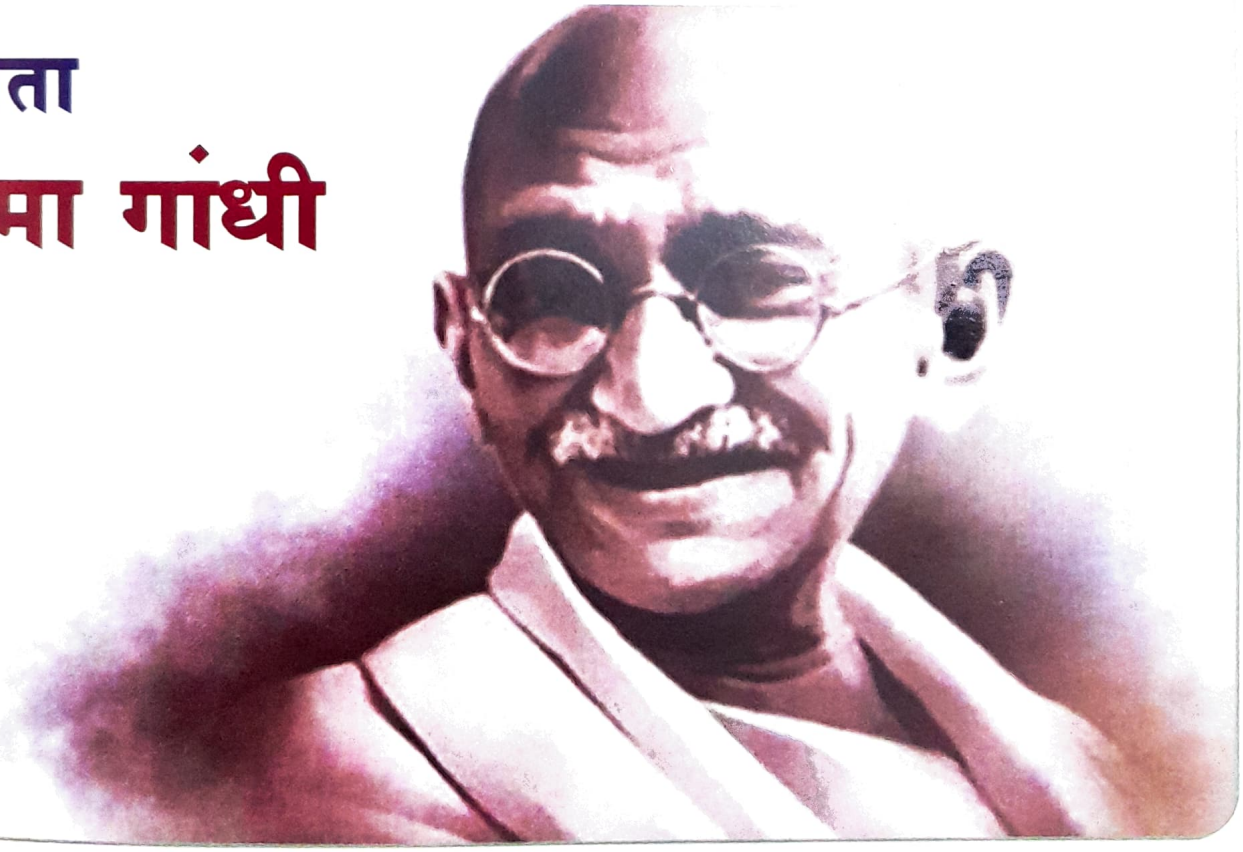

संघर्ष

परमेश्वर घिवेलिया
एम.ए. (अर्थशास्त्र)

यह सत्य है कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां संघर्ष न करना पड़े। सभी जीव जंतु अपनी उन्नति व विकास के लिए संघर्ष करते हैं। उनमें मनुष्य भी एक जीव है जो प्रतिदिन संघर्ष करता है। वह अपनी कड़ी मेहनत व संघर्ष से नये–नये आविष्कार, नई उन्नति व नई दिशा की खोज करता है। यह सभी के हिस्से में आता है, पर सभी संघर्ष का सामना नहीं कर पाते हैं। कई लोग इसके नाम से भयभीत हो जाते हैं तथा जाने–अनजाने में इससे बचना चाहते हैं। संघर्ष दर्पण का कार्य करता है, यह लोगों को उनकी वास्तविकता का ज्ञान कराता है। जिस प्रकार मनुष्य दर्पण से अपने बाह्य स्वरूपों को देखता है, उसी प्रकार मनुष्य संघर्ष करके अपने अंदर छिपी क्षमताओं को जानता है। मनुष्य को संघर्ष के रास्ते से नहीं घबराना चाहिए तथा अपनी क्षमता अनुरूप संघर्ष करना चाहिए। जिस प्रकार चींटी अपनी क्षमता अनुसार अपने से दस गुना भार को उठाकर अपनी मंजिल की तरफ चलती है। उसके सामने कई रूकावटें व दीवारें आती हैं, उन्हें वह अपने साहस, बल और लगन से हराकर उन बाधाओं को पार करके, अपनी मंजिल तक पहुंचती है और अंत में सफल हो ही जाती है। उसी प्रकार मनुष्य कड़ी मेहनत व लगन के साथ संघर्ष करके अपनी सफलता प्राप्त कर सकता है।

किसी विद्वान ने कहा है कि सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम व संघर्ष की आवश्यकता होती है, बिना मेहनत और संघर्ष से सफलता नहीं मिल पाती है। अगर मिल भी जाती है तो उस सफलता से सफलता का सच्चा आनंद प्राप्त नहीं होगा। एक वही व्यक्ति सफलता का पूर्ण आनंद प्राप्त कर सकता है जिसने कठिनाइयों को देखा हो तथा संघर्ष करके आगे बढ़ा हो। एक बात तो स्पष्ट है कि संघर्षों के रास्ते में जाने से फायदे होते हैं क्योंकि इस क्षेत्र में लोगों की भीड़ भी कम होती है, अर्थात् बहुत कम लोग ही इस रास्ते पर चल पाते हैं। मनुष्य के जीवन में संघर्ष एक के बाद दूसरा आ जाता है। सीढ़ी जितनी अधिक होगी मनुष्य उतनी ही ऊंचाइयों पर पहुंचता है। उसी प्रकार संघर्ष रूपी सीढ़ी जितनी ज्यादा हो जिंदगी में उतनी ही बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है।'

'न संघर्ष और न तकलीफ,
तो क्या मजा जीने में,
बड़े-बड़े तूफान थम जाते हैं,
जब कर गुजरने की क्षमता हो सीने में।''

जितना बड़ा संघर्ष होगा,
जीत उतनी ही शानदार होगी।
-स्वामी विवेकानंद

जीवन में खेल का महत्व

पूनम दीप
एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर)

एक प्राचीन कहावत है–"पहला सुख निरोगी काया" इसका मतलब है कि सुखी जीवन का भोग करने के लिए स्वस्थ शरीर का होना जरूरी है। लेकिन शरीर तभी स्वस्थ हो सकता है जब इसके सभी अंग दुरूस्त यानी फिट हों और शारीरिक अंगों को फिट रखने हेतु खेलों से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है। जीवन में एक खेल ही है, जो हरेक प्रकार की शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य गुणों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करता है इसलिए आधुनिक युग में खेलों के प्रति लोगों की रूचि बढ़ने लगी है। पहले लोग खेलकूद को शौक व मनोरंजन के रूप में या व्यवसाय के रूप में खेलते थे लेकिन अब जीवन में खेलों के लाभ और महत्व को देखते हुए अपने जीवनशैली में स्वस्थ रहने के लिए शामिल करने लगे हैं। खेल अब केवल विद्यार्थी जीवन के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं रहा बल्कि बच्चे, नौजवानों और वृद्ध सबके जीवन में स्वस्थ, सुडौल और पुष्ट शरीर के लिए खेल किसी उपहार से कम नहीं।

खेलों का स्वास्थ्य के साथ गहरा संबंध होने के कारण अब हर माता–पिता बच्चों को स्पोर्ट्स में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने लगे हैं स्कूलों और कॉलेज में भी खेल को एक एक्टिविटी के रूप में प्राथमिकता दी गई है। शिक्षक और छात्र दोनों ही खेल के मैदान में अपनी शारीरिक क्षमताओं को विकसित करते दिखाई देते हैं। खेल शरीर को स्वस्थ और स्फूर्तिमय बनाए रखता है। खेलकूद के दौरान शरीर के सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है। मांसपेशियां सुदृढ़ बनती हैं, जिससे काया निरोगी रहती है। स्वास्थ्य रक्त और मजबूत शरीर के लिए खेल अनिवार्य है।

खेल का मैदान स्वस्थ्य शरीर पर एक स्थायी छाप छोड़ता है। यह शरीर का एक ऐसा ढांचा तैयार करता है जो चुस्त फुर्तीला और बलिष्ठ होता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बहुसख्यक शिक्षा संस्थानों में खेलकूद एक अनिवार्य विषय है। कहने का आशय यह है कि हर बालक, किशोर और युवा जो कल का नागरिक है, खेल के माध्यम से स्वस्थ शरीर का निर्माण करे। ताकि उसका जीवन स्वयं के लिए और साथ ही समाज व देश के लिए उपयोगी बन सके।

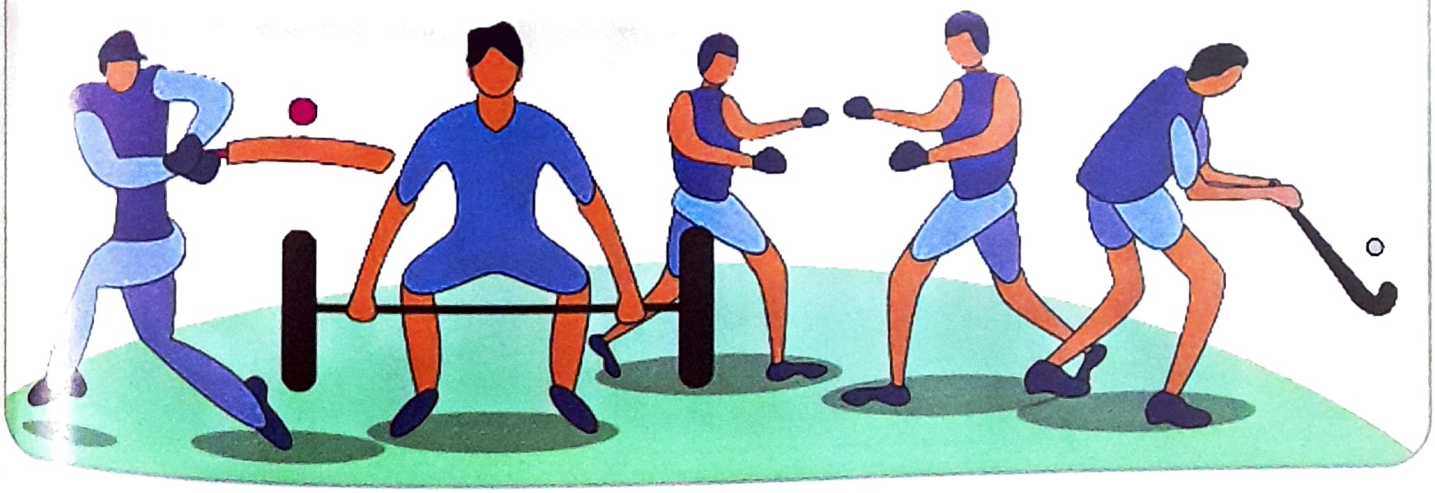

युवाशक्ति

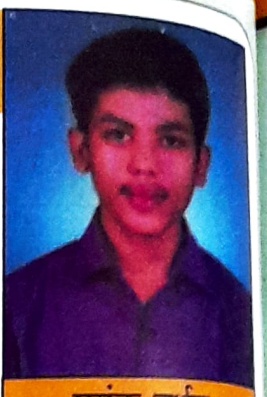

मयंक वर्धन
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

भारत वर्ष को आजाद हुए 73 साल हो गये हैं और इन 73 वर्षों में भारत बहुत कुछ हासिल कर चुका है। जैसे – मंगलयान हो या दुनिया की तीसरी सबसे शक्तिशाली सेना हो। भारत हर क्षेत्र में प्रगतिशील है और कई उपलब्धियां हासिल कर रहा है। भारत उन देशों की गिनती में आता है जो अपना लोहा पूरे विश्व में मनवा रहे हैं। भारत जैसी प्रगति कर रहा है वैसी उसकी संस्कृति है, भारत जैसी विशाल संस्कृति शायद ही किसी देश की है। विशाल इसलिए बोल रहा हूं क्योंकि भारत में 22 से भी ज्यादा भाषाएं बोली जाती है और न जाने कितनी ही बोली, बोली जाती हैं। न जाने कितनी सभ्यताएं बनी, पली–बढ़ी और खत्म भी हो गई। हमारे ही देश में हड़प्पा एवं सिंधु घाटी की सभ्यता बनी और खत्म हो गई, हमारे देश में कई संस्कृति, कई धर्म, कई सम्प्रदाय है और सब एक साथ हैं। यह सब सुनकर लगेगा कि यह एक संपन्न देश है लेकिन इस देश में कई समस्याएं हैं जैसे भ्रष्टाचार, नक्सलवाद, आतंकवाद एवं बेरोजगारी आदि। कहने को तो हम वैभवशाली हैं लेकिन हमारी इन समस्याओं का कोई हल नहीं निकल पाया। हमारा देश जनसंख्या के लिहाज से सबसे युवा है और युवाओं की संख्या 65: से भी अधिक है। यानी हमारे देश में हर तीसरा व्यक्ति युवा है जिसकी उम्र 18 से 40 वर्ष के बीच है।

आज भारत सबसे युवा देश है, ऐसे युवा देश में इतनी समस्याएं क्यों हैं ? ऐसी प्रभावशाली संस्कृति वाले देश का हाल ऐसा क्यों ? हमारे देश में समस्याएं इसलिए नहीं है कि हम उससे लड़ या खत्म नहीं कर पाए हैं। यह इसलिए है क्योंकि हम उसके प्रति सजग एवं जागरूक नहीं है। यहां इतनी भारी संख्या में युवा हैं कि हम जो चाहें वह कर सकते हैं लेकिन हमारे देश के युवा इस विषय को नहीं समझते हैं। वह अपनी लोग विलासिता के पीछे लगे हैं, वह देश या देश से जुड़ी समस्याओं को नहीं समझना चाहते हैं। जिस देश की संस्कृति इतनी वैभवशाली एवं प्रभावशाली है, उस देश की संस्कृति यानि अपनी संस्कृति को छोड़कर दूसरे देश की संस्कृति के पीछे भागते हैं और उन्हें अगर ऐसा करने से रोकें तो वह आपको पिछड़ी सोच का कहेंगे। इसका मतलब 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटें'। मैं आपको पिछड़ी सोच के लिए प्रोत्साहित नहीं कर रहा, बल्कि आपको अपनी ही संस्कृति को जानने के लिए प्रोत्साहित कर रहा हूं।

आज हमारा युवा समाज नशे की लत में है, मद्यपान करना वह इज्जत की बात समझता है। उनको अगर आप देश की समस्या के लिए लड़ने बोलेंगे तो वह यह कहेंगे कि हमारे पास फालतू चीजों के लिए समय नहीं है। उन्हें सुविधाएं चाहिए लेकिन सुविधा का भुगतान नहीं करना चाहते यानि मुफ्तखोर हो चुके हैं। अगर मैं आज से सौ साल पीछे चले जाऊं तो हमारे देश को आजादी दिलाने वाला समाज, युवा वर्ग पर हमारे पूर्वजों ने कभी भी कोई भेदभाव न रखकर आपस में सिर्फ देश के लिए काम किया और हमें आजादी दिलाई। जब एक विदेशी युवक हमारी संस्कृति का प्रचार कर सकता है तो हम युवा वर्ग अपनी संस्कृति क्यों अपना नहीं सकते हैं ? हमारा युवा अपने देश के लिए क्या नहीं कर सकता है ?

आजादी के पूर्व हमारे महान क्रांतिकारी भगत सिंह एवं उनके साथी जब जेल में बंद थे तब उन्होंने 116 दिन की भूख हड़ताल की थी। अंग्रेजों के खिलाफ भूख हड़ताल के दिनों में उनके ऊपर कई अत्याचार हुए, उनको मारा गया, उनके मुंह में जबरन खाना ठूंसा गया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और अपनी मांगे मनवाकर ही माने। उनकी मांगे थी कि भारतीय कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार हो और उन्हें मूलभूत सुविधाएं मिले। जेल के अंदर अगर, हमारे पूर्वज इतनी बड़ी क्रांतियां कर सकते हैं तो क्या हम अपनी व्यवस्था को नहीं बदल सकते ? हमारे युवा क्यों नहीं समझते कि वे देश का वर्तमान ही नहीं, भविष्य भी हैं। अभी वर्तमान में अगर वह अपने अंदर यह बात या इच्छाशक्ति उत्पन्न कर लें तो हमारा देश बहुत आगे एवं समस्यामुक्त हो जायेगा। तब समस्यामुक्त भारत में आने वाली पीढ़ी पूरे दिल से गाएगी "सारे जहां से अच्छा, हिन्दुस्तान हमारा" ।।

कुछ कर दिखाना है

हेमचंद साहू
एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर)

कुछ कर दिखाना है, हमें कुछ कर दिखाना है,
कुछ कर दिखाना है, हमें कुछ कर दिखाना है,
जीवन पथ पर सदा हमें बढ़ते जाना है,
कुछ कर दिखाना है।

लाख मुसीबत आये पर, तुम कभी नहीं घबराना,
महापुरुषों को याद करना, उनका सूत्र अपनाना,
जीकर मरते तो सभी हैं, हमें अमर हो जाना है,
कुछ कर दिखाना है।

अनमोल मनुष्य का जीवन है, इसे व्यर्थ तुम न गंवाना,
कर्म रत ही करते रहना, समय का लाभ उठाना,
जीवन एक युद्ध है, हमें लड़ते जाना है,
कुछ कर दिखाना है।

असफलता जीवन में आये, तुम निराश मत होना,
कोशिश करते रहना, कभी हार न मानना,
जीवन एक नदिया है, हमें बहते जाना है,
कुछ कर दिखाना है।

भारतीय संविधान के जनक : डॉ. भीमराव अम्बेडकर

तनुश्री वर्मा
एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

परिचय - भीमराव रामजी अम्बेडकर, डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर नाम से लोकप्रिय भारतीय बहुज्ञ अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों से सामाजिक भेदभाव के विरूद्ध अभियान चलाया था। वे भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माता थे।

भारत में उनका जीवन सामाजिक सुधार के श्रेष्ठतम कार्य को समर्पित था। वे एक ऐसे समाज सुधारक थे, जो मात्र भाषणों तक ही अपने को सीमित करने के बजाय स्वयं अपने जीवन और कार्यों से सामाजिक रूढ़िवादिता, जातिप्रथा और अस्पृश्यता को हटाने में जीवनभर लगे रहे। उन्होंने राजनीति की बजाय सामाजिक सुधार के क्षेत्र में कार्य करने को प्राथमिकता प्रदान की।

14 अक्टूबर 1956 को अंबेडकर ने बौद्ध धर्म अपनाया था। वे देवताओं के संजाल को तोड़कर एक ऐ मुक्त मनुष्य की कल्पना कर रहे थे जो धार्मिक तो है लेकिन गैर–बराबरी को जीवन मूल्य न माने। यां न दुनिया पुरानी दुनिया से भिन्न है तो नई दुनिया को पुरानी दुनिया से अधिक धर्म की जरूरत है! डॉ. अंबे क ने यह बात 1950 में 'बुद्ध और उनके धर्म का भविष्य' नामक एक लेख में कही थी। वे कई बरस पहले ही म बना चुके थे कि वे उस धर्म में अपना प्राण नहीं त्यागेंगे जिस धर्म में उन्होंने अपनी पहली सांस ली है।

डॉ. अंबेडकर के विचार :- डॉ. अंबेडकर तत्व चिंतक दार्शनिक और सैद्धांतिक राजनीतिक चिंतक ही नहीं अपितु एक कर्मयोगी थे। भारतीय दलित वर्गों के राजनीतिक नेता थे। अतः भारत की विशिष्ट राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने अपने विचार प्रकट किए।

जनतंत्र संबंधी विचार :- अंबेडकर जी के अनुसार लोकतंत्र, शासन का एक ऐसा रूप तथा पद्धति है जिसमें बे रक्त बहाए क्रांतिकारी, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त होता है।
अंबेडकर जी के अनुसार संसदीय लोकतंत्र की सफलता के लिए समाज में असमानताएं नहीं होनी चाहि और सुदृढ़ विपक्षी दल का होना एक अपरिहार्य शर्त है।

अधिकार संबंधी विचार :- अंबेडकर जी व्यक्ति के कतिपय ऐसे अधिकारों के समर्थक थे जिन्हें संविधान में स्था दिया जाना चाहिए। वे अधिकारों के पीछे मात्र कानूनी संरक्षण ही पर्याप्त नहीं मानते थे अपितु सामाजिक औ नैतिक स्वीकृति भी अपरिहार्य मानते थे।

धर्म और राज्य संबंधी विचार :- भारत के संविधान के निर्माण के समय डॉ. अंबेडकर ने धर्म और राज्य के आपसी संबंध के बारे में अपने विचार प्रकट किए। उनके अनुसार प्रत्येक नागरिक को अन्तःकरण की स्वतंत्रता तथ किसी भी धर्म को मानने व उसका प्रचार करने की आजादी होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति को किसी भ धार्मिक समुदाय का जबरदस्ती सदस्य नहीं बनाया जाना चाहिए, राज्य का अपना कोई राज्य धर्म नहीं होना चाहिए।

अस्पृश्यता संबंधी विचार :- अंबेडकर अस्पृश्यता के खिलाफ थे। अस्पृश्यता अमानवीय और औचित्यरहित प्रथा थी। इससे भारतीय समाज की एकता प्रभावित होती थी। उन्होंने धर्मशास्त्र और भारतीय साहित्य के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि अस्पृश्यता मनुष्यकृत दुर्गुण है न कि ईश्वरीय कृति।

कार्य एवं योगदान :-

- सामाजिक एवं धार्मिक योगदान – मानवाधिकार जैसे दलितों एवं दलित आदिवासियों के मंदिर प्रवेश,

पानी पीने, छुआछूत, जाति–पाति, ऊंच–नीच, जैसी सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए कार्य किए।

- उन्होंने मनुस्मृति दहन (1972), महाड़ सत्याग्रह, नासिक सत्याग्रह (1930) जैसे आंदोलन चलाए।
- बेजुबान शोषित और अशिक्षित लोगों को जागरूक करने के लिए साल 1927 से 1956 के दौरान मूक नायक, बहिष्कृत भारत, समता, जनता और प्रबुद्ध भारत नामक पांच साप्ताहिक और पाक्षिक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया।

आर्थिक, वित्तीय और प्रशासनिक योगदान :-

- भारत में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना, डॉ. अंबेडकर की रचना, 'रूपये की समस्या – उसका उद्भव और प्रभाव' और 'भारतीय चलन व बैंकिंग का इतिहास' और 'हिल्टन यंग कमीशन के समक्ष उनकी साक्ष्य' के आधार पर 1935 में हुई।
- साल 1945 में उन्होंने देश के लिए जलनीति और औद्योगिकीकरण की आर्थिक नीतियों जैसे – नदी–नालों को जोड़ना, हीराकुंड बांध, दामोदर घाटी बांध, सोन नदी घाटी परियोजना, केंद्रीय जल और विद्युत प्राधिकरण बनाने के मार्ग प्रशस्त किए।

संविधान निर्माण :-

- उन्होंने समता, समानता, बंधुता एवं मानवता आधारित भारतीय संविधान को 2 साल 11 महीने और 17 दिनों में तैयार करने का अहम कार्य किया।
- निर्वाचन आयोग, योजना आयोग, वित्त आयोग, महिला–पुरूष के लिए समान नागरिक हिन्दू संहिता, राज्य पुनर्गठन, राज्य के नीति–निर्देशक तत्व, मौलिक अधिकार, मानवाधिकार, आर्थिक शैक्षणिक एवं विदेश नीति बनाई।
- उन्होंने विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में एस.सी.–एस.टी. के लोगों की हिस्सेदारी सुनिश्चित की।

"BAD DREAM"

Harish Kumar Sahu
M.Sc. (Previous)

Last night I had a dream,
of what the future of the earth may seem.
Will it be green?
with all of us happy as a queen,
or will it be dead,
with everywhere the color of red.
Let's see a better future,
and care for the nature,
let us care for the earth,
or our lives will be nothing worth.
Let us plant a tree,
and let our lives be free,
let us save water,
as it will save us after.

Is that me different !

Rupali Sahu
B.Sc. (1st Year)

I was thrown out of a passanger,
in a place filled with stranger,
I thought what did I lack,
of course nothing, only I was black.
I was killed at the time I took birth,
by the man with stethoscope over his shirt,
I thought what was my mistake?
I was a girl whom they won't take.
I was forced to sit alone,
in a class that I too own,
I thought what was my fault,
of course nothing, it's a caste assault.
I was removed from my office,
even after winning many trophies,
I thought what could it be,
of course nothing, only I had HIV.
And now I ask you,
"Is that me different"?
Or you sure, need a cure.

The Young Adults

Tanisha Diwan
M.A. (Public Admin)

In this quick and fast life that we are living today, whenever we get some time we often tend to sit and relax and think of our wonderful and carefree childhood. It is truly said – "*The childhood is the most beautiful and special part of one's life.*"

Now there is a thought that often strikes my mind, do childhood and teenage exist still now? Because in my surrounding I feel that innocence and childishness is gradually missing. This is the age where people experience lots of love, fights, grief and joy which altogether becomes a memory throughout the life to cherish. But wait, are the children and teens today really creating those memories?

I feel no. Just look around yourself and you can effortlessly observe the girls of early puberty dressed up like adults with highlighted hairs, high heels and makeup on. Also, you can spot these quite obsessed *young adults* taking selfies every now and then, posting it on their social media accounts. As a result, they stick to their phone constantly to see the reaction that follows.

Even the boys are not behind in this race. They give every bit to look and behave like adults. Gelled hair and stylish appearance make them look maturer than their actual age.

Now the question arises, who is responsible for this? One thing is the excessive impact of social media on our lives that I mentioned above and another important aspect is the circle where these kids live in. Especially when the parents are persistently wallowed in the virtual world of beauty and affair, rusulting in their children to embrace the same. In fact, it seems normal to them.

To put it simply, the entire western culture has been indiscriminately copied by us. The present pseudo reality says, there is nothing bad in adopting the culture but if we do so we should also acquire the responsibility, activeness, participation and honesty towards the nation.

I miss the group of children playing outside games, hide n seek, care freely without being bothered of how they look logged in mud and dust. Children today need to know that they will anyway grow into an adult but once the childhood is gone, it's gone.

In my opinion I find this complete waste and disgusting. The entire scenario drags me to a very significant question, where is our young generation leading?

Meanwhile we often get to read that the children in other countries are engaged in discovering and inventing new ideas in technology, science and research. Just wonder the point where they will reach 20 years from now!

The result of our teens will be more clearly visible 20 years hence when the entire responsibility of the nation will be on their shoulders and if they are found powerless in discharging the national duties, the scenario will be more heartrending.

After summing up all the arguments, two conclusions can be derived. First, the children should behave according to their ages, and second, that the parents and elders sometimes through their activities unintentionally inculcate wrong ideas in the perception of young ones against which, they have to be really careful.

A good upkeep today will lead to an organized citizen tomorrow. It's a process which has already begun. It's high time for parents and teachers to keep a watch on the activity of these young adults and make them geniune, unadulterated hardworking and zealous and also make them understand the value of percious childhood. So that they too will have some memories to cherish in the times ahead.

-------Best Wishes!-------

To vote is exist : #Teeka Lagao

"Shape tomorrow by voting today; your vote matters a lot"

Ashish Jadhav
B.A. (3rd Year)

Now or Never !

Youth are the immediate relatives to stimulation in forming groups. Many maintain leadership from the very younger stages. In India, there are around 430 millions young people. In lok sabha elections of 2014, there were 150 million new and young voters. 73% of 450 million youngsters are literate. Through these figures one can substantiate the power of the youth in the Indian society and its political sphere.

The youth of 21st century India is the deciding factor for future glory of the nation and its politics. All we need is involvement and participation of the youth in politics who are turning indifferent towards present political scenario. Our beloved former president APJ Abudul Kalam said: "Without your involvement you cannot succeed, with your involvement you cannot fail".

Initiate the Change :-

We have heard this many times that India is the biggest democracy in the world. But, is India also the strongest democracy? What do we mean by democracy? Abraham Lincoln has defind democracy as the government 'of the people, for the people, by the people.' Is it true for Indians?

Millions of countrymen are struggling everyday just to get food for survival, lakhs of youth are struggling just to get a job. Many of us are killed in some terrorist attacks or railway accidents – All this has been going since long. What is the government doing? We just get the news of an ever increasing corruption and decreasing standard of politics in our country. These all are collective consequences of our ignorance towards our responsibilities of participation in politics and democratic procedures.

We are the Remedies :-

In a democracy, election are the biggest opportunity to bring about the change. And vote is the biggest weapon for this change. We are lucky to live in a democratic country, in which every adult has a right to cast vote. We are the biggest democracy in the world. However, in contrast we have some of our MPs and MLAs in our parliament charged with

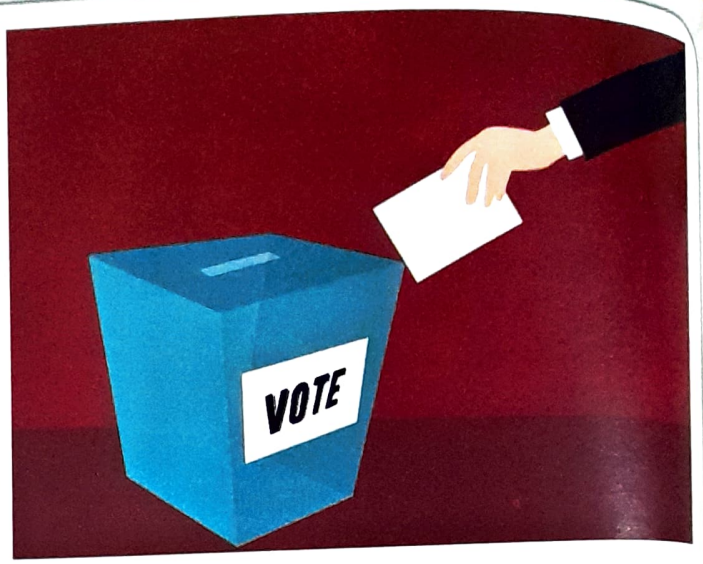

highly offensive criminal and civil cases. Data from the Associations for Democratic Reform (ADR) indicate 179 out of 543 elected representatives in the Lok Sabha have some criminal cases pending against them. Many of them have been convicted by court. But the number of criminal charges against them is steadily increasing. This severly affects the future of our nation. Here the question arises that the youth make upto 65% of our population. So is it not youth's responsibility and moral duty to purify the political system. Though it is not a day's work. It may take years but as of now what we can do to maximum extent is to cast our vote in order to empower the right ones.

The Government Recognised Us :-

The Government has reduced the age eligibility for casting vote from 21 to 18. The message was quite clear that the youth should actively take the part in making of choices through the process of election to form the governments in the centre and the state. As a voter, youth can play a major role in elections because of their large population. We must remember that we are not voting for someone else rather for ourselves. So we must vote and also inspire others to do so.

I would like to quote former US President John F. Kennedy – "Ask not what the country has done for you. Ask what you have done for the country."

Let's cast our votes and let's unite in order to bring positive changes in our life and to make our future a better one.

Jai Hind

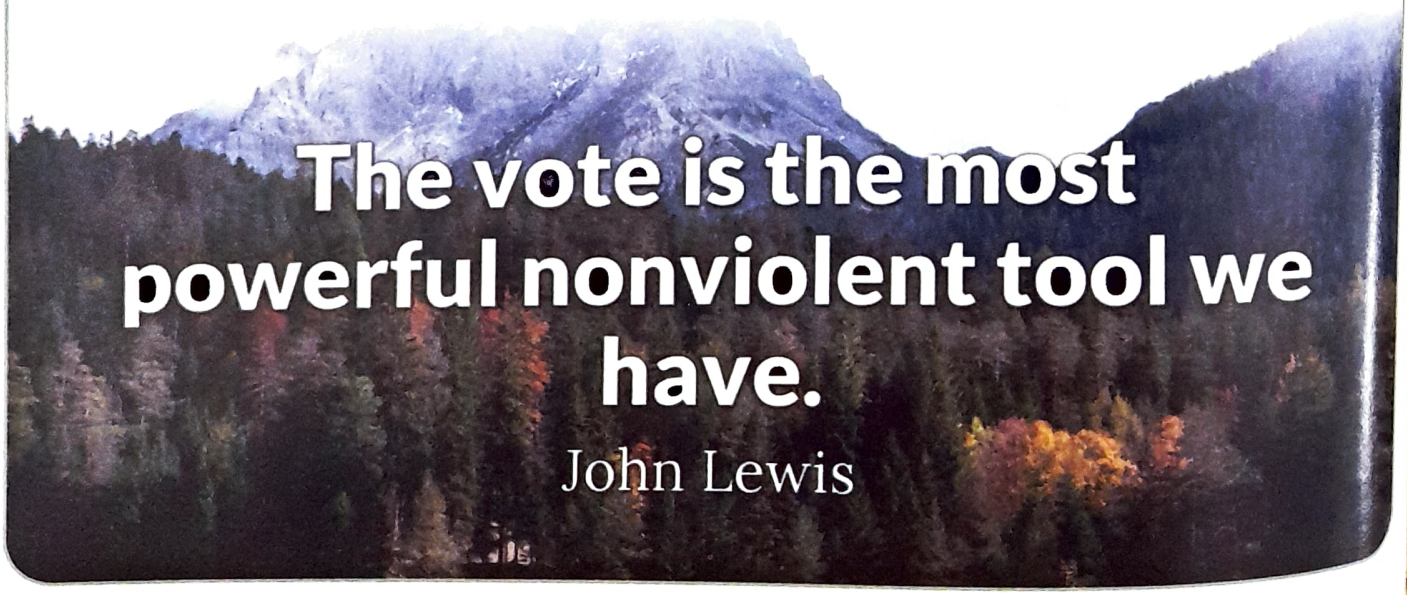

Loneliness

Social Isolation

Anupriya Sujoria
B.A. (2nd Year)

Loneliness is a complex and usually unpleasant emotional response to isolation. Loneliness typically includes anxious feelings about a lack of connection or communication with other beings, both in the present and extending into the future. As such, loneliness can be felt even when surrounded by other people and one who feels lonely, is lonely. The causes of loneliness are varied and include social, mental, emotional and physical factors.

Loneliness is a universal human emotion that is both complex and unique to each individual. Because it has no single common cause, the prevention and treatment of this potentially damaging state of mind can vary dramatically.

For Example :- A lonely child who struggles to make friends at his school has different needs than a lonely old man whose wife has recently died. In order to understand loneliness, it's important to take a closer look at exactly what we mean by the term "lonely", as well as the various causes, health consequences, symptoms and potential treatments for loneliness.

Loneliness causes people to feel empty alone and unwanted. People who are lonely often crave for human contact but find it difficult to form connections with other people.

Loneliness, according to many experts, is not necessarily about being alone. Instead, if you feel alone and isolated, then that is how loneliness plays into your state of mind.

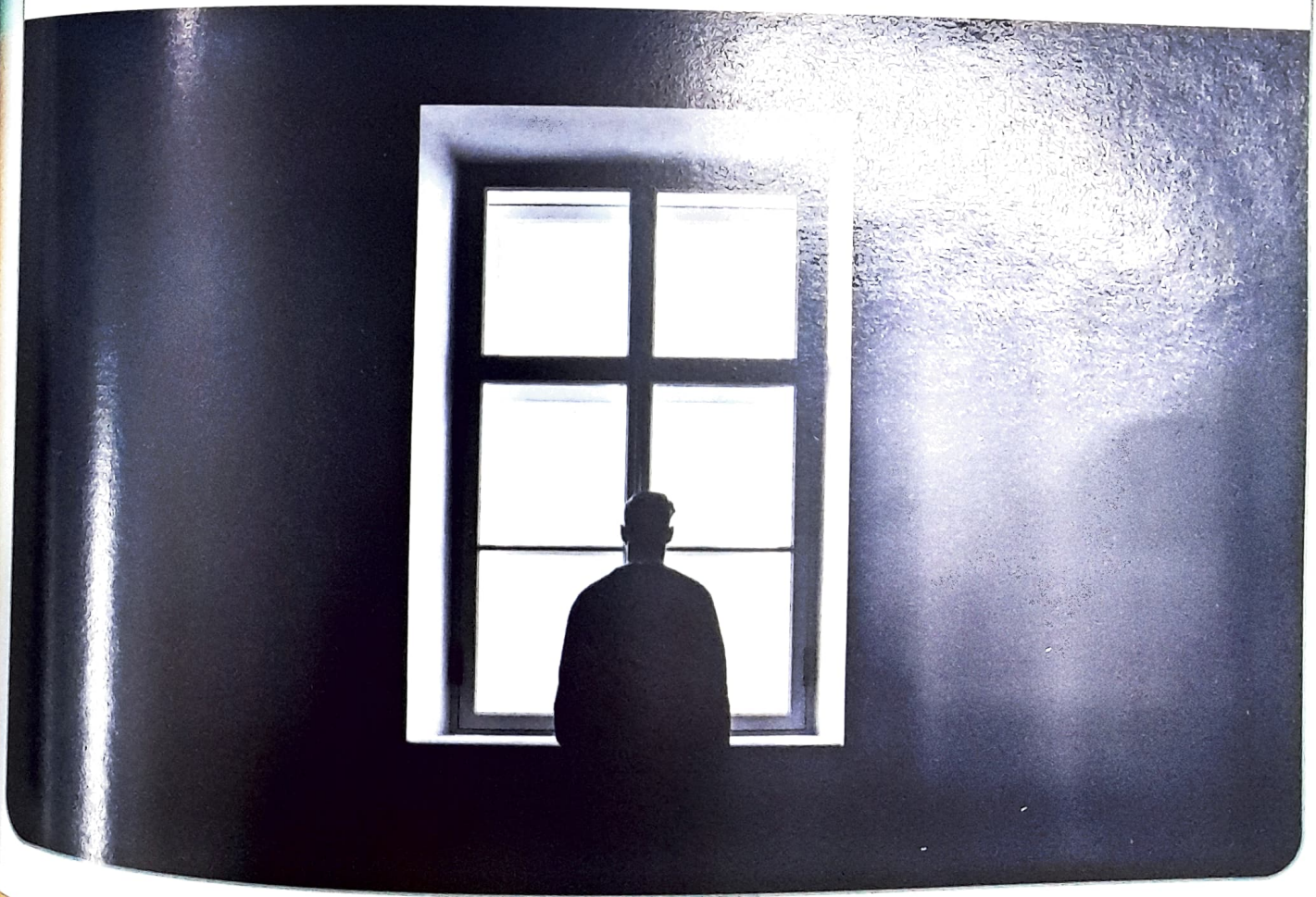

For Example :- A college freshman might feel lonely despite being surrounded by roommates and other peers. A soldier begining his military career might feel lonely after being deployed to a foreign country despite being constantly surrounded by other troop members.

Contributing factors to loneliness include situational variables, such as physical isolation. Moving to a new location and divorce. The death of someone significant in a person's life can also lead to feeling of loneliness. Additionally, it can be a symptoms of a psychological disorder such as depression.

Loneliness can also be attributed to internal factors such a low self-esteem. People who lack of confidence in themselves often believe that they are unworthy of the attention or regard of other people. This can lead to isolation and chronic loneliness.

Cure :- A good place to start in your journey to cure loneliness is to understand the reasons for your loneliness and to become fully aware of how loneliness is affecting your life.

- Figure out where you can find a few good friends – new friends.
- Think about ways you can be of service to others.
- Meditation.
- Solitude.
- Build a deeper ralationship with yourself.
- Take tips from the happiness literature.

Because, once alone, it is impossible to believe that one could ever have been otherwise. Loneliness is an absolute discovery.

- Marilynne Robinson

आओ, भारत में फुटबाल को आगे बढ़ाएँ

भागवत प्रसाद नागराज
एम.ए. हिन्दी (प्रथम)

दुनिया का सबसे लोकप्रिय खेल और सबसे ज्यादा जाने वाला खेल फुटबाल हैं। लेकिन भारत का लोकप्रिय खेल क्रिकेट हैं। विश्व के 240 देश फुटबॉल को खेलते हैं, जबकि दुनिया के केवल 14 देश ही क्रिकेट को खेलते हैं। विश्व कप फुटबॉल को दुनिया की 32 टीमें खेलती हैं, जबकि क्रिकेट विश्व कप को दुनिया की केवल 10 टीमें ही खेल पाती है। भारत में जिधर भी देखो उधर क्रिकेट ही खेला जाता हैं, जबकि भारत में फुटबाल खेलते कम लोग ही मिलेगे। इसी कारण फीफा की फुटबाल विश्व रैकिंग में भारत नंबर के पार हैं जबकि आई सी सी क्रिकेट की रैकिंग में भारत पहले स्थान पर हैं। अतरू हमे भारत में मुख्यतः फुटबॉल को आगे बढ़ाना होगा। इसके लिए हम सभी को आगे आना होगा तथा सरकार को भी उचित कदम उठाने होंगे। तभी हमारा देश फुटबॉल का विश्व कप खेल पाएगा और फुटबॉल की दुनिया में भारत का मान बढ़ेगा।

अभी मैंने हार नहीं मानी है

संदीप राजपूज
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

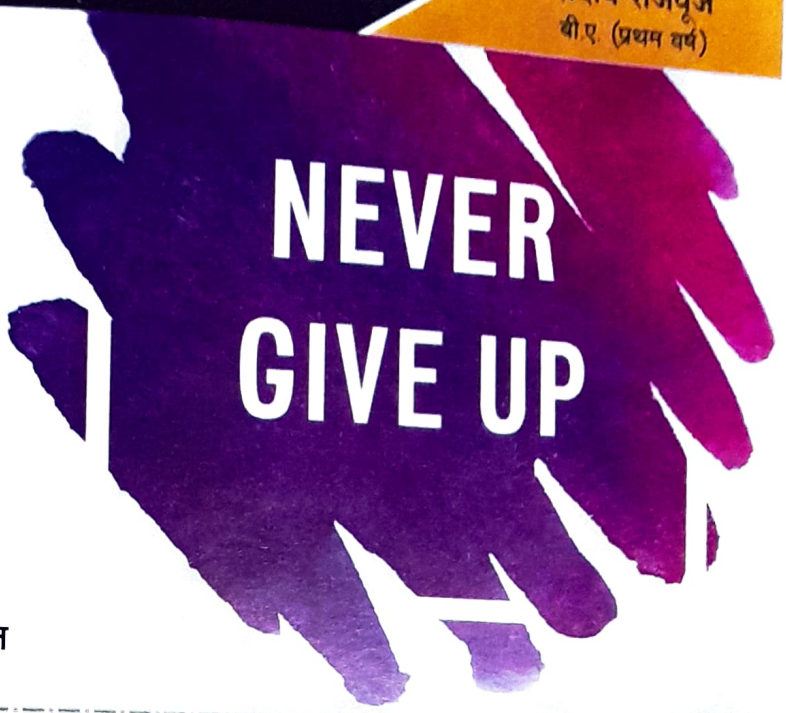

चाहे कितनी भी मुसीबतें आएँ
अभी मैंने हार नहीं मानी हैं
सच कहूंगा अपने सपनों की
अभी मैंने हार नहीं मानी हैं।
न जाने कितने दुखों के तूफान आएँ हैं
हँस के लड़ूंगा सब रुकावटों से
अभी मैंने हार नहीं मानी है
जीत लूंगा दुनिया अपने हौसलों से
यह बात मैंने ठानी है
अभी मैंने हार नहीं मानी है
पा लूंगा अपना मुकाम एक दिन
बनूंगा फिर सिकंदर एक दिन
अपने हौसलों से जीत लूंगा सब कुछ एक दिन
अभी मैंने हार नहीं मानी है

काश मैं बंजारा होता

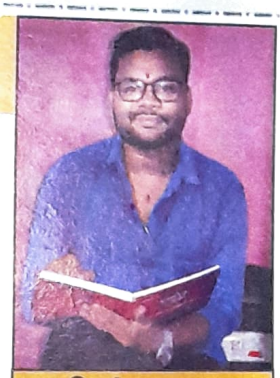

दिलीप यादव
बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

काश मैं बंजारा होता
तो लोगों का गुलाम न होता,
न कोई नाम होता न कोई काम होता,
न किसी पे बोझ होता न किसी का बोझ होता,
न किसी को मुझसे उम्मीद होती
न कोई जिम्मेदारी होता,
इस दुनिया दारी और लोगों की भीड़ से दूर होता,
अपनी जिन्दगी अपने ढंग से जीता,
फिर मैं संवारता या बिगाड़ देता,
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,
क्योंकि ये इरादा मेरा होता,
न ही मैं लोगों के लिए अच्छा होता,
न ही मैं लोगों के लिए बुरा होता,
काश मैं किसी से जुड़ा न होता,
शायद मैं लोगों के लिए एक फकीर होता,
न कोई अपना न कोई पराया होता,
ये सड़क मेरा रंगमंच और मैं उस
रंगमंच का कलाकार होता,
न कोई एहसान होता
न कोई मुझसे दुखी होता
हर सवेरा एक नया दिन और नया एहसास होता,
आसमान में उड़ते पंछियों सा मैं आजाद होता,
काश मैं बंजारा होता।

आत्मा का प्रकाशन हैं पुस्तकें

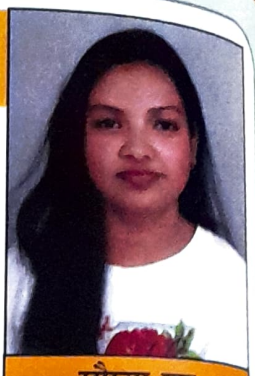

सौम्या यदु
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

जीवन को सुसंस्कारित एवं विवेकशील बनाने में पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। अच्छी पुस्तकें जीवन जीने की कला सिखाने व व्यक्तित्व निर्माण करने में सहायक होती हैं। पुस्तकों से ही संस्कृति का पल्लवन होता हैं, विस्तार होता हैं। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि मैं नरक में भी पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि इसमें वह शक्ति हैं कि जहां ये होंगी वहां अपने आप ही स्वर्ग बन जाएगा। कहने का तात्पर्य यह हैंकि नर्क जैसीस्थिति को भी पुस्तकों के माध्यम से दूर कर सुखदस्थिति को निर्मित किया जा सकता हैं। उनके मानवीयगुणों जैसे दया, ममता, प्रेम,श्रध्दा को भी पुस्तकों के माध्यम से प्रस्फुटित किया जा सकता हैं। अक्षरों की ओट में छुपी हुई दुनिया को समझने के लिए पुस्तकों के अंदर जाना होगा, पुस्तकें पढ़नी होंगी।पुस्तकें पढ़ने का आनंद ही कुछ और हैं, वह ब्रह्मानंद से कम नहीं। उस आनंद को वही समझ सकता हैं जो निरंतर नई नई किताबें पढ़ता हो। किताबें पढ़ने का आनंदटीवी से कई अधिक है। टीवी एक विचार हो सकता हैं परंतु पुस्तकें विचारों का समूहहैं। जब इच्छा हुई हम अपनी रूचि के अनुसार किताबों को पढ़ सकते हैं, परंतु टीवी में वह बात कहां ? हर उलझन का जवाब मिलेगा किताबों में। पुस्तकें किसी भी विधा में हो सकती हैं–गद्या पदमें। महाकाव्य, खंडकाव्य, निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा आदि। हमें जो विधा रुचिकर लगे हम उसका चयन कर सकते हैं।पुस्तकें हमारी आत्मा को प्रकाशित करती हैं। वास्तविक ज्ञान पुस्तकों से मिलता है जो जीवन के लिए परमावश्यक हैं। एकमात्र सच्चा ज्ञान ही लोक परलोक में अक्षय तत्व और सच्चा साथी हैं। उस अक्षय तत्व आनंद को प्राप्त कर मनुष्य अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर,अशांति से शांति की ओर उन्मुख होता हैं। वास्तव में मानव जीवन का लक्ष्य ही हैंज्ञान की प्राप्ति जो उसे किताबों से प्राप्त होगा।

किसी ने ठीक ही कहा हैं -

किताबों का इतना बड़ा संसार हैं
किताबों में ज्ञान का भंडार हैं
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे? किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं!

साहस

प्रिया गुरवानी
एल.एल.बी. (प्रथम सेमेस्टर)

मैं बैठ अकेले में अपने साथ
बातें करती बार बार...
हम भटके या हमारी राहें भटकी
चल सकते हैं यह विचार...
पर कैसे।
फिर मैंने सोचा
भटकते भटकते ही सही मैंने जिंदगी के अलग और सही फलसफे को जाना...
उदासी और मायूसी के पलों में भी
अब मैंने जिंदगी जीने का
खुशनुमा तरीका जो ढूँढ़ निकाला...
आज अवसाद, डर, अकेलेपन ने
पता नहीं कितनी जिंदगियों को
अपना शिकार बनाया...
सब होते हुए भी
खुली हवा में सांस लेना, स्वस्थ शरीर का होना
तर्क वितर्क की शक्ति का होना
फिर भी न जाने क्यों
हम अपने साहस की बलि देकर
अपने सपनों अपनों को
ठुकरा यूं मान लेते हैं हार।

सपने

डाकेश्वर साहू
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

एक राम नाम का लड़का जो अपनी छोटी सी गांव से शहर अपनी स्नातक और सपनों को पूरा करने शहर आया था। वह किराए के घर पर रहता था। वह अपनी स्नातक की दो कक्षाओं को अच्छे प्रतिशत के साथ पास कर लिया था। उसके स्नातक की भी परिणाम अच्छे आएं,मकान मालिक और राम की अच्छी जमती थी तो वह जब भी अपने गांव जाताथा तो कुछ ना कुछ लाता था। राम को किसी से भी कोई ताल्लुकात नहीं रखता था, कॉलेज से घर और घर से कॉलेज अन्य लड़कों के जैसा बिलकुल मौज मस्ती नहीं करता था। एक देर रात की बात है मकान मालिक उठे तो उसने राम के कमरे के अंदर कुछ कागजों को मोड़ने जैसी आवाज़आने लगी उसके बाद मकान मालिक चुपआकर सो जाता है। सुबह राम से रात के घटना के बारे में पूछा तो वह चुप्पी में जवाब दिया।

10 महीनों के बाद - राम मकान मालिक को मिठाई देता हैं, तो मकान मालिक मुस्कुराते हुए पूछते हैं किस बात की खुशी में बांटे जा रहे हो बेटा राम हल्के मुस्कान लिए बोलता हैं अंकल UPSC के परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया हूँ, अगले महीना training में जाना है। फिर मकान मालिक को उस रातों की बात समझ आई रातों में पत्ते मोड़ने की आवाज नहीं वह कलेक्टर बाबू बनने के लिए पन्ने पलटे जा रहे थे।

समर : द सोल्जर

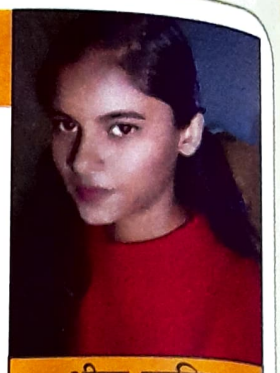

श्रीया डहरिया
बी.एस-सी. (द्वितीय)

समर अपनी इंडियन आर्मी टीम का कैप्टन था। सब उससे डरते थे। वह स्वभाव का अच्छा था लेकिन बहुत गुस्से वाला और खतरनाक था। उसका अपना एक प्रोटोकोल था। समर अपनी टीम मेंबर को ऐसी–ऐसी ट्रेनिंग देते थे, जो देश में घुसने वाले बदमाशों को एक ही बार में उखाड़ फेंक दें। देश पर अपनी जान छिड़कताथा। वतन के लिए मर मिटने वाला समर प्रताप सिंह राथौड़ हर पल चौंकना रहता था। उसका सपना था, बॉर्डर पर जाना देश के 135 करोड़ देशवासियों की सुरक्षा करना।

बचपन से ही सोल्जर समय खूब गुस्से वाला था।मानो गुस्सा उसका नशा था। अपनी माँसे बहुत प्यार करता था। लेकिन उसके गुस्से के कारण समर और उसके पापा के बीच बनती नहीं थी। समर के पापा समर को उसके गुस्सैलेस्वभाव के कारण भाते नहीं थे। समर को जब गुस्सा आता तो वह कुछ भी कर जाता था।

एक दिन समर ने गुस्से में आकर अपने स्कूल फ्रेंड को बेड से मार दिया, जिसके कारण समर को उसके स्कूल से निकाल दिया गया जबकि गलती उस लड़के की थी ना कि समर की लेकिन गुस्सैल स्वभाव के कारण समर स्कूल से निकाला गया। जैसे ही समर की यह बात पता चली तो समर और उसके पिता के बीच लड़ाई हुई और समर को घर से जाने को कह दिया वह घर में तभी रहेगा जब अपना स्वभाव ठीक करेगा। माँने बहुत समझाने की कोशिश की मगर बात बनी नहीं समर घर छोड़कर चला गया।

समर द सोल्जर को आज घर छोड़े 10 साल हो गयेहैं। और वह इंडियन आर्मी टीम के कप्तान हैं। समर द सोल्जर अपनी टीम को खुद ट्रेन करते थे उनकी ट्रेनिंग कोई आम ट्रेनिंग नहीं होती थी जब तक पसीना पानी की तरह धरती में ना गिर जाए खूब मेहनत करवाते और खुद भी करते।

समर का एक ही सपना था, बॉर्डर पर जाना और समर बॉर्डर पर जाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता हैं। लेकिन उसके रास्ते में अनेक रुकावटें आती है बॉर्डर पर जाना उसके लिए आसान नहीं था। लेकिन जहां चाह वहां राह। समर प्रताप सिंह राथौड़को तो बॉर्डर पर ही जाना था।

इस बीच उसे बॉर्डर पर जाने की परमिशन एक शर्त पर मिलती है। उसके पिता भागवत प्रताप सिंह राठौड़ यानी समर द सोल्जर के पिता का सिग्नेचर ले कर आता है तो उसे बॉर्डर पर जाने दिया जाएगा। ये समर को बॉर्डर पर जाने के लिए उसके सर ने शर्त रखा।

समर के पापा श्द कंट्रिसऑफ टॉप साइकोलॉजिस्ट एण्ड द डीन ऑफ इंस्टिट्यूट ऑफ साइकोलॉजी एण्ड फॉरीजन लैंग्वेज के प्रोफेसर थे। समर अपने सर के इस शर्त को स्वीकार कर लेता है और अपने पिता से सिग्नेचर करवाने के लिए चला जाता हैं। 10 साल बाद समर द सोल्जर और उसके पिता आमने सामने खड़े हैं। समर के पिता समर से कुछ सवाल पूछते हैं जिसमें पहला जवाब "who are you" समर का जवाब I am the soldier समर के पिता दोबारा समर से यही सवाल पूछते हैं समर का जवाब नहीं बदलता हैं। समर नहीं समझ पाता कि उसके पिता 10 साल बाद उसके और स्वभाव का परीक्षा ले रहे हैं। समर को गुस्सा आता है और वह अपने पिता को परमिशन लेटर पर सिग्नेचर करने को कहता है लेकिन वह सिग्नेचर करने से मना कर देते हैं और समर के सामने फिर एक शर्त रखते हैं।

मैं तुम्हें इक्कीस दिन का समय देता हूं। तुम इन दिनों में अपना स्वभाव बदल लेते हो तो मैं इस

परमिशन लेटर पर सिग्नेचर कर दूँगा। समर अपने पिता के द्वारा दिए गए शर्त को स्वीकार कर लेता है। उसके पिता जैसे जैसे बोलते वह वैसे ही करता जाता था इसी बीच उसके साथ कई घटनाएं होती हैं। परंतु वह चाह कर भी खुद को नहीं बदल पाता। 20 दिन बीत चुके हैं। समर सोचने लगता है कि उसके पिता परमिशन लेटर पर सिग्नेचर करेंगे कि नहीं।

सर्च का आखरी दिन समर को उसके पिता स्टेज पर सबके सामने बुलाते हैं और घोषणा करते हैं कि तुम इस शर्त में असफल हुए तुम बॉर्डर पर नहीं जा सकते हो। समर को गुस्सा आता है और वह बोलता है जिसको आप गुस्सा बोलते हैं वह मेरा कैरेक्टर है आपने अपने ईगो की वजह से सिग्नेचर नहीं किया समर बोलता है बॉर्डर पर जाना केवल मेरा सपना नहीं बल्कि हिंदुस्तान के 135 करोड़ देशवासियों को सुकून की नींद देना। मै अकेला बॉर्डर पर जगना चाहता हूँ उनकी रक्षा, रक्षा के लिए मर मिटना चाहताहूँ। बचपन से लेकर आज तक आपने मुझे नहीं समझा और आज भी नहीं। मैं 135 करोड़ देशवासियों के लिए बॉर्डर पर जाना चाहता हूँ। जहां चलूं तो पीछे मुड़ कर देखने पर सिर्फ कदमों के निशान दिखाई दे सूर्य की लालिमा मेरे माथे पर दमके एक जोश भर दे।

यह बातें सुनकर लोग समर के लिए तालियां बजाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। स्टेज पर खड़े सब लोग समर के लिए तालियां बजाते हैं लेकिन समर वहां से चला जाता हैं।

समर शाम को एक पेड़ के नीचे बैठा रहता है पानी की कल–कल की आवाज और तभी उसके पिता उसकी पीठ को थपथपाते हुए उसे परमिशन लेटर थमाते है जिसमें उसके पिता सिग्नेचर किए हैं। 10 साल में समर का गुस्सा और उसके पिता की गलतफहमी आज दूर हो जाती हैं। आपस में गले मिलते हैं स्टेजपर समर को परमिशन लेटर दिया जाता हैं। समर के लिए तालियां बजती हैंऔर अंत में समर द सोल्जर को बॉर्डर पर जाने दिया जाता हैं।

हमें अपने कैरेक्टर के साथ कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए और ना ही हालात से भागना चाहिए क्योंकि हालात बदलते रहते हैं।

जय हिन्द

जनभागीदारी समिति

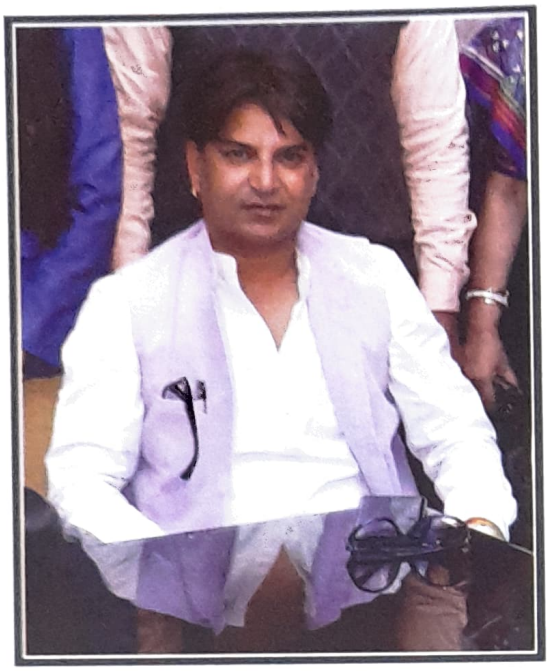

अध्यक्ष
श्री सतनाम सिंह पनाग
टिकरापारा, रायपुर

सचिव
डॉ. अमिताभ बेनर्जी
प्राचार्य
जे. योगानंदम् छत्तीसगढ़ स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर

उपाध्यक्ष	पदेन, कलेक्टर जिला-रायपुर (छ.ग.)

सदस्य

श्री शाहरूक असरफी (स्थानीय संगठन)
श्री शारीक रईस खान (स्थानीय उद्योग)
निरंक (दानदाता)
श्री बाकर अब्बास (कृषक वर्ग)
मंजू अग्रवाल (पोषक शाला)
श्री राजेश वर्मा (अभिभावक वर्ग)
श्री मोहित शर्मा (अभिभावक वर्ग)
विधि नामदेव (पूर्व छात्र वर्ग)
श्री अमित शर्मा (पूर्व छात्र वर्ग)

सांसद प्रतिनिधि	श्री अंजय शुक्ला
विधायक प्रतिनिधि	श्री संतीश व्यास
अनुसूचित जाति वर्ग	श्री जादूमणि भारती
अनुसूचित जनजाति वर्ग	ईश्वरी सोना
अन्य पिछड़ा वर्ग	श्री राहुल धनगर

छात्रसंघ पदाधिकारी - 2019-20

अध्यक्ष
कु. दिव्या शर्मा
एम.ए. तृतीय भूगोल

उपाध्यक्ष
पूर्णिमा मानिकपुरी
एम.एस-सी. प्रथम सेमेस्टर

सचिव
नितिन साहू
बी.एस-सी. तृतीय

सहसचिव
देवराज
बी.एम-सी द्वितीय

कक्षा प्रतिनिधि सूची - 2019-20

क्रं.	मनोनीत विद्यार्थी का नाम	कक्षा
1.	बेबी वर्मा	बी. ए. भाग –1 अ (म. अ.)
2.	लक्ष्मी धीवर	बी. ए. भाग –1 ब (म. अ.)
3.	राहुल ठाकुर	बी. ए. भाग –1 (स)
4.	कुंज बिहारी	बी. ए. भाग –2 (अ)
5.	श्रुति ठाकुर	बी. ए. भाग –2 (ब)
6.	राहुल चौहान	बी. ए. भाग –3
7.	किशोर सहारे	बी.एस.–सी. भाग –1 (वनस्पति शास्त्र)
8.	काजल बैस	बी.एस.–सी. भाग –1 (मानव विज्ञान समूह)
9.	राधेश्याम	बी.एस.–सी. भाग –2 (वनस्पति शास्त्र)
10.	प्राची चौधरी	बी.एस.–सी. भाग –2 (मानव विज्ञान समूह) म.अ.
11.	हेमा सेन	बी.एस.–सी. भाग –3 (बायो समूह) म.अ.
12.	जयकुमार वर्मा	बी.एस.–सी. भाग –1 ड 1 ड 2 (गणित)
13.	नोमेश कुमार	बी.एस.–सी. भाग –1 ड 3 ड 4 (गणित)
14.	लक्ष्मी मनहरे	बी.एस.–सी. भाग –2 (गणित समूह) म.अ.
15.	प्रवीण कुमार साहू	बी.एस.–सी. भाग –3 (गणित समूह)
16.	भूमिका मोटवानी	बी. कॉम. भाग –1 (अ)
17.	रत्ना वर्मा	बी. कॉम. भाग –1 (ब) म.अ.
18.	ललित कुमार वर्मा	बी. कॉम. भाग –2
19.	यश परमार	बी. कॉम. भाग –3
20.	दुष्यंत कुमार	एल.एल.बी 1st Sem (अ)
21.	नेहा सिंह	एल.एल.बी 1st Sem (ब) म.अ.

क्रं.	मनोनीत विद्यार्थी का नाम	कक्षा
22.	संगीता कोसरिया	एम. ए. 1st Sem (हिन्दी)
23.	विनती रावलकर	एम. ए. 1st Sem (अंग्रेजी)
24.	पलक वरू	एम. ए. 1st Sem (राज. विज्ञान)
25.	बेबी जैनम	एम. ए. 1st Sem (समाजशास्त्र)
26.	दुर्गेश कुमार भूआर्य	एम. ए. 1st Sem (अर्थशास्त्र)
27.	अकील अहमद	एम. ए. 1st Sem (भूगोल)
28.	राजाराम निषाद	एम. ए. 1st Sem (इतिहास)
29.	यशोदा चतुर्वेदी	एम. ए. 1st Sem (प्रा. भा. इतिहास)
30.	शिल्पी घोष	एम. ए. 1st Sem (लोक प्रशासन)
31.	नरेश विश्वकर्मा	एम. ए. 1st Sem (दर्शनशास्त्र)
32.	रोहित कुमार साहू	एम. कॉम. 1st Sem
33.	दिलेश पाणिग्रही	एम.एस–सी. 1st Sem (गणित)
34.	शिवानी शुक्ला	एम.एस–सी. 1st Sem (जन्तु विज्ञान)
35.	आशना अली	एम.एस–सी. 1st Sem (मानव विज्ञान) म.अ.
36.	प्रियंका देवांगन	एम.एस–सी. 1st Sem (रसायन शास्त्र)
37.	सूचि बघेल	एम.एस–सी. 1st Sem (भौतिक शास्त्र) म.अ.
38.	सुमन	एम. ए. 3rd Sem (हिन्दी) म.अ.
39.	वर्षा कमलानी	एम. ए. 3rd Sem (अंग्रेजी)
40.	भाग्यश्री	एम. ए. 3rd Sem (समाजशास्त्र)
41.	शीतल वर्मा	एम. ए. 3rd Sem (अर्थशास्त्र) म.अ.
42.	चंचल	एम. ए. 3rd Sem (भूगोल)
43.	उमेश कुमार निषाद	एम. ए. 3rd Sem (इतिहास)
44.	सत्या सोनवानी	एम. ए. 3rd Sem (प्रा. भा. इतिहास)
45.	मेघा साहू	एम. ए. 3rd Sem (लोक प्रशासन)
46.	मोहित कुमार ध्रुव	एम. कॉम. 3rd Sem
47.	गोपीकिशन	एम.एस–सी. 3rd Sem (गणित)
48.	अक्षय कमार भटपहरी	एम.एस–सी. 3rd Sem (मानव विज्ञान)
49.	सरिता चेलक	एम.एस–सी. 3rd Sem (जन्तु विज्ञान) म.अ.
50.	चंद्रिका चौधरी	एम.एस–सी. 3rd Sem (रसायन शास्त्र) म.अ.
51.	दिव्या सेन	एम.एस–सी. 3rd Sem (भौतिक शास्त्र)
52.	लेखिका राठौर	एल. एल.एम. 1st Sem
53.	तबस्सुम निगार	एम. एस. डब्ल्यू. 1st Sem
54.	नम्रता चतुर्वेदी	एम. एस. डब्ल्यू. 3rd Sem (म.अ.)
55.	शिवकुमारी	पी. जी. डी. सी. ए. (म.अ.)
56.	श्रीया शुक्ला	डी. बी. एम.
57.	रोशनी मिश्रा	विकलांग प्रतिनिधि

प्रावीण्य सूची - 2019-20

क्रं.	परीक्षा	प्रावीण्यता	नाम
1.	बी. ए.	प्रथम द्वितीय तृतीय	पलक वरू अश्विनी सिंह गजानंद
2.	बी. कॉम.	प्रथम द्वितीय तृतीय	सूरज कुमार यादव तनुजा पटेल राजा सिंह ठाकुर
3.	बी. एस–सी.	प्रथम द्वितीय तृतीय	रिंकी चन्द्रा मंजू शिवकुमारी
4.	एम. कॉम.	प्रथम द्वितीय तृतीय	ललिता साव अंकिता राय अलिशकिरण पन्ना
5.	एम. एस–सी. मानव विज्ञान	प्रथम द्वितीय तृतीय	सुधीर कुमार कल्पना प्रगति शर्मा
6.	एम. एस–सी. रसायन शास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	नित्यानंद निलोफर खातून गीता चंद्राकर
7.	एम. एस–सी. गणित	प्रथम द्वितीय तृतीय	रूपाली कदम बीना मुखर्जी दीपचरण
8.	एम. एस–सी. भौतिकशास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	तुषार साहू
9.	एम. एस–सी. प्राणीशास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	छाया पटेल पूजा साहू साक्षी कुमार
10.	एम. ए. प्राचीन भारतीय	प्रथम द्वितीय	राहुल कुमार निकुंज पल्लव उईके
11.	एम. ए. अर्थशास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	कौशल पटेल नवदीप जोशी अनुष्का सोनी
12.	एम. ए. अंग्रेजी	प्रथम द्वितीय तृतीय	उषा साहू पंकज कुमार यादव पूनम ससमल
13.	एम. ए. भूगोल	प्रथम द्वितीय तृतीय	भूमिका दलई त्रिभुवन तेजेस्विनी
14.	एम. ए. हिन्दी	प्रथम द्वितीय तृतीय	ललित कुमार देवव्रत महेश्वर शिल्पा
15.	एम. ए. इतिहास	प्रथम द्वितीय तृतीय	साक्षी लोकेश्वरी यादव [illegible]
16.	एम. ए. दर्शनशास्त्र	प्रथम	[illegible]
17.	एम. ए. राजनीतिशास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	आनंद झा दिनेश नीलम देवांगन
18.	एम. ए. लोक प्रशासन	प्रथम द्वितीय तृतीय	संस्कृति शुक्ला मेघना मंडल सयेद शोएब
19.	एम. ए. समाजशास्त्र	प्रथम द्वितीय तृतीय	सुमन यादव कृष्णा कुमार साहू यतिश टिकरिहा
20.	पी.जी.डी.सी.ए.	प्रथम प्रथम द्वितीय तृतीय	अंकिता ठाकुर खेमिका भुनेश्वरी देवांगन जितेन्द्र कुमार
21.	डी. बी. एम.	प्रथम द्वितीय तृतीय	भवानी पैकरा नन्द कुमार कलश कुमार

Govt. Chhattisgarh Autonomous P. G. College, Raipur (C.G.)
Staff List (Class - I & II)
Dr. Amitabh Banerjee - Principal

S. No.	Name of Employee	Designation
	Hindi	
1	Dr. Smt. Manjula Upadhyay	Asstt. Professor
2	Dr. Smt. Subhadra Rathore	Asstt. Professor
3	Dr. Smt. S. Nalgundwar	Asstt. Professor
4	Dr. Smt. Urmila Shukla	Asstt. Professor
5	Dr. Rajani Yadu	Asstt. Professor
	Commerce	
6	Dr. Vijay Agrawal	Professor
7	Dr. Tapesh Chandra Gupta	Professor
8	Dr. D. K. Pandey	Professor
9	Dr. Smt. Sarla Jain	Asstt. Professor
10	Dr. A. K. Sharma	Asstt. Professor
11	Dr. Pinki Garg	Asstt. Professor
	English	
12	Dr. Smt. K. Tiwari	Professor
13	Shri A. K. Tiwari	Asstt. Professor
14	Dr. Smt. Monika Singh	Asstt. Professor
15	Dr. Anita Juneja	Asstt. Professor
16	Dr. Rachana Mishra	Asstt. Professor
17	Dr. Shashank Gupta	Asstt. Professor
	History	
18	Dr. Smt. S. S. Gour	Professor
19	Dr. Rajesh Shukla	Asstt. Professor
20	Dr. V. D. Sahasi	Asstt. Professor
	Law	
21	Dr. Smt. Vinita Agrawal	Asstt. Professor
22	Dr. Surendra Kumar	Asstt. Professor
23	Shri Suresh Kumar	Asstt. Professor
24	Dr. Bhoopendra Karwande	Asstt. Professor
25	Shri Dinesh Malviya	Asstt. Professor
	Maths	
26	Dr. Pushpa Kaushik	Professor
27	Dr. M. Verma	Asstt. Professor
28	Dr. A. Chandravanshi	Asstt. Professor
29	Dr. Bhuneshwari Verma	Asstt. Professor
30	Dr. Niyati Gurudwan	Asstt. Professor
31	Dr. Hemlal Sahu	Asstt. Professor

S. No.	Name of Employee	Designation
	Economics	
32	Dr. K. K. Bindal	Professor
33	Dr. Deepshikha Vij	Asstt. Professor
34	Dr. Smt. Purnima Mishra	Asstt. Professor
	Political Science	
35	Dr. Smt. Nanda Nema	Professor
36	Dr. Smt. Aruna Sharma	Asstt. Professor
37	Dr. Kirtan Kumar Sahu	Asstt. Professor
	Public Administration	
38	Dr. Smt. Shilpi Bose	Asstt. Professor
39	Smt. Aruna Thakur	Asstt. Professor
40	Shri Sunil Tiwari	Asstt. Professor
	Philosophy	
41	Dr. Smt. Asha Chaudhary	Asstt. Professor
	Physics	
42	Dr. M. M. Tiwari	Professor
43	Shri A. K. Jadhav	Asstt. Professor
44	Dr. Anjali Bhatnagar	Asstt. Professor
	Botany	
45	Dr. Smt. S. Chakravarty	Professor
46	Dr. S. K. Verma	Asstt. Professor
47	Smt. Namrata Dubey	Asstt. Professor
48	Dr. Roopshikha Agrawal	Asstt. Professor
	Sociology	
49	Dr. Smt. Preeti Mishra	Professor
50	Dr. L. K. Shukla	Asstt. Professor
51	Dr. M. Gayakwad	Asstt. Professor
52	Shri S. K. Sahu	Asstt. Professor
53	Smt. Sharda Jain	Asstt. Professor
54	Dr. Sanjay Chandrakar	Asstt. Professor
	Anthropology	
55	Dr. D. K. Verma	Professor
56	Dr. Smt. Neerja Sen	Asstt. Professor
57	Dr. Sampada Bais	Asstt. Professor
	Zoology	
58	Dr. Smt. Parmita Dubey	Asstt. Professor
59	Smt. Jharna Rani Nag	Asstt. Professor
60	Dr. Anil Ramteke	Asstt. Professor
61	Smt. Mamta Patel	Asstt. Professor
62	Dr. Vibha Choubey	Asstt. Professor

S. No.	Name of Employee	Designation
	Chemistry	
63	Dr. Smt. M. Dubey	Professor
64	Dr. P. K. Agnihotri	Professor
65	Dr. Pratima Chandrakar	Professor
66	Dr. Pratibha Buxy	Asstt. Professor
67	Smt. Anuradha Choudhary	Asstt. Professor
	Geography	
68	Dr. T. L. Verma	Professor
69	Dr. Smt. Jyotsana Sharma	Asstt. Professor
70	Dr. Geeta Rai	Asstt. Professor
	Ancient Indian History	
71	Dr. A. K. Parsai	Asstt. Professor
72	Dr. Smt. Mona Jain	Asstt. Professor
	Psychology	
73	Smt. Anamika Modi	Asstt. Professor
74	Dr. Vinita Swarnkar	Asstt. Professor
	Computer Science	
75	Dr. Smt. Swati Jain	Asstt. Professor
76	Neha Tikariha	Asstt. Professor
77	Vaishali Sarde	Asstt. Professor
	Sports	
78	Shri Rajendra Singh Chouhan	Sports Officer
	Librarian	
79	Smt. Alaknanda Narad	Librarian
	Office	
80	M. K. Mandrai	Registrar

Govt. Chhattisgarh Autonomous P. G. College, Raipur (C.G.)
Staff List (Class - III & IV)

Staff List Class - III

S. No.	Name of Employee	Designation
1	Shri A. K. Sharma	Head Clerk/Asstt. Grade-I
2	Smt. Ramni Kamalakshan	Asstt. Grade-II
3	Smt. Malti Shrivastav	Asstt. Grade-II
4	Shri Avinash Sharma	Asstt. Grade-II
5	Shri Ashish Yadav	Asstt. Grade-II
6	Shri Shailendra Yadu	Asstt. Grade-II
7	Shri Vineet Shrivastav	Data Entry Operator
8	Shri B. S. Thakur	Lab Technician
9	Shri M. L. Sahu	Lab Technician
10	Shri J. P. Kashyap	Lab Technician
11	Shri D. R. Bhardwaj	Lab Technician
12	Shri R. L. Dhruw	Lab Technician
13	Shri H. K. Das	Lab Technician
14	Smt. Rupa Das	Lab Technician

Staff List Class - IV

S. No.	Name of Employee	Designation
1	Shri Gopal Ram	Lab Attendant
2	Shri Chandrashekhar	Lab Attendant
3	Shri Ram Kumar Sahu	Lab Attendant
4	Smt. Anjali Sonkar	Lab Attendant
5	Shri Sanjay Sahu	Lab Attendant
6	Shri Dharam Singh	Farash
7	Shri Dhanraj Bhoyar	Farash
8	Shri J. P. Yadav	Peon
9	Shri A. R. Pawar	Peon
10	Shri Kamal Singh	Peon
11	Shri Raj Kumar Verma	Peon
12	Ku. Deepti Bhanate	Peon
13	Shri Mahadev Yadav	Book Lifter
14	Shri A. L. Patel	Book Lifter
15	Shri A. K. Sahu	Watchman
16	Shri A. K. Yadav	Watchman
17	Shri Harprasad Lahri	Sweeper

राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन

स्नेह सम्मेलन

क्रीड़ा

एन.सी.सी.

NCC cadet Ashish Kumar
अंतर्राष्ट्रीय
योग दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
21 जून 2021
NCC

ATC

एन.एस.एस.

राष्ट्रीय सेवा योजना

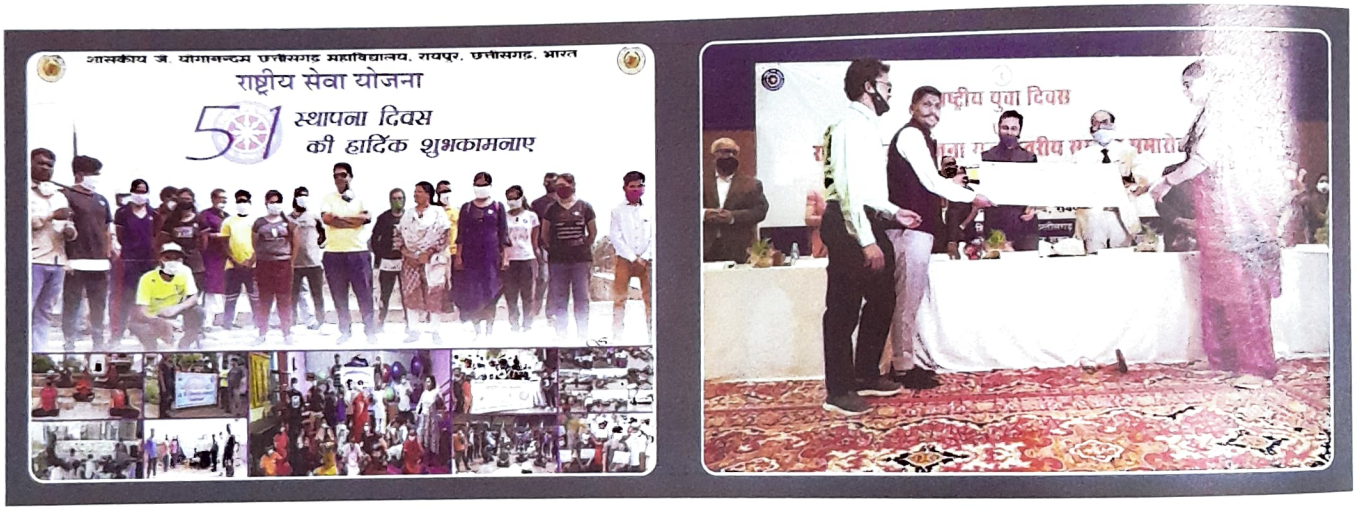
राष्ट्रीय सेवा योजना
51
स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाए

राष्ट्रीय सेवा योजना

विभिन्न प्रतियोगिताएँ

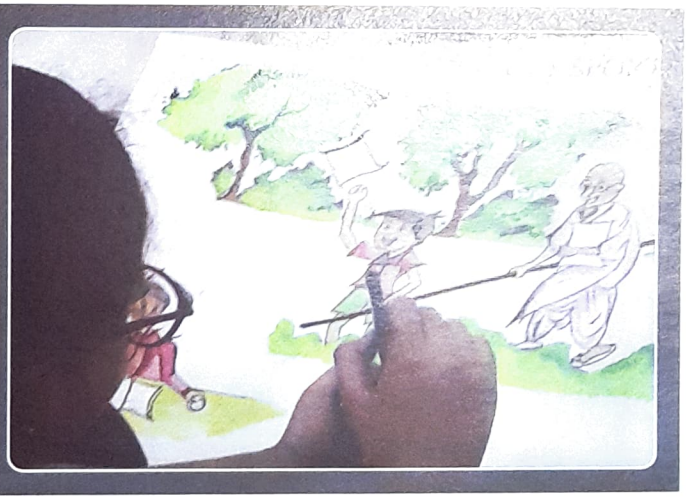

विविध

राष्ट्रीय गणित एव
जिला स्तरीय प्रतिय
11.02.2020

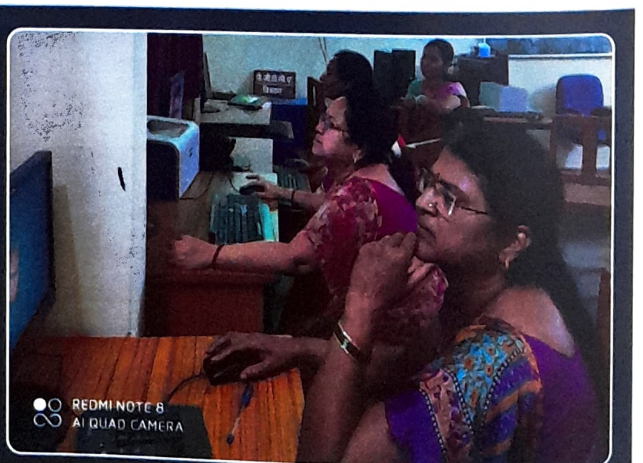
REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

विविध

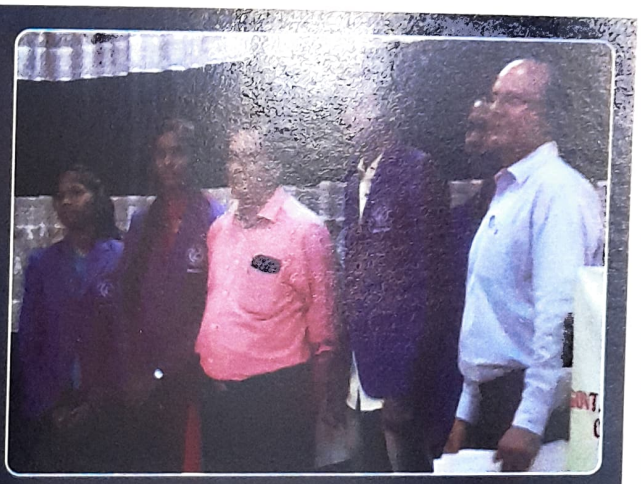

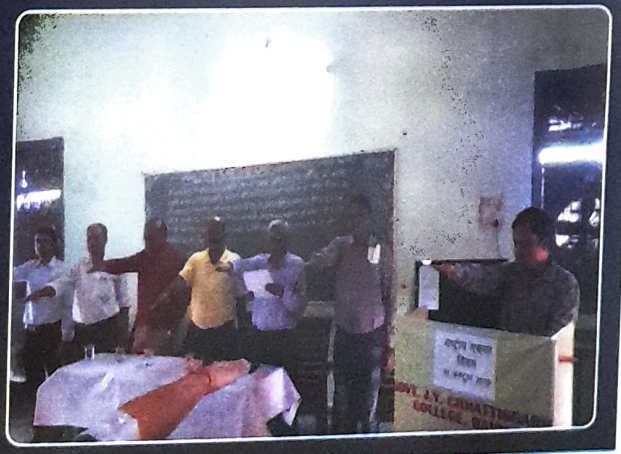

विविध

महाविद्यालयीन अधिकारी एवं कर्मचारीगण

छात्रसंघ समिति

शासकीय जे. योगानंदम छत्तीसगढ़ महाविद्यालय